MAA OMWATI DEGREE COLLEGE

HASSANPUR

NOTES

CLASS:- M.A. (HINDI) 1st SEM

SUBJECT: ADHUNIK GADHYA SAHITYA -I (MC)

आधुनिक गद्य साहित्य

एम.ए. प्रथम वर्ष (प्रथम सेमेस्टर) : पेपर-2

Scanned with ACE Scanner

स्पष्ट करें कि गोदान में युगीन समस्याओं का सम्यक् निरूपण हुआ है।

अथवा

'गोदान' में प्रेमचंद ने किन युगीन समस्याओं पर प्रकाश डाला है?

उत्तर–गोदान : युगीन समस्याओं का चित्रण–'गोदान' प्रेमचंद का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास है। जबकि प्रेमचंद का कोई भी उपन्यास ऐसा नहीं है, जिसमें अपने युग की समस्याओं का चित्रण न हुआ हो, तब यह कहना तो नितांत ही असंगत होगा कि **'गोदान'** में प्रेमचंद ने अपने युग की समस्याओं का चित्रण नहीं किया है। वस्तुतः 'गोदान' में तो प्रेमचंद ने अपना सारा अनुभव अपने युग की समस्याओं को उकेरने में लगा दिया है। गोदान उपन्यास में प्रेमचंद ने युगीन समस्याओं का चित्रण ही नहीं किया अपितु समाज और व्यक्ति को पीड़ित करने वाली सामाजिक और आर्थिक अवस्थाओं का चित्रण करते हुए कुछ ऐसे उपाय भी सुझाए हैं जिनसे ये विडम्बनाएँ समाप्त हो सकती हैं। मानव समाज के एक बहुत बड़े भाग को दुःख एवं अन्याय से मुक्त करने के उद्देश्य से कृषि प्रधान भारत के किसानों के प्रतिनिधि के रूप में होरी को चुना है। यदि होरी दुःखों से मुक्त हो जाता है तो हमें यह समझ लेना चाहिए कि 80 प्रतिशत जनता दुःखों से मुक्त हो गई है। अन्य शब्दों में, होरी के व्यक्तित्व का दुःख एक आम भारतीय किसान का दुःख है। होरी मात्र एक छोटा-सा कृषक बनकर जीवन-यापन करना चाहता है। लेकिन वह किसान से मजदूर और फिर तपती दोपहरी की लू में परिश्रम करता हुआ मृत्यु का ग्रास बन जाता है। मुन्शी प्रेमचंद होरी के माध्यम से भारतीय कृषक की दयनीय स्थिति पर प्रकाश डालना चाहता है। प्रस्तुत उपन्यास में शहरी और ग्रामीण दो कथा सूत्र प्रस्तुत करते हुए समूचे भारत की तस्वीर प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। लेखक ने इन दोनों कथाओं को एक सूत्र में पिरो कर अपनी सफल उपन्यास कला का परिचय दिया है। लेकिन हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि ग्रामीण जीवन की समस्याएँ शहरी जीवन

Scanned with ACE Scanner

से सर्वथा भिन्न हैं। लेकिन प्रेमचंद तत्कालीन ग्रामीण और शहरी जीवन से पूर्णतया परिचित थे। इसीलिए उन्होंने गोदान में दोनों की समस्याओं पर प्रकाश डाला है–

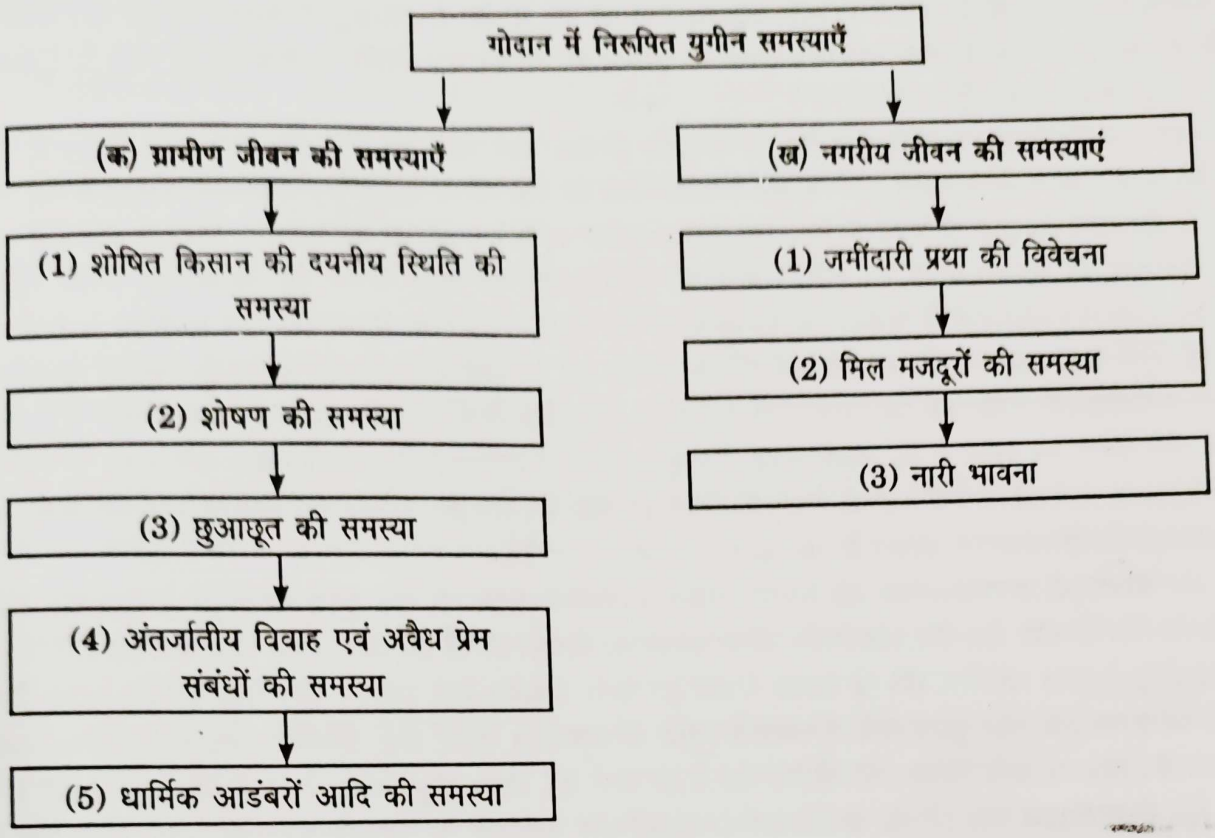

गोदान में निरूपित युगीन समस्याएँ

(क) ग्रामीण जीवन की समस्या–बेलारी और सेमरी अवध प्रांत के एक दूसरे से पाँच मील के अन्तर पर बसे गाँव हैं। होरी बेलारी का निवासी है और रायसाहब सेमरी का। बेलारी तो एक पिछड़ा हुआ गाँव है, लेकिन सेमरी जमींदार रायसाहब अमरपाल सिंह के कारण शहरी जीवन के सम्पर्क में आ चुका है। होरी की समस्याएँ बेलारी में रहने वाले असख्य किसानों की समस्याएँ हैं। बेलारी एक छोटा-सा गाँव है जहाँ पर विभिन्न जातियों के लोग जीवनयापन करते हैं। गाँव के अधिकतर लोग कृषि करके जीवन-यापन करते हैं। इसके साथ-साथ गाँव में बढ़ई, लुहार, ब्राह्मण, साहूकार, चमार आदि अनेक जातियों के लोग अपने-अपने व्यवसाय चला रहे हैं। यह बेलारी गाँव रायसाहब अमरपाल सिंह की जमींदारी का गाँव है। जमींदार ने जमीन के छोटे-छोटे टुकड़े किसानों को खेती के लिए दिये हैं। मूलतः कृषि ही लोगों के जीवन का आधार है। रायसाहब हो अथवा साहूकार, ब्राह्मण हो अथवा पुलिस दरोगा सभी उसी किसान पर निर्भर हैं। अतः बेलारी की समस्याएँ वहाँ के रहने वाले लोगों की समस्याएँ हैं। विशेषकर वहाँ के किसानों और छोटी जाति के लोगों की समस्याएँ हैं।

(1) शोषित किसान की दयनीय स्थिति की समस्या–आर्थिक विपन्नता कृषक जीवन का अभिशाप है। होरी जैसे भोले-भाले किसान कर्ज में फंसे हुए छटपटाते रहते हैं। रायसाहब जैसे जमींदार इन भोले-भाले किसानों को दिन-रात लूटते रहते हैं। लगान, नजराना, बेगार, शगुन आदि न जाने कितने प्रकार के तरीके हैं जिनके द्वारा जमींदार किसानों को लूटता रहता है। होरी जितना भी ऋण से मुक्त होने का प्रयास करता है उतना ही उसमें उलझता जाता है। होरी जैसा किसान न तो अपने बच्चों की पढ़ाई पर कुछ खर्च करता है, न शराब अथवा जुएँ पर, न ही गहने कपड़ों पर। उसे तो केवल बीज के लिए थोड़ा बहुत कर्जा लेना पड़ता है। लेकिन उसकी स्थिति इतनी दयनीय है कि वह मूल तो क्या चुकाए, ब्याज भी अदा नहीं कर पाता। होरी जैसे किसानों का शोषण करने वाले एक से बढ़कर एक मगरमच्छ विद्यमान हैं जो किसानों का शोषण करने के लिए मौका ताकते रहते हैं। पटेश्वरी पटवारी, दातादीन, झींगुरी सिंह, मंगरुशाह, दुलारी, नोखेराम आदि ऐसे ही कुछ शोषक लोग हैं। उपन्यासकार होरी की दयनीय स्थिति का वर्णन करता हुआ कहता है–**"इस फसल में सब कुछ तोल देने पर भी, अभी उस पर तीन सौ कर्ज था, जिस पर कोई**

Scanned with ACE Scanner

सौ रुपये कर्ज के बढ़ते जाते थे। मगरुशाह से कोई पाँच साल हुए बैल के लिए साठ रुपये लिए थे, उसमें से 60 रु. दे चुका था, साठ ज्यों के त्यों बने हुए थे। दातादीन पण्डित से तीस रुपये लेकर आलू बोए थे। आलू तो चोर खोद ले गये। और तीस के इन तीन बरसों में तीन सौ हो गये थे। दुलारी साहुआइन थी जो गाँव में नोन तेल तमाखु की दुकान रखे हुई थी। बँटवारे के लिए उससे 40 रु. लेकर भाई को देना पड़ा था। उसके भी लगभग सौ हो गये थे। क्योंकि आने रुपये का ब्याज था। लगान के भी अभी पच्चीस रुपये बाकी पड़े थे।"

ऋण मुक्त होने के स्थान पर होरी निरन्तर ऋणग्रस्त ही होता चला जाता है। होरी ऋण तो चुकाना चाहता है, लेकिन वह उसे कैसे उतारे। वह न तो ऋणग्रस्त रहना चाहता है न ही किसी का पैसा मारना चाहता है। कभी-कभी उसे दो-दो बार लगान देना पड़ता है और कभी बेदखली से बचने के लिए फिर से कर्जा लेना पड़ता है। जमींदार का नजराना, बिरादरी और पंचों का जुर्माना आदि सब कुछ उसे चुकाना पड़ता है। होरी ने गोबर की पत्नी झुनिया को शरण दी तो उसे पंचायत का लगाया हुआ आर्थिक दण्ड देना पड़ता है। उसकी सारी फसल नष्ट हो जाती है। वह अपने घर को भी गिरवी रख देता है लेकिन कर्जे से मुक्त नहीं हो पाता। होरी के समान अन्य किसान भी कर्ज के बोझ में दबे हुए हैं। होरी यही सोचकर संतोष कर लेता है कि सभी किसानों का हाल उसी जैसा है। यहाँ तक कि उसके दोनों भाई शोभा और हीरा दोनों ही 400-400 रु. कर्ज से ग्रस्त हैं। अन्ततः होरी कर्ज के नीचे इतना दब जाता है कि उसके समक्ष बेदखली का खतरा उपस्थित हो जाता है। अब उसे उधार में कहीं से रुपया नहीं मिलता। अन्त में वह अपनी बेटी को बेचने को तैयार हो जाता है। वह प्रौढ़ व्यक्ति रामसेवक से रूपा का विवाह करता है। उससे 200 रुपये लेकर लगान चुकाता है और बेदखली से बच जाता है।

(2) शोषण की समस्या–शोषण की समस्या गोदान के ग्रामीण जीवन की एक दूसरी महत्त्वपूर्ण समस्या है। लेखक स्पष्ट करता है कि गाँव के सभी दीन-हीन और निर्धन व्यक्ति शोषण का शिकार हो रहे हैं। एक औसत किसान गरीब होने के साथ-साथ ईमानदार होता है। वह धर्मभीरू होने के कारण मर्यादा का कभी उल्लंघन नहीं करता। होरी ऐसा ही एक गरीब किसान है। इसीलिए वह शोषकों के लिए दुधारु गाय के समान है। होरी के साथ-साथ शोभा, हीरा, सिलिया आदि भी किसी-ना-किसी शोषण के शिकार हैं। गाँव के अन्य किसान भी शोषित वर्ग में ही आते हैं। इसका प्रमुख कारण यह है कि सन् 1936 का किसान अनपढ़ होने के साथ-साथ रूढ़िवादी भी था। समाज के आदर्शों और मर्यादाओं का उल्लंघन करने की उसमें शक्ति नहीं थी। धर्म के नाम पर ब्राह्मण किसानों का शोषण करते रहते थे। किसान दिन-रात सर्दी-गर्मी आदि का सामना करता हुआ अन्न उत्पन्न करता है ताकि वह अपना तथा अपने बच्चों का पेट भर सके। लेकिन उसका अनाज तो खलिहान से ही उठ जाता है। जमींदार हो या पण्डित, पटवारी हो या दरोगा हो, सभी उस पर भूखे गिद्ध के समान आँखें जमाए रहते हैं। खलिहान से अनाज उठ जाने के कारण वह खाली हाथ ही घर लौटता है। यह स्थिति प्रेमचंद युगीन किसानों की थी और इसका प्रमुख कारण था तत्कालीन शोषण की व्यवस्था। इस शोषण रूपी दानव से बच पाना किसान के लिए इतना सहज न था। एक स्थल पर रामसेवक उपन्यास में कहता भी है–**"थाना, पुलिस, कचहरी, अदालत, सब हैं हमारी रक्षा के लिए, लेकिन रक्षा कोई नहीं करता। चारों ओर से लूट है। जो गरीब है उसकी गर्दन काटने के लिए सभी तैयार रहते हैं। यहाँ तो जो किसान है, सभी का नरम चारा है। पटवारी को नजराना और दस्तूरी न दे तो गाँव में रहना मुश्किल। जमींदार के चपरासी और कारिन्दों का पेट न भरे तो निर्वाह न हो। थानेदार और कान्स्टेबल जैसे उसके दामाद हैं जब उनका दौरा गाँव में हो जाए किसानों का धर्म है कि वह उसका आदर-सत्कार करें, नजर-नयाज दें, नहीं तो एक रिपोर्ट में गाँव का गाँव बँध जाये।"**

सच्चाई तो यह है कि प्रेमचंद एक प्रगतिवादी कलाकार थे। उन्होंने इस शोषण चक्र को न केवल स्वयं भोगा बल्कि अपनी आँखों से किसानों को शोषण की चक्की में पिसते हुए देखा। उस समय का औसत किसान गरीब और अभावग्रस्त था। अतः उन्हें जीवन-यापन करने के लिए ऋण लेना ही पड़ता था। फलस्वरूप शोषक उसकी मजबूरी का लाभ उठाकर उससे मनमाना ब्याज वसूलते थे। इसीलिए प्रेमचंद ने गोदान में शोषण की समस्या को उठाया है।

(3) छुआछूत की समस्या के दुष्परिणाम–छुआछूत की समस्या भारत की एक ज्वलन्त समस्या है। प्राचीन काल से ही अछूतों के प्रति बड़ा ही घृणित व्यवहार होता आया है। लोगों के धार्मिक अन्धविश्वासों ने इस समस्या को ओर भी अधिक भयंकर बना दिया। प्रेमचंद ने अछूतों की समस्या को अपने अन्य उपन्यासों में भी स्थान दिया है। **कर्मभूमि** में यह समस्या एक प्रमुख समस्या बनकर उभरी है। गोदान में भी मातादीन और दातादीन के माध्यम से अछूतों की समस्या को उठाया गया है। गोदान का पात्र दातादीन ब्राह्मण है और वह अपने आपको श्रेष्ठ समझता हुआ अपनी डींगें हांकता रहता है। एक स्थल पर वह कहता भी है–**"पीठ पीछे आदमी जो कहे, हमारे मुँह पर कोई आदमी कुछ कहे तो उसकी मूंछ उखाड़ लूँ। कोई हमारी तरह नेमी बन तो ले कितनों**

Scanned with ACE Scanner

को जानता हूँ जो कभी संध्या वंदन नहीं करते, न उन्हें धर्म से मतलब, न कर्म से, न कथा से मतलब, न कुरान से।" इस प्रकार दातादीन स्वयं को ब्राह्मण जाति की नाक समझता है। लेकिन उसी का बेटा मातादीन सिलिया नामक चमारिन के साथ सम्बन्ध रखे हुए है। फिर भी मातादीन स्वयं को ब्राह्मण कहता है। प्रेमचंद ने इस समस्या को ग्रामीण जन-जीवन को आधार बनाकर प्रस्तुत किया है। पिछड़े हुए गाँवों में उच्च जाति के लोग प्रायः निम्न जाति की औरतों के साथ छेड़छाड़ करते रहते थे। दातादीन का पुत्र भले ही ब्राह्मण जाति का है। लेकिन वह सिलिया चमारिन को प्रेम जाल में फँसा लेता है। वह अपने जनेऊ का स्पर्श करके शपथ उठाता है कि वह उसे अपनी पत्नी बना लेगा। वह उसका अस्तित्व लूट कर उससे सारे काम करवाता है। गाँव के चमार यह सब देखकर असहज हो जाते हैं और वे मातादीन को सबक सिखाने के लिए एक जुट होकर मातादीन को पकड़ लेते हैं। वे उसका जनेऊ तोड़कर उसके मुँह में हड्डी का टुकड़ा डाल कर उसके ब्राह्मणत्व को भ्रष्ट कर देते हैं। इस कथा प्रसंग से यह बात स्वतः स्पष्ट हो जाती है कि प्रेमचंद जाति-पाति के भेदभाव को नहीं मानते थे।

प्रेमचंद ने छुआछूत की समस्या को इसी उपन्यास में अधिक विस्तार नहीं दिया न ही कोई समाधान प्रस्तुत किया है। लेकिन पण्डित नोखेराम और मातादीन के प्रसंगों के द्वारा यह स्पष्ट कर दिया है कि एक ओर तो ब्राह्मण जाति छोटी जाति के लोगों को अछूत समझती है तो दूसरी ओर उनकी माँ एवं बहनों पर बुरी दृष्टि जमाए रखते हैं। यह स्थिति काफी लम्बे काल से चली आ रही है।

(4) अंतर्जातीय विवाह एवं अवैध प्रेम सम्बन्धों की समस्या–प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों के माध्यम से अन्तर्जातीय विवाह समस्या पर भी प्रकाश डाला है। प्रेमचंद युगीन समाज में एक जाति के व्यक्ति का विवाह दूसरी जाति में नहीं होता था। जाति प्रथा जैसी विकट बुराई समाज के कोने-कोने में व्याप्त थी। यदि समाज में कोई अपनी इस मर्यादा को लांघता तो वह दण्ड का अधिकारी बनता और उसे समाज से बाहर कर दिया जाता था। प्रेमचंद ने गोदान उपन्यास में भी एक नहीं ऐसे अनेक अन्तर्जातीय विवाह प्रसंगों को उजागर किया है। इस संदर्भ में हम गोबर और झुनिया के प्रसंगों को ले सकते हैं। गोबर जाति का मेहता है और झुनिया अहीर भोला की बेटी है। दोनों में प्रेम हो जाता है। गोबर झुनिया को माँ-बाप के यहाँ छोड़ कर शहर भाग जाता है। फलस्वरूप होरी और धनिया को झुनिया को अपने घर में आश्रय देना पड़ता है। इस अन्तर्जातीय विवाह के कारण होरी पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ता है। उसे जाति से बहिष्कृत कर दिया जाता है। गाँव के पंचों ने होरी पर सौ रुपये और तीन मन अनाज का दंड लगाया। धनिया के विरोध करने पर होरी इसे उधार लेकर अदा करता है। प्रस्तुत उपन्यास में अन्तर्जातीय प्रसंगों के अनेक उदाहरण देखे जा सकते हैं–पण्डित मातादीन तथा सिलिया चमारिन का प्रसंग, गोरी राम मेहतो का चमारिन से विवाह करना, गिरिधर झुमरी सिंह का एक ब्राह्मणी के साथ, कायस्थ पटेश्वरी का एक कहारिन के साथ प्रेम-प्रसंग आदि सभी या तो अन्तर्जातीय विवाह अथवा आवेगपूर्ण प्रेम सम्बन्ध से सम्बन्धित हैं। यहाँ मातादीन का प्रसंग अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि वह जाति परिवर्तन को स्वीकार करता हुआ वह कहता है–**"मैं ब्राह्मण नहीं चमार ही रहना चाहता हूँ। जो अपना धर्म माने वहीं ब्राह्मण, जो मुँह मोड़े वह चमार।"** यहाँ मुंशी प्रेमचंद ने अन्तर्जातीय विवाह की समस्या को उठाते हुए तत्कालीन ग्रामीण जीवन का यथार्थ वर्णन किया है। इसी संदर्भ में गोबर और झुनिया का प्रेम-प्रसंग विधवा विवाह की समस्या से जुड़ा हुआ प्रेम प्रसंग है। गोबर एक गरीब, अनपढ़ और असमर्थ युवक था। इसी कारण उसका विवाह नहीं हो रहा था। यदि उसने विधवा झुनिया से विवाह कर लिया तो समाज की दृष्टि में इसे अनैतिक घोषित कर दिया गया। दूसरी ओर पटेश्वरी पटवारी, गोरी मेहतो, मातादीन, झुमरी सिंह आदि धन बल के द्वारा अन्तर्जातीय विवाह करते हैं या अवैध प्रेम करते हैं।

(5) धार्मिक बाह्याडम्बरों तथा व्रत पूजा आदि का विरोध–प्रस्तुत उपन्यास गोदान को पढ़ने से पता चलता है कि धार्मिक बाह्याडम्बरों और व्रत पूजा आदि में लेखक का कोई विश्वास नहीं था। तत्कालीन समाज व्रत-पूजा और तीर्थयात्रा के चक्कर में व्यर्थ में धन बर्बाद कर देते थे। जो किसान शीतला देवी की पूजा करके घर लौटते हैं वे चार-चार महीने के खाने का गल्ला बेचकर तीर्थाटन करते हैं। इससे उचित तो यह है कि व्यक्ति घर पर ही रहकर देवी-देवताओं की पूजा कर ले। गोदान में मालती भी दान प्रथा की निन्दा करती हुई कहती है–**"मैं नहीं समझती तुम किस तर्क से इस दान प्रथा का समर्थन कर सकते हो। मनुष्य जाति को इस प्रथा ने जितना आलसी और मुफ्तखोर बनाया है और उसके आत्मगौरव पर जैसा आघात किया है, उतना तो अन्याय ने भी नहीं किया होगा।"**

प्रस्तुत उपन्यास में एक मरणासन्न व्यक्ति द्वारा गोदान कराए जाने की प्रथा को भी लेखक ने संदेह की दृष्टि से देखा है। होरी सारा जीवन घर में गाय लेने के लिए तरसता रहा और जब वह गाय खरीद कर लाया तो वही उसके विनाश का कारण बन गई। वह आजीवन परिश्रम करके भी दो जून की रोटी नहीं जुटा पाया। फिर भी मृत्यु काल में गऊ दान कराने की धार्मिक रीति

Scanned with ACE Scanner

सम्पन्न की जाती है। फलस्वरूप होरी की कुल जमाराशि 20 आने की पूँजी पण्डित मातादीन की भेंट जाती है। मेहता के द्वारा लेखक ने अपना संदेश अभिव्यक्त किया है–**"इनका देवतत्व इनकी दुर्दशा का कारण है। काश ये आदमी ज्यादा और देवता कम होते तो यूं न ठुकराए जाते।"** उपन्यास के अन्तिम भाग में गोबर अपने पिता से कहता भी है–**"जिसे पेट की रोटी मयस्सर नहीं, उसके लिए मरजाद और इज्जत सब ढोंग है, औरों की तरह तुमने भी यदि दूसरों का गला दबाया होता, उनकी जमा मारी होती तो तुम भी भले आदमी होते। तुमने कभी नीति को नहीं छोड़ा यह उसी का दंड है।"** इस प्रकार हम देखते हैं कि उपन्यासकार ने गोदान की ग्रामीण कथा में गाँवों की असंख्य समस्याओं को शामिल किया है और उनके बारे में अपने क्रान्तिकारी विचार पेश किए हैं।

(ख) नागरिक कथा की चर्चा–गोदान की नागरिक कथा का सम्बन्ध सेमरी में रहने वाले रायसाहब अमरपाल सिंह तथा उस अज्ञात नाम के नगर से सम्बन्धित है जहाँ पर प्रो० मेहता, मिस मालती, मिस्टर खन्ना, पत्रकार ओंकारनाथ, मिर्जा खुरशेद, खन्ना की पत्नी गोबिन्दी आदि रहते हैं। नगर के ये सभी पात्र रायसाहब के यहाँ दावत उड़ाने के लिए आते रहते हैं। भले ही ये सारे पात्र गौण कथा से सम्बन्धित हैं। लेकिन उपन्यासकार ने इनके माध्यम से शहरी जीवन की विभिन्न समस्याओं पर प्रकाश डाला है।

(1) जमींदारी प्रथा का विवेचन–प्रस्तुत उपन्यास में लेखक ने जमींदारी प्रथा पर समुचित प्रकाश डाला है। उस समय के जमींदार रायसाहब अमरपाल सिंह जैसे ही होते थे। वे अपनी जमीन को छोटे-छोटे किसानों में बाँटकर नजराना आदि वसूलते थे। राय अमरपाल सिंह सेमरी गाँव के निवासी हैं। वे बहुत बड़े जमींदार हैं, जिनकी जमीन पर होरी जैसे असंख्य किसान खेती करते हैं। नोखेराम रायसाहब का ही कारिन्दा है। वह किसानों से लगान, नजराना आदि वसूल कर रायसाहब के यहाँ पहुँचाता है। रायसाहब एक रंगे सियार के समान हैं। वस्तुतः रायसाहब पूंजीपति शोषक समाज का प्रतिनिधित्व करने वाला पात्र है। उसके शोषण के कारण गाँव के सभी किसान दुःखी हैं। सभी किसानों की गर्दन रायसाहब के पाँव तले दबी हुई है। लेखक रायसाहब के मुख से ही शोषण की कथा कहलवा देता है–**"हम इतने बड़े आदमी हो गये है कि हमें नीचता और कुटिलता में निःस्वार्थ और परम आनंद मिलता है।....ये रुपये तुमसे और तुम्हारे भाइयों से वसूल किए जाते हैं, भाले की नोक पर।"** इससे स्पष्ट होता है कि तत्कालीन जमींदारी प्रथा शोषण के कारण ही फलफूल रही थी। जमींदार अफसरों के साथ मिलकर किसानों का निरन्तर शोषण कर रहे थे कृषक वर्ग निरन्तर पिस रहा था।

भले ही जमींदार किसानों का शोषण कर रहा था, लेकिन उसका शोषण करने वाले लोग अलग थे। सरकारी अफसर, रायसाहब को अफसरों के यहाँ न केवल डालियाँ पहुँचानी पड़ती हैं बल्कि उन्हें रिश्वत भी देनी पड़ती है। जब अफसर लोग दौरे पर निकलते हैं या शिकार खेलने आते हैं तो जमींदार उनके पीछे-पीछे चलते हैं। उन पर जितना भी धन खर्च होता है वह किसानों से ही वसूल किया जाता है। भले ही रायसाहब के पास महल, नौकर और गाड़ियाँ हों, लेकिन अंदर से तो वे भी दुःखी थे। परन्तु सामान्य किसान रायसाहब की मन की व्यथा को नहीं जानता। एक स्थल पर वे कहते भी हैं–**"मुझे किसानों के साथ जीना मरना है। मुझसे बढ़कर दूसरा उनका हितेषु नहीं हो सकता, लेकिन मेरी गुजर कैसे हो, अफसरों को दावत कहाँ से दूं? सरकारी चंदे कहाँ से दूं? खानदान के सैकड़ों लोगों की जरूरतें कहाँ से पूरी करूं? मेरे घर का खर्च क्या है? ये आप शायद जानते हैं मेरे घर में क्या रुपये फलते हैं? लूंगा तो असामियों के घर से।"** इस प्रकार हम देखते हैं कि जिस प्रकार रायसाहब गरीब किसानों का शोषण करते हैं, उसी प्रकार अफसर लोग जमींदारों का। अतः यदि किसान दुःखी है तो जमींदार भी दुःखी है।

(2) मिल मजदूरों की समस्या–मुंशी प्रेमचंद इस तथ्य को भली प्रकार जानते थे कि वैज्ञानिक प्रगति के कारण ही नगरों में बड़े-बड़े कारखाने और मिले स्थापित हो रही हैं। फलस्वरूप गाँव के युवक कृषि छोड़कर नगरों की ओर पलायन कर रहे हैं। 'कर्मभूमि' उपन्यास में लेखक ने इस स्थिति का विरोध भी किया है। गोदान में मिस्टर खन्ना शहर में अपनी चीनी मिल की सहायता करते हैं। गोबर बेलारी से भाग कर इसी मिल में मजदूरी करता है। मिस्टर खन्ना किसानों के साथ धोखा-धड़ी करके चीनी की मिल तो चला लेते हैं लेकिन वहाँ वेतन को लेकर मजदूर हड़ताल कर देते हैं। मिस्टर खन्ना किसी भी कारण से झुकने को तैयार नहीं होते। फलस्वरूप मजदूरों की हड़ताल भयंकर रूप धारण कर लेती हैं। इसके दौरान मजदूर और मिस्टर खन्ना दोनों ही प्रभावित होते हैं। मिल बंद हो जाती है और मजदूरों की नौकरी चली जाती है। गोबर की न केवल नौकरी ही छीन जाती है बल्कि उसे चोट भी लग जाती है।

इस कथा प्रसंग द्वारा लेखक ने दो प्रश्नों को उठाया है। पहला प्रश्न तो यह है कि गाँव के युवक नगरों की ओर पलायन क्यों कर रहे हैं? इसका उत्तर स्पष्ट है गोबर जैसे युवक यह भली प्रकार जान चुके हैं कि शोषण के महाजनी चक्कर के कारण किसान बने रहना इतना सहज नहीं हैं। गाँव में रोजगार का कोई और साधन नहीं है। इसीलिए नवयुवक शहर की ओर पलायन कर रहे हैं। दूसरा प्रश्न है–नगर में स्थापित कारखाने और मिलों का। यहाँ पर भी मिल मालिक शोषण की नीति अपना कर

Scanned with ACE Scanner

अपना घर भरने में लगे हुए हैं। उन्हें मजदूरों की कोई चिन्ता नहीं है। वे जिएँ या मरें। मिल मालिक तो यही चाहता है कि वह अधिकाधिक कमाकर अपने कार्य का विस्तार करे। मिस्टर खन्ना की मिल में हड़ताल और आग वाली घटना से लेखक यही स्पष्ट करना चाहता है कि महाजनी सभ्यता की शोषण व्यवस्था न तो शासकों के लिए कल्याणकारी है न ही शोषितों के लिए।

(3) नारी भावना–शहरी जीवन की समस्याओं के द्वारा मुंशी प्रेमचंद ने अपनी नारी भावना को भी उजागर किया है। प्रेमचंद के काल में ही नारियाँ विदेशों में जाकर शिक्षा प्राप्त करने लग गई थीं। मिस मालती इंग्लैण्ड से एम.बी.बी. एस की शिक्षा प्राप्त करके लौटी थी। अतः वह पाश्चात्य सभ्यता से अत्यधिक प्रभावित थी। प्रेमचंद ने भले ही पाश्चात्य पद्धति का विरोध किया हो, लेकिन वे नारी शिक्षा के पूर्ण समर्थक थे। लेकिन वे यह भी चाहते थे कि नारियों को ऐसी शिक्षा न दी जाए जिससे वे पैसा कमाकर विलासप्रिय बन जाएँ। उनका विचार था कि नारी जाति को भारतीय संस्कृति के संदर्भ में ही शिक्षा दी जानी चाहिए ताकि वह अपने परिवार को सुदृढ़ कर सकें। प्रो० मेहता के माध्यम से मानो प्रेमचंद ही कहते हैं–**"मैं नहीं चाहता कि देवियों को विद्या की जरूरत नहीं है, पुरुषों से अधिक है। मैं तो नहीं कहता, देवियों को शक्ति की जरूरत नहीं है, है, पुरुषों से अधिक। लेकिन यह विद्या वह शक्ति नहीं जिससे पुरुष ने समाज को हिंसा क्षेत्र बना डाला है।"** एक स्थल पर वे पुनः कहते हैं–**मुझे खेद है हमारी बहनें पश्चिम का आदर्श ले रही हैं। जहाँ नारी ने अपना पद खो दिया है, और स्वामिनी से गिरकर विलास की वस्तु बन गयी है। पश्चिम की स्त्री स्वच्छंद होना चाहती है, इसलिए कि वह अधिक से अधिक विलास कर सके। हमारी माताओं का आदर्श कभी विलास नहीं रहा। सेवा के अधिकार से ही उन्होंने सदैव गृहस्थी का संचालन किया।"**

प्रेमचंद सम्भवतः यह तो नहीं चाहते थे कि नारियाँ शिक्षित होकर दफ्तरों में कार्य करें या राजनीति में काम करें। वे नारियों को पश्चिमी अन्धानुकरण से बचाना चाहते थे। उनका उद्देश्य तो केवल यही था कि वह शिक्षा प्राप्त करके अपनी घर गृहस्थी को सम्भाले और अपनी भावी संतान का ठीक प्रकार से लालन-पालन करें। प्रस्तुत उपन्यास को पढ़ने से यह बात स्वतः स्पष्ट हो जाती है कि वे भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन से बहुत प्रभावित थीं। वे पुरुष के बराबर अधिकार चाहती थीं और अपनी स्वतन्त्रता की वकालत कर रही थीं। यूं तो महात्मा गाँधी ने नारी स्वतन्त्रता का समर्थन किया था। प्रेमचंद भी चाहते थे उसका स्तर पुरुषों के समान हो। लेकिन वे नारी शोषण के बिल्कुल विरुद्ध थे। लेकिन वे यह भी चाहते थे कि नारी अपने पति के साथ निर्वाह करें। मि० खन्ना और उसकी पत्नी गोविन्दी में काफी झगड़ा बढ़ जाता है। गोविन्दी अपने पति द्वारा अपमानित होती है। वह मेहता के पास सलाह लेने जाती है। मि० मेहता उसे कोर्ट कचहरी में न भेज कर इस बात पर घर वापिस भेज देते हैं कि वह अपने गृहस्थ जीवन को सार्थक बनाने का प्रयास करे।

प्रस्तुत उपन्यास में प्रेमचंद ने शहरी जीवन की प्रेम समस्या को भी उठाया है। मिस मालती इंग्लैण्ड से एम.बी.बी.एस. की शिक्षा प्राप्त करके लौटी है। उपन्यास में उसकी भूमिका अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। रायसाहब के यहाँ से उसका परिचय होता है। लेखक ने उसका परिचय देते हुए लिखा है–**"दूसरी महिला जो ऊँची एड़ी का जूता पहने हुए है और जिनकी मुख छवि पर हँसी फूट रही है, वह मिस मालती है। आप इंग्लैण्ड में डॉक्टरी पढ़ आयी हैं और अब प्रैक्टिस करती है। तालुकेदारों के मेहता में उनका प्रवेश नवयुग की साक्षात प्रतिमा है। कोमलगात, पर चपलता कूट-कूटकर भरी हुई, झिझक, संकोच का तो कहीं नाम नहीं, मेकअप में प्रवीण, बला की हाजिर जवाब, पुरुष मनोविज्ञान की अच्छी जानकार, आमोद-प्रमोद को जीवन का तत्त्व समझने वाली, लुभाने और रिझाने की कला में प्रवीन।"** सत्य तो यह है कि प्रेमचंद मांसल प्रेम के सर्वथा विरुद्ध थे। वे उन्मुक्त प्रेम को भी स्वीकार नहीं करते थे। मालती भले ही विदेश से शिक्षा प्राप्त करके लौटी है लेकिन मन से तो वह प्रो० मेहता को ही चाहती है। उधर खन्ना मिस मालती पर मुग्ध हैं। मिस मालती भली प्रकार जानती है कि मिस्टर खन्ना उसे चाहने वाले लोगों में से एक हैं। मिस मालती की आरम्भिक भूमिका उन्मुक्त प्रेम का स्वरूप प्रस्तुत करती है। लेकिन इस संदर्भ में हमें यह याद रखना होगा कि उसके सिर पर अपने परिवार का आर्थिक बोझ है। इसीलिए वह बाहर से तितली और अंदर से मधुमक्खी की भाँति है। लेखक उसके बारे में कहता है–**"वह हँसती है इसलिए कि उसे दाम मिलते हैं। उसका चहकना और चमकने इसलिए नहीं है कि वह चहकने-चमकने को ही जीवन समझती है।.....वह दोनों बहनों की पढ़ाई का प्रबन्ध करती है। साथ ही यह भी प्रयत्न करती है कि मेरे शराबी कबाबी पिता भी सात्विकता के साथ रहे।"**

अन्त में डॉ० राजपाल शर्मा के शब्दों में–**"अभिप्राय यह है कि गोदान के सभी प्रसंग किसी-न-किसी प्रकार के संदेश से गर्भित हैं जिनमें से उपन्यासकार का सर्वोपरि संदेश यह है कि समाज व्यवस्था में मानवत्व की प्रतिष्ठा होनी चाहिए। मानव देवत्व के बढ़ जाने पर नाना प्रकार से शोषित एवं पीड़ित किया जाने लगता है तो दानत्व के बढ़ जाने पर वह शोषक एवं पीड़ित बन जाता है। अतः उचित यही है कि वह देव या दानव न होकर मानव सुलभ गुण-दोषों से युक्त हो।"**

Scanned with ACE Scanner

'गोदान' के आधार पर होरी का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा

होरी की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–होरी का चरित्र-चित्रण–गोदान मुंशी प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ कृति है। होरी उपन्यास का सर्वप्रमुख पात्र है, जिससे उपन्यास की मूल कथा जुड़ी हुई है। होरी के माध्यम से लेखक ने भारतीय कृषक समाज का जो करुण चित्र प्रस्तुत किया है उसके फलस्वरूप यह एक युगान्तरकारी रचना कहीं जा सकती है। इसमें होरी और उसके परिवार की वर्णित कथा भारत के शोषित और अभावग्रस्त किसानों की कथा है। होरी एक साधारण किसान होकर भी एक जीवन व्यापी गहरी त्रासदी का शिकार हुआ है। लगातार संघर्षों का सामना करते रहने के बावजूद उसका चरित्र निखरता चला गया। होरी ही इस उपन्यास का केन्द्रीय पात्र है। सम्पूर्ण कथानक होरी के ही जीवन के ताने-बाने से बुना हुआ है। यूं तो हम महाकाव्य उसी रचना को कहते हैं जिसका नायक भयंकर संघर्षों का सामना करता हुआ, जीवन पर्यंत अपने शत्रुओं से जूझता हुआ अन्त में विजय प्राप्त करता है। लेकिन होरी एक अत्यधिक साधारण गरीब किसान है। लेकिन वह असाधारण संघर्षों का सामना करता है। वह अपने ही खेतों पर मजदूरी करने को विवश हो जाता है और अन्त में लू का शिकार होकर मृत्यु का ग्रास बन जाता है। जमींदार, साहूकार और महाजन सभी होरी का शोषण करते रहते हैं। परन्तु होरी मात्र एक व्यक्ति पात्र नहीं है। वह भारत के शोषित किसानों का प्रतिनिधित्व पात्र है। होरी के चरित्र की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

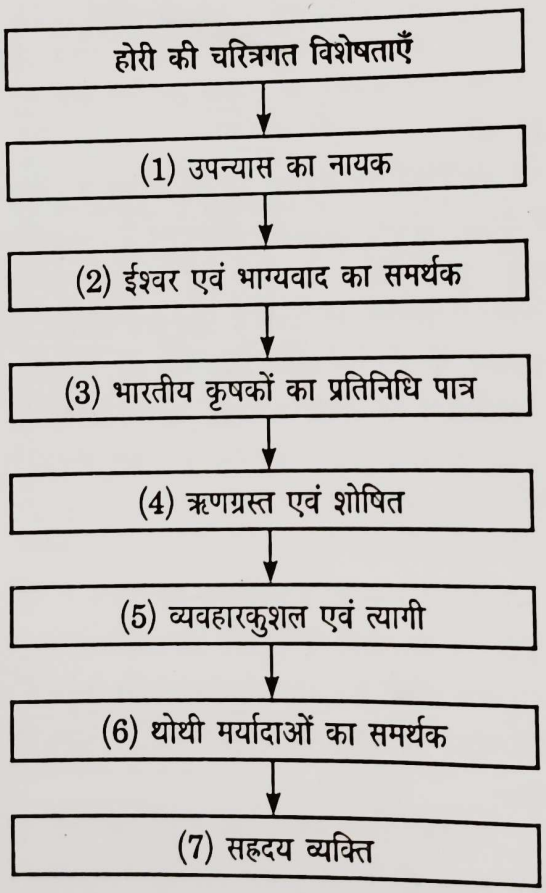

(1) उपन्यास का नायक–होरी प्रस्तुत उपन्यास का नायक है। इसलिए उपन्यास में प्रो० मेहता उसकी थोड़ी-बहुत प्रतिद्वन्द्विता कर सकता है। लेकिन उपन्यास में उसकी भूमिका होरी की अपेक्षा गौण है। फिर भी संस्कृत काव्यशास्त्र में नायक के जो गुण स्वीकार किए गए हैं वे होरी में नहीं हैं। साहित्य दर्पण में नायक को कुलीन, शीलवान्, त्यागी, धनवान, युवा, सुन्दर, उत्साही, दक्ष, तेजस्वी, लोकानुरागी आदि कहा गया है।

Scanned with ACE Scanner

गोदान का वस्तु विधान भारतीय परम्परा की सुखान्त रचनाओं के अनुसार नहीं है। होरी सामाजिक विडम्बनाओं से संघर्ष करता हुआ अन्त में मृत्यु का शिकार बन जाता है। अतः वह फल का उपभोक्ता भी नहीं है। लेकिन हमें यह तो स्वीकार करना होगा कि नायक शब्द की व्युपत्ति–लभ्य अर्थ के अनुसार होरी वह पात्र है जो कथा को आगे की ओर ले जाता है। अन्य शब्दों में, गोदान की कथा का विकास होरी पर ही आधारित है। मेहता तो कथा में जब तब भाग लेते हैं और उनका सम्बन्ध केवल नागरिक कथा से है। जबकि होरी की कथा उपन्यास की मुख्य कथा है। होरी और उसके परिवार में उसकी पत्नी धनिया, पुत्र गोबर, दो बेटियाँ [illegible] और [illegible], दो भाई हीरा और शोभा तथा हीरा की पत्नी पुनिया है। उपन्यास के अन्य पात्रों की स्थिति होरी और उस के परिवार के कारण है। रायसाहब अमरपाल सिंह होरी का ही जमींदार है जो न केवल होरी का शोषण करता है, बल्कि गाँव के अन्य किसानों का भी रक्त चूसता है। गाँव के अन्य लोग महाजन पटेश्वरी, नोखेराम, मंगरुशाह, दातादीन आदि का उपन्यास में इसलिए अस्तित्व है कि वे होरी जैसे किसानों का जोंक के समान रक्त पीते रहते हैं। उपन्यासकार में होरी की पुत्रियों को भी आरम्भ से अन्त तक पर्याप्त स्थान दिया गया है। इसी प्रकार होरी की पत्नी धनिया भी होरी के साथ पूरे उपन्यास में पूरी तरह छाई रहती है। इस तरह उपन्यास का पूरा कथानक होरी व उसके परिवारजनों के चारों ओर चक्कर काटता रहता है। होरी ही कथानक को गति प्रदान करता है। उपन्यासकार ने अवध प्रांत के बेलारी गाँव को अपने काव्य लेखन का माध्यम बनाया है। होरी उसी गाँव का रहने वाला था। उसे पाँच बीघा जमीन पैतृक सम्पत्ति के रूप में प्राप्त हुई है। वह अपने बारे में स्वयं कहता है कि–**"इतनी थोड़ी जमीन वाले किसान की बिसात ही क्या होती है।"** फिर भी वह स्वयं को भाग्यवान समझता है, क्योंकि उसे महतो की उपाधि मिली हुई है। जमींदार से मिलते-जुलते रहने के कारण ही गाँव के अन्य किसान उससे राम-राम करते हैं और सम्मान भाव से चिलम पीने को देते हैं। इस दृष्टि से होरी एक व्यवहार-कुशल नायक है जो अभावग्रस्तता के बावजूद जैसे-तैसे अपने घर की मर्यादा बनाए हुए है। परन्तु होरी की पत्नी धनिया और पुत्र गोबर होरी की इस जी-हजूरी का विरोध करते हैं, क्योंकि न तो उसका लगान छोड़ा जाता है न ही उससे बेगार लेने में संकोच किया जाता है। यही नहीं, उसे जमींदार को नजर-नजराना भी देना पड़ता है। विद्रोही प्रकृति का गोबर भी अपने पिता को यही सब समझाता है। लेकिन होरी अपनी पत्नी को फटकारता है।

(2) **ईश्वर एवं भाग्यवाद का समर्थक–**होरी अपनी पत्नी धनिया और अपने बेटों के विचारों से सहमत नहीं है। फिर भी वह ईश्वर के विधान की दुहाई देकर विद्रोही गोबर के मन में यह बात बैठाना चाहता है कि हमारे भाग्य में मालिकों की जी हजूरी करना लिखा है। होरी अपने दुःख-दर्द के लिए पूर्व जन्म के कर्मों को ही दोषी मानता है और उनको ईश्वर की लीला मानकर संतोष कर लेता है। होरी ही क्यों, एक सामान्य भारतवासी भी जीवन की विसंगतियों को ईश्वर की इच्छा कह कर संतोष कर लेता है। गोबर अपने पिता के तर्क का विरोध करता हुआ कहता है कि भगवान ने तो सबको बराबर बनाया है। इसके उत्तर में होरी कहता है–**"यह बात नहीं है बेटा, छोटे-बड़े सब भगवान के घर से बनकर आते हैं। सम्पत्ति बड़ी तपस्या से मिलती है। उन्होंने पूर्व जन्म में जैसे कर्म किए हैं उनका ही वे आनंद भोग रहे हैं। हमने कुछ नहीं संचा तो भोगे क्या?"**

गोबर के विरोध को होरी ईश्वर की लीला में टाँग अड़ाना कहता है। उपन्यास के अन्तिम भाग में जब होरी किसान से मजदूर बन जाता है और तीन वर्ष का लगान न चुका पाने के कारण खेतों से बेदखली की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। तब भी वह इन सब बातों को भगवान की इच्छा कह कर टाल देता है। वह कहता है...**भगवान की इच्छा! रायसाहब को क्या दोष दे? आसामियों से ही उनका भी गुजर है। इसी गाँव पर आधे से ज्यादा घरों पर बेदखली आ रही है। आवे औरों की जो दशा होगी, वही हमारी हो जाएगी। भाग्य में सुख बदा होता तो लड़का यूं हाथ से निकल जाता"** इस प्रकार हम देखते हैं कि होरी भाग्यवाद का कट्टर समर्थक है। वह समझता है कि उसकी इस दयनीय स्थिति का कारण उसके पूर्व जन्म के कर्म हैं। उसके भाग्य में सुख लिखा ही नहीं।

(3) **भारतीय कृषकों का प्रतिनिधि पात्र–**जैसे कि पहले भी बताया जा चुका है कि उपन्यास का कथानक होरी के जीवन के चारों ओर घूमता नज़र आता है। उपन्यासकार ने होरी के माध्यम से कृषकों के कारुणिक जीवन का इतना मार्मिक वर्णन प्रस्तुत किया है जिसे पढ़ने से यह बात स्वतः स्पष्ट हो जाती है कि होरी भारतीय कृषकों का प्रतिनिधित्व करने वाला प्रमुख पात्र है। उसके अस्तित्व के बिना तो सम्पूर्ण उपन्यास महत्त्वहीन दिखाई पड़ता है। होरी में उपन्यासकार ने उन सभी गुणों का समावेश किया है जो कि साधारण कृषक में पाए जाते हैं। वह अत्यन्त उदार, बहुत सीधा-सादा, सरल परन्तु परिस्थितियों के कारण स्वार्थी लेकिन छल-प्रपंच विहीन व्यक्ति है। अपनी इन्हीं चारित्रिक विशेषताओं के कारण ही तो वह कथा का नायक है। उसके चरित्र की सादगी और सरलता सहजता से पाठकों को अपनी ओर आकर्षित करती है। उसके कारुणिक जीवन की विषमताओं को पढ़ने मात्र से ही पाठक के मन में सहानुभूति उत्पन्न हो जाती है। उपन्यास में लेखक ने मुख्य रूप से होरी और उसके परिवार की व्यथा-कथा को इतने आकर्षक और मार्मिक ढंग से पेश किया है कि वास्तव में ऐसा प्रतीत होने लगता है कि होरी का चरित्र एक व्यक्ति विशेष का न होकर सम्पूर्ण भारतीय कृषकों का प्रतिनिधित्व करने वाला दिखाई पड़ता है। होरी भी सामान्य कृषक

Scanned with ACE Scanner

के समान अपने खेतों और खेती से अत्यधिक प्रेम करता है। केवल एक खेती ही उसके जीवनयापन का आधार है। वह बहुत ही परिश्रमी है और दिन-रात अपने खेतों में काम करने में लीन रहता है। वह गर्मी-सर्दी की परवाह किए बिना दिन-रात अपने खेतों में कठोर परिश्रम करता है। लेकिन उसके बावजूद भी उसे दो वक्त की रोटी नसीब नहीं होती है।

जब भोला उसके बैलों को ले जाता है तब वह दातादीन के साथ साँझी खेती का प्रस्ताव इसलिए स्वीकार कर लेता है ताकि वह खेतों की बेदखली से बच सके। एक बार सोना के विवाह के लिए वह खेत को बेच देने का प्रस्ताव रखता है। लेकिन धनिया ऐसा करने से मना कर देती है, क्योंकि जमीन दोनों पति-पत्नी को प्यारी थी। इसी के सहारे से ही उनकी घर-गृहस्थी चल रही थी।

होरी एक औसत भारतीय किसान है। वह निरन्तर कर्म करने में विश्वास रखता है। हम उसे कामचोर नहीं कह सकते। वह आजीवन खेती और मजदूरी में संलग्न रहता है। एक भारतीय किसान के समान वह महाजनों के शोषण का शिकार बनता है। दब्बूपन उसके चरित्र की प्रमुख विशेषता है। जिसके फलस्वरूप वह जमींदार के कारिन्दे, पटवारी, दरोगा, पंचायत तथा गाँव के साहूकार से टक्कर नहीं ले सकता। लेकिन होरी के बारे में लेखक कहता है–**"फसल से सब कुछ खलिहान में तोल देने पर भी अभी उस पर कोई तीन सौ का कर्ज था। जिस पर कई सौ रुपये सूद के बढ़ते चले आते थे। मंगरु शाह से साठ रुपये उधार लिए हुए आज पाँच साल हो गये हैं। उनमें साठ दे चुका था, पर वह साठ रुपये मूलधन के ज्यों के ज्यों बने हुए थे। दातादीन ने पण्डित से तीस रुपये लेकर आलू बोये थे। आलू चोर खोद ले गये थे। उस तीस के तीन वर्षों में सौ हो गए... अगर संतोष था तो यही कि वह विपत्ति अकेले उसके सिर पर नहीं प्रायः सभी किसानों का यही हाल था। अधिकांश की दशा तो इससे भी बदतर थी।"**

(4) एक ऋण-ग्रस्त एवं शोषित किसान–होरी भले ही सरल हृदय और छल-कपट रहित किसान है लेकिन उसे इस बात का गौरव है कि उसने जीवन में किसी के साथ न तो छल-कपट किया न ही किसी के जलते घर पर उसने हाथ सेंके हैं। संकट में वह सभी की सहायता करता है। लेकिन फिर भी लोग उसका शोषण करते हैं। होरी का रग-रग कर्ज में डूबा हुआ है। इसका प्रमुख कारण यह है–रायसाहब के अतिरिक्त गाँव के साहूकार, महाजन, ठाकुर झींगुरी सिंह, नोखेराम, मातादीन, पटेश्वरी पटवारी, सहुआइन आदि, सभी उसका शोषण करते रहते हैं। उसका ऋण सुरसा के मुँह की भाँति बढ़ता ही जाता है।

इतना ऋण होने पर भी होरी को और ऋण लेने में कोई संकोच नहीं है, क्योंकि गाँव में ऐसा माना जाता है ज्यों-ज्यों कर्जा बढ़ता जाता है त्यों-त्यों कर्जा लेने वाला व्यक्ति निर्भय होता चला जाता है। होरी पर भी यही स्थिति लागू होती है। नये ऋण को वह भार न समझ कर ईश्वर की अनुकम्पा मानता है। यही सोचकर भोला से 80 रुपये में गाय उधार लेने में होरी के मन में किसी प्रकार का संकोच नहीं है। लेखक उसकी मनःस्थिति पर प्रकाश डालता हुआ लिखता है कि–**"उसे अभी चार सौ रुपये देने थे, लेकिन उधार को वह मुफ्त समझता था। कहीं भोला की सगाई ठीक हो गई तो साल दो साल तो वह बोलेगा भी नहीं। सगाई न भी हुई, तो होरी का क्या बिगड़ता है। यही तो होगा, भोला बार-बार तगादा करने आएगा, बिगड़ेगा, गालियाँ देगा। लेकिन होरी को इसकी ज्यादा शर्म न थी। इस व्यवहार का वह आदी था। कृषक जीवन का तो यह प्रसाद है।"**

होरी स्वयं को गाँव के महाजनों और ऋणदाताओं का गुलाम समझता है। जब होरी ने झुनिया को अपने घर में आश्रय दिया तो पंचायत उस पर डाण्ड लगाती है। वह पंचों को परमेश्वर और उनके न्याय को सिर आँखों पर धारण करता है। उस पर पंचायत सौ रुपये नकद और 20 मन अनाज का डाण्ड लगाती है। इस कर्ज को चुकाने के लिए उसने दुलारी से तीन सौ रुपये लिए थे जिसके बदले में उसे सौ रुपये देने के लिए उसने मंगरु शाह से 50 रुपये लिए थे। इसके उसे 300 रुपये देने पड़े। यही नहीं उसे अपना घर भी गिरवी रखना पड़ा। किसानों के शोषण के बारे में रामसेवक स्पष्ट कहता है–**"थाना, पुलिस, कचहरी, अदालत सब हैं हमारी रक्षा के लिए लेकिन रक्षा कोई नहीं करता। जो गरीब हैं, बेबस हैं, उनकी गर्दन काटने को सब तैयार हैं। यहाँ तो जो किसान है वह ही सब का नरम चारा है।"**

(5) एक व्यवहार कुशल और त्यागी व्यक्ति–होरी के व्यवहार में व्यवहार कुशलता और त्यागमयता विद्यमान है। वह अत्यन्त सीधा और सरल स्वभाव का है। चतुराई तो उसमें है ही नहीं। लेकिन फिर भी वह मूर्ख नहीं है। वह व्यवहार में बड़ा ही कुशल है। तभी तो महाजनों से अपनी बात मनवा लेता है और उनकी जी हजूरी में लगा रहता है। उसे इस बात का तो भली-भाँति पता है कि उधार चुकाना पड़ता है लेकिन वह उधार को मुफ्त और भगवान की अनुकम्पा समझता है। उसे अवसर का लाभ उठाना बहुत अच्छे ढंग से आता है। तभी तो वह भोला से उसकी गाय अपनी सूझ-बूझ के कारण प्राप्त कर लेता है। अपनी इसी सूझ-बूझ का परिचय वह अपनी बेटियों के विवाह के समय भी देता है। सेवा और त्याग की भावना तो होरी में कूट-कूट कर भरी हुई है। उसकी सरलता को देखकर एक स्थल पर उपन्यासकार लिखता है कि–**"इन का देवत्व ही इन की दुर्दशा का कारण है। काश! ये आदमी ज्यादा और देवता कम होते तो यूं न ठुकराएँ जाते। ये तो निरीह पशु की भाँति है जो अन्याय व अत्याचार को सहते रहते हैं लेकिन उसके विरुद्ध कभी आवाज़ नहीं उठाते। अपनी इसी विवशता के कारण ये लोग जीवन भर दुःख झेलते हैं।"** सम्पूर्ण कृषक की दशा होरी के समान है। ये महाजनों के हाथों की कठपुतलियाँ बनकर जीवन भर नाचते रहते हैं। वे जैसा

Scanned with ACE Scanner

नचाते वैसा नाचते। इनके जीवन में उमंग और आशा तो थी ही नहीं। बस दिन-रात कोल्हू के बैल की तरह अपने खेतों में कठोर परिश्रम करते रहते हैं। बिना सर्दी-गर्मी की परवाह किए। इतना परिश्रम करने पर भी उन्हें दो वक्त की रोटी, पहनने को तन पर पूरा कपड़ा भी नसीब नहीं होता। इतना होने पर भी होरी आदर्श पथ का अनुगामी है। वह त्याग की साक्षात्कार मूर्ति है। वह हमेशा दूसरे को दुःख में देखकर दुखी हो जाता है। चाहे उसके पास देने को कुछ भी नहीं है लेकिन फिर भी वह उसकी मदद करने को तैयार हो जाता है।

(6) थोथी मर्यादाओं का समर्थक–होरी परम्पराप्रिय व्यक्ति है। वह थोथी मर्यादाओं का समर्थन करता है। किसी भी परम्पराप्रिय व्यक्ति के समान वह असंगत धारणाओं का विरोध न करके उनके लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर देता है। वह धर्म, ईश्वर, जात-बिरादरी, पुलिस, रायसाहब तथा सभी महाजनों से अत्यधिक डरता है। उसे अकसर यही चिन्ता सताती रहती है कि लोग उसके बारे में क्या सोचेंगे। वह पुरातन मान्यताओं के विरुद्ध खड़ा नहीं हो सकता। होरी के मुकाबले में उसकी पत्नी धनिया और उसका पुत्र गोबर दोनों ही जागरूक हैं। वे दोनों ही होरी के भीरू स्वभाव की भर्त्सना करते हैं। इस स्थिति में होरी को एक ओर तो अपनी पत्नी और पुत्र के विरोध का सामना करना पड़ता है दूसरी ओर समाज व्यवस्था की मार भी सहनी पड़ती है। वैसे होरी में साहस की कमी नहीं है। पठान वेश में मेहता को टंगड़ी मार कर गिरा देने से ही उसके साहस का पता लगता है। परन्तु पुलिस-दरोगा का नाम सुनते ही होरी की सिट्टी-पिट्टी गुम हो जाती है। दरोगा उसके भाई हीरा के घर की तलाशी लेना चाहता था लेकिन होरी के हृदय में तो यह विश्वास है कि पुलिस द्वारा घर की तलाशी लेने पर कुल की मर्यादा मिट्टी में मिल जाएगी। हीरा के घर की तलाशी की जब बात उठती है। उस समय वह कहता है–**"तलाशी! होरी की साँस तले-ऊपर होने लगी। उसके भाई हीरा के घर की तलाशी होगी और हीरा घर में नहीं है। और फिर होरी के जीते जी, उसके देखते यह तलाशी न होने पायेगी। × × × होरी के मुख का रंग ऐसा उड़ गया था, जैसे देह का सारा रक्त सूख गया हो। तलाशी उसके घर की हुई तो उसके भाई के घर की हुई तो, एक ही बात है। हीरा अलग सही पर दुनिया तो जानती है, वह उसका भाई है, मगर इस वक्त उसका कुछ बस नहीं।"**

यही नहीं होरी अपने कुल की तथाकथित मर्यादा को बचाने के लिए गाँव के महाजन से ऋण लेकर थानेदार की मुट्ठी गर्म करने को भी तैयार हो जाता है। परन्तु इस अवसर पर धनिया उसकी तथाकथित मर्यादा की सारी पोल खोल कर रख देती है वह कहती है–**"घर के परानी रात-दिन मरे, और दाने-दाने को तरसे, लत्ता भी पहनने को मयस्सर न हो और अंजुली भर रुपये लेकर चला है इज्जत बचाने। ऐसी बड़ी है तेरी इज्जत। जिस के घर में चूहे लोटे वह भी इज्जत वाला है...।"**

इसी प्रकार से झुनिया के प्रसंग में भी वह जात-बिरादर में अपनी तथाकथित मर्यादा को बचाने के लिए कर्ज लेकर पंचायत की डाण्ड का भुगतान करता है। सच्चाई तो यह है कि होरी की तथाकथित मर्यादा सम्बन्धी थोथी धारणाएँ ही उसकी दयनीय स्थिति का मुख्य कारण हैं। परिणाम यह होता है कि होरी अपना सारा अनाज ढो कर झींगुरी सिंह की चौपाल में ढेर लगा देता है और डाण्ड के रुपये चुकाने के लिए अपना घर गिरवी रख देता है।

(7) सहृदय व्यक्ति–होरी का चरित्र एक उदार पिता, उदार ससुर, उदार भाई और उदार पति के रूप में विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उसका हृदय इतना विशाल है कि वह अपने मित्रों और सज्जनों के लिए ही नहीं अपितु अपने विरोधियों के लिए भी अपना सर्वस्व न्योछावर करने को तैयार रहता है। पहले तो वह झुनिया को घर से बाहर निकालना चाहता है लेकिन जब झुनिया उसके पैरों में गिर जाती है तो वह दयालु होकर कहता है–**"डर मत बेटी! डर मत! तेरा घर है, तेरा द्वार है, तेरे हम हैं। आराम से रह। जैसी तू भोला की बेटी वैसी ही मेरी भी बेटी है। जब तक हम जीते हैं। किसी बात की चिन्ता मत कर। हमारे रहते तुझे कोई तिरछी आँखों न देख सकेगा।"** गोबर द्वारा झुनिया को घर लाने पर ही होरी को बीस मन अनाज और 100 रुपये का डाण्ड चुकाना पड़ा। परिणाम यह हुआ कि उसकी आर्थिक स्थिति और अधिक बिगड़ गई। फिर भी होरी के मन में गोबर के प्रति कोई मैल नहीं है। वह नहीं चाहता कि उसका पुत्र ऋण चुकाने के लिए मुसीबतों का सामना करता फिरे। इसीलिए वह गोबर से कहता है–**"नहीं बेटा, तुम काहे को तकलीफ उठाओगे। तुम्हीं को कौन बहुत मिलते हैं। मैं सब देख लूंगा। तुम कोई चिन्ता मत करना। खाने-पीने का संजम रखना। अभी देह बना लोगे, तो सदा आराम से रहोगे। मेरी कौन? मुझे तो मरने खपने की आदत पड़ गयी है। अभी मैं तुम्हें खेती में नहीं जोतना चाहता बेटा!"** होरी के संकटों में हीरा का योगदान कोई कम नहीं है। फिर भी उसके मन में अपने भाई के प्रति दया और प्रेम की भावनाएँ हैं। जब हीरा छः-सात वर्ष बाद लौट कर होरी के चरणों में गिर पड़ता है तो होरी का सारा मनोमालिन्य मानो गंगाजल से धुल जाता है। लेखक कहता भी है–**होरी प्रसन्न था। जीवन के सारे संकट, सारी निराशाएँ मानो उसके चरणों पर लेट रही थीं। कौन कहता है जीवन संग्राम में वह हारा है। यह उल्लास, यह गर्व, यह पुलक क्या हार के लक्षण हैं। इन्हीं हारों में मेरी विजय है। उसके टूटे-फूटे अस्त्र उसकी विजय पताकाएँ हैं। उसकी छाती फूल उठी है। मुख पर तेज आ गया है...।"**

Scanned with ACE Scanner

भट्टिनी या चन्द्रदीर्घति की चारित्रिक विशेषताएं बताइए।

अथवा

बाणभट्ट की आत्मकथा के आधार पर भट्टिनी का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर-भट्टनि का चरित्र-चित्रण–'बाणभट्ट की कथा' उपन्यास के नारी पात्रों में भट्टिनी का नाम सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। वह इस उपन्यास की केन्द्र-बिन्दु कही जा सकती है। बाणभट्ट भी उसे आत्मकथा का केन्द्र-बिन्दु मानता है। यद्यपि उसे पूर्ण फल प्राप्ति नहीं होती, लेकिन उपन्यास का आधार तो वही बनी रहती है। कथा का आरम्भ उसी को लेकर होता है और उसी के साथ उसका अन्त भी होता है। भट्टिनी को ही उपन्यास की नायिका कहा जा सकता है। भट्टिनी का नाम तो चन्द्रदीर्घति है, लेकिन वह भट्टिनी के नाम से ही जानी जाती है। उसकी चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

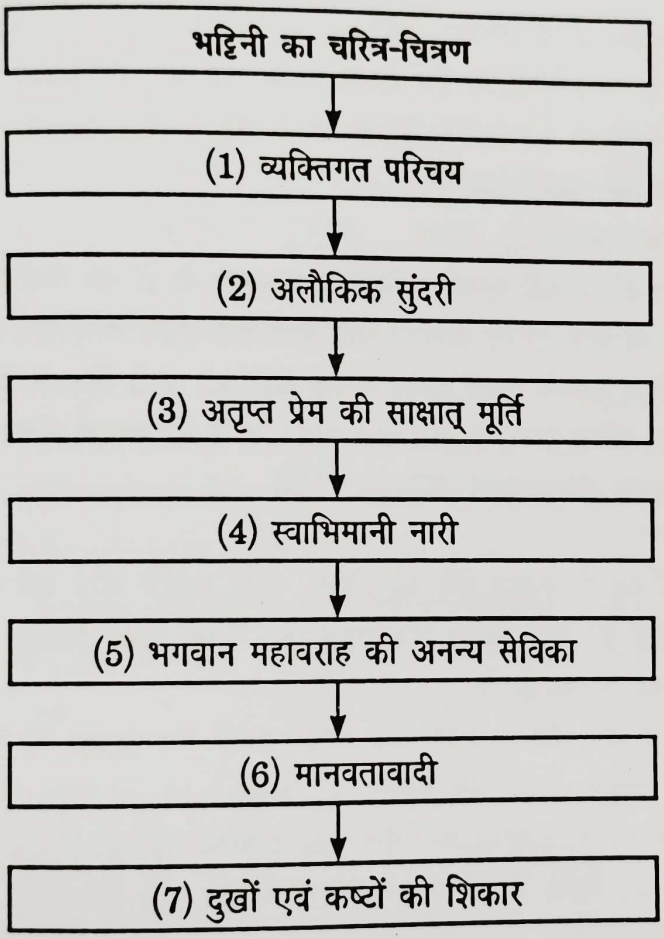

1. **व्यक्तिगत परिचय**–'बाणभट्ट की आत्मकथा' उपन्यास के कथानक में भट्टिनी का स्थान सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। उपन्यासकार ने उसके चरित्र-चित्रण में विशेष रुचि ली है। वह एक राजकुमारी है। पूरे उपन्यास में हम उसे भट्टिनी के नाम से ही जानते हैं। पूरे इतिहास में उसके नाम का कहीं उल्लेख नहीं है। लेकिन उपन्यासकार के अनुसार वह तत्र भवान विषय समरमयी, वाहलीक विमर्दन प्रत्यन्त वाङ्व देवपुत्र तुवर मिलिंद की एकमात्र कन्या है। दस्यु ने जिसका हरण कर लिया था। इस प्रकार भट्टिनी भले ही ऐतिहासिक पात्र न हो, लेकिन प्रस्तुत आत्मकथा की वही नायिका है। पाठक को वह काल्पनिक पात्र प्रतीत नहीं होती। उसका व्यक्तित्व पाठकों को प्रभावित करने में सर्वथा सक्षम है।

भट्टिनी का अधिकांश जीवन दुःखमय ही रहा है। पहले तो दस्यु ने मार्ग में से ही उसका बलपूर्वक हरण कर लिया, लेकिन बाद में वासना के पाक पंक में निमग्न मौरवरि वंश के अन्तःपुर में पहुँच गई। यहाँ का छोटा राजकुमार राजकुमारी भट्टिनी को अपनी महादेवी बनाना चाहता था। उसने यह घोषणा की कि जो कोई व्यक्ति भट्टिनी को प्रमोद वन में ले जाने में सफल हो

Scanned with ACE Scanner

सकेगा, उसे वह पुरस्कार के रूप में रत्नों का हार देगा। वह असहाय अबला यह सब होने पर भी अविचलित और धैर्यहीन नहीं हुई। महावराह की साधना में उसे पूरा विश्वास था। संयोगवश निपुणिका ने उसे देख लिया और उसने उसके उद्धार का प्रयास शुरू कर दिया। अन्ततः बाणभट्ट का सहयोग पाकर वह भट्टिनी का उद्धार करने में सफल हो गई।

(2) अलौकिक सुन्दरी–भट्टिनी भले ही राजकुल की कन्या थी, लेकिन वह अलौकिक सुन्दरी भी थी। विधाता ने उसे स्फटिक शिला-सी रूप-राशि प्रदान की थी। उसका शरीर दुग्ध सलिल से प्रक्षालित चन्द्र कला के समान दिखाई देता था। उसकी रूप-राशि पूर्णतया पावन और उज्ज्वल थी। उसके सौन्दर्य से प्रभावित होकर बाणभट्ट लिखता भी है–"मानो विधाता ने शंख से खोदकर, मुक्ता से खींचकर, मृणाल से संवारकर चन्द्रकिरणों के कुचक्र से प्रक्षालित कर, सुधाचूर्ण से धोकर, रजतरज से पोंछकर, कुटज-कुन्द और सिन्धुवार पुष्पों की धवल से कान्ति से सजाकर ही उसका निर्माण किया था।"

इतना ही नहीं, जब भद्रेश्वर दुर्ग में बाण ने उसे मुस्कराते देखा था, तब भी उसे उसके निष्कलंक सौन्दर्य ने चकाचौंध कर दिया था। इतने लम्बे समय तक उसने भट्टिनी को हँसते हुए नहीं देखा था। इसलिए उसके मुख को देखकर वह कहने लगा–"**मैंने आज भट्टिनी का स्मयमान मुख देखा है। अधरों पर लीला तरंगित हो रही थी, कपोलपालि विभ्रम-विधियों से चतुर हो चुकी थी, श्वेत पुण्डरीक के समान विशाल नैनों में लालिमा खेल रही थी, कान्ति की लहरों से सारी अन्यष्टि आच्छादित थी, मानो मुक्ति छटा की स्रोतस्विनी ही लहरा रही हो।**"

3. अतृप्त प्रेम की साक्षात् मूर्ति–प्रस्तुत उपन्यास को पढ़ने से पता चलता है कि भट्टिनी बाणभट्ट से अत्यधिक प्रेम करती है। वह उसे अपना सर्वस्व समझती है, लेकिन उसका प्रेम वासना परक नहीं कहा जा सकता। बाण के प्रति उसका प्रेम भावात्मक है। उसमें उदात्तता के साथ-साथ गरिमा भी है। आरम्भ में वह अपने मुख से बाण को यह नहीं बताती कि वह उसे प्यार करती है, परन्तु बाद में महामाया के सामने वह कहती है–

"तो तू भट्ट को क्या समझती है बेटी ?"

"क्या समझती हूँ, भगवती ! सो मैं नहीं जानती। निपुणिका कहती थी कि वह देवता है, पर मैं देवता कैसे कहूँ ?" "तो तेरे मन में जो बात पहले आये–उसे ही कह जा न, सोचकर यही बात सब समय सत्य नहीं होती।"

"क्या बताऊँ माता, जिस दिन भट्ट ने मुझसे प्रथम वाक्य कहा था, उसी दिन से मेरा नवीन जन्म हुआ, उस दिन सूर्य उदयगिरि के तट पर माँगल्य वर्षा कर उदित हुआ था, उस दिन उषाकाल ने मेरे सम्पूर्ण जीवन को परम सौभाग्य से भर दिया था। मैंने उस दिन अपनी सार्थकता का प्रथम बार अनुभव किया था।"

"सार्थकता! सो कैसे बेटी ?"

"माता, भट्ट ने चकित मृग-शिशु के समान मेरी ओर देखा, मानो उन्होंने कोई नवीन प्रकाश, कोई अभिनव ज्योति देखी हो। उनके दीप्त ललाट पट्ट पर भक्ति की शुभ्र किरण विराजमान थी। उनके विमल विशाल नयनों में उज्ज्वल प्रकाश इस प्रकार फूट रहा था, मानो दो ज्वलंत शुक्र ग्रह चमक रहे हो ...."

अन्ततः वह समय भी आ गया जब भट्टिनी ने बाण के समक्ष अपनी प्रेम भावना को व्यक्त कर दिया। भले ही उसका प्रेम पावन है, अलौकिक और उदात्त है, लेकिन अपनी प्रेम भावना को व्यक्त करते हुए स्पष्ट कहती है–"**मैं देवी नहीं हूँ। हाड़-मांस की नारी हूँ ..... मैं हूँ चन्द्रदीर्घधति-सौ-सौ बालिकाओं के समान एक सामान्य बालिका मैं तुम्हारी भट्टिनी !**" उसने अपने हृदय की निष्कलुष प्रेम भावना को तो व्यक्त कर दिया, लेकिन जब वह गंगा में कूद पड़ी थी तो भी उसे विश्वास था कि बाण उसे बचा लेगा। इस तथ्य का उद्घाटन वह निपुणिका के समक्ष भी करती है। बाण के सामने अपनी आसक्ति को व्यक्त करती हुई कहती है–"**मैं अबोध बाला हूँ। निपुणिका ने आज उन्माद प्रलाप के भीतर से मुझे मेरा स्वरूप दिखा दिया है। कौन जाने, उसका कहना ही ठीक हो कि मैं तुम्हें गंगा में डुबोने के लिए स्वयं गंगा में कूद पड़ी थी। मैं नहीं कह सकती। मुझे क्षणभर के लिए ऐसा मालूम हुआ कि मौखरियों के इस महाराज ने मुझे फिर से कैद करना चाहा था। जब विग्रह वर्मा तुमसे बता रहा था कि वह मौखरि है, तभी मुझे सन्देह हुआ। निर्बुद्ध बालिका को क्षमा करना भट्ट, निपुणिका कह रही थी कि यदि भट्ट न होते, तो तुम गंगा में कभी न कूदती। आज मैं सब बातों पर विचार कर देखती हूँ, तो मुझे ऐसा लगता है कि मेरे मन में किसी अज्ञात में यह भावना जरूर थी कि तुम मुझे डूबने नहीं दोगे–तुम मुझे बचा लोगे। तुमने मेरा शरीर, मन, लाज-शर्म सब कुछ बचाया है। मैं भाग्यहीन अपने सबसे बड़े हितांकाक्षी को विपत्ति में झोंक देने की अपराधिनी हूँ। मेरा अपराध क्षमा करो भट्ट।**"

4. स्वाभिमानिनी नारी–भले ही भट्टिनी एक अनिंद्य सुन्दरी है, लेकिन उसे पुरुष वर्ग की कुदृष्टि का शिकार बनना पड़ा। वह अन्तःपुर में घृणित जीवन व्यतीत करती रही और न जाने कहाँ-कहाँ भटकती रही लेकिन उसने अपने स्वाभिमान का कभी

Scanned with ACE Scanner

परित्याग नहीं किया। वह स्वभाव से ही स्वाभिमानी है। परिस्थितियों के कारण उसे झुकना पड़ा, लेकिन वह झुकना नहीं चाहती थी। उसमें न तो चंचलता है और न ही अस्थिरता। उसके मुख मंडल पर हमेशा गम्भीरता देखी जा सकती है। वह विषम परिस्थितियों से भी जूझना जानती है। भोजन न मिलने पर वह शिकायत नहीं करती अथवा उचित भोजन न मिलने पर दुःखी नहीं होती। वह करुणा की साक्षात् प्रतिमा दिखाई देती है। कुमार कृष्णवर्द्धन ने उसे सहायता देनी चाही तो भी उसको यह स्वीकार नहीं था क्योंकि जिस राजवंश से वह घृणा करती है, उसकी सहायता कैसे ले? कृष्णवर्द्धन का चरित्र चाहे कितना ही आदर्शवादी क्यों न हो, लेकिन वह स्थाण्वीश्वर के अधिपति का ही एक परिजन था। इस सन्दर्भ में अपने हित चिन्तक आचार्य सुगतभद्र के प्रस्ताव को ठुकराती हुई कहती है–**"मैं स्थाण्वीश्वर के राजवंश से घृणा करती हूँ। राजवंश से सम्बद्ध किसी व्यक्ति का आश्रय पाने से पहले मैं यमराज का आश्रय ग्रहण करूँगी।"** लोरिक देव के यहाँ निवास करते हुए वह राज्यश्री का निमन्त्रण पाकर क्रोधित हो उठती है। लेकिन वह दूसरों के मान-अपमान का भी हमेशा ध्यान रखती है। वह भली प्रकार से जानती है कि निपुणिका भी बाण से प्यार करती है, इसलिए वह उसकी भावनाओं की उपेक्षा कभी नहीं करती। इस प्रकार हम देखते हैं कि भट्टिनी में स्वाभिमान की भावना कूट-कूट कर भरी हुई है।

5. भगवान महावराह की अनन्य सेविका–उपन्यास के आरम्भ में ही पाठक को पता चल जाता है कि भट्टिनी महावराह के प्रति अगाध श्रद्धा और आस्था रखती है। जब बाणभट्ट निपुणिका के साथ उसके दर्शन करता है तो उस समय वह महावराह की पूजा में संलग्न थी। इस सन्दर्भ में उपन्यासकार लिखता भी है–**"इसी महावराह की मूर्ति के नीचे इस अन्तःपुर की नई बहू और हमारी अशोक बनी सीता ध्यास्त बैठी थी। उसकी बगल में एक वेदी का माल्य, चन्दन और अनेक प्रकार के उपलेपन रखे हुए थे। एक छोटी सी स्फटिक पीठिका पर सुगन्धित स्किय करडंक और सुगन्धित पुटिका रखी हुई थी। जरा दूर हट के एक केचनन पात्र में मातुलय की छाल और पान के अन्य उपकरण रखे हुए थे.....शायद कुरटंक का यह गुण कि वह बहुत देर तक सूखती नहीं उसे यहाँ ले आने में समर्थ हुआ था। गृह में सामान बहुत थोड़ा था पर वह फिर भी अत्यन्त भरा हुआ दिखता था।"** भट्टिनी के मन में महावराह के प्रति अगाध आस्था है। उसका विचार है कि जीवन का कोई महत्त्व नहीं और न ही मृत्यु का कोई महत्त्व है। सब कुछ महावराह का ही है और उनकी इच्छा पर निर्भर है। यही कारण है कि भट्टिनी महावराह की पूजा किए बिना किसी भी कार्य का श्रीगणेश नहीं करती। यहाँ तक कि वह अन्न-जल ग्रहण करने से पहले भी महावराह की पूजा करती है। परिस्थितियों से मजबूर होकर वह जब आत्महत्या करने के लिए गंगा में कूदती है, तब भी महावराह उसके साथ होता है। उसकी दृष्टि में महावराह की स्तुति सर्व दुःखहारी है। वह कहती भी है–

"जलौघमग्ना सचराचरा धरा विषणकोट्याऽखिलविश्वमूर्तिना
समुद्धृता येन वराह रूपिणा स में स्वयं भूर्भगवान् प्रसद तु।।"

6. मानवतावादी–भट्टिनी विश्व मानवतावाद में विश्वास रखती है। वह देश अथवा राष्ट्र को कोई महत्त्व नहीं देती। उसका विचार है कि भावनाओं ने मानव को प्रतिक्रियावादी बना दिया है। जातिवाद, सम्प्रदायवाद और ऊँच-नीच को प्रश्रय देने के कारण हमारी सामाजिक व्यवस्था बड़ी जटिल बन गई है। वह सभी जातियों के अच्छे विचारों को लेकर विश्व कल्याण के मार्ग पर चलना चाहती है। वह बाण से यह भी कहती है कि हम यवनों की अच्छाइयों को ग्रहण कर सकते हैं और जो अच्छाइयाँ हमारे पास हैं, उन्हें उन तक पहुँचा सकते हैं, इस सदर्न्भ में वह बाण से कहती भी है–"यही देखो, तुम यदि किसी यवन कन्या से विवाह करो, तो इस देश में यह भंयकर सामाजिक विद्रोह माना जाएगा, परन्तु यह क्या सत्य नहीं है कि यवन कन्या भी मनुष्य है और ब्राह्मण कन्या भी मनुष्य है..... क्यों भट्ट, ऐसा नहीं हो सकता कि ऊँची भारतीय साधना उन तक पहुँचाई जा सके और निकृिष्ट सामाजिक जटिलता यहाँ से हटाई जा सके। जब तक ये दोनों बातें साथ-साथ नहीं हो जातीं, तब तक शाश्वत शान्ति असम्भव है।" वह बाणभट्ट को भी प्रेरणा देती है कि वह इस प्रकार का पावन कार्य करे। उसका विचार है कि बाण को एक सच्चा कवि होने के कारण जन-जन तक मानवतावादी विचार पहुँचाने चाहिएँ तभी संसार में सुख और शान्ति की स्थापना हो सकेगी। वह बाण से कहती भी है– "एक जाति दूसरी को म्लेच्छ समझती है, एक मनुष्य दूसरे को नीचा समझता है, इससे बढ़कर अशान्ति का कारण और क्या हो सकता है, भट्ट। तुम्हीं ऐसे हो जो नरलोक से लेकर किन्नर-लोक तक व्याप्त एक ही रागात्मक हृदय, एक ही करुणायित चित्त को हृदयंगम करा सकते हो। मनुष्य लोभवश, मोहवश, द्वेषवश पशुता की ओर बढ़ता जा रहा है। तुम उसके हृदय को संवेदनशील और कोमल बना सकते हो।"

Scanned with ACE Scanner

7. दुःखों एवं कष्टों का शिकार–भट्टिनी भले ही दुःखमय जीवन-यापन करती है, लेकिन उसके मन में किसी के लिए न तो द्वेष है और न ही ईर्ष्या है। पहले तो दस्यु बलपूर्वक उसका अपहरण कर लेते हैं, लेकिन बाद में वह यहाँ-वहाँ भटकती हुई मोखरि वंश के अन्तःपुर में पहुँचा दी जाती है। काफी लम्बे समय तक उसको कष्टों तथा अवरोधों का सामना करना पड़ता है, लेकिन उसका चरित्र पूर्णतया निष्कपट, निश्छल और उज्ज्वल है। जब बाणभट्ट उसे पहली बार देखता है तो वह कह उठता है कि उसके स्पर्श मात्र से कलुष ध्वलित हो उठेगा। जब उसे पहली बार ज्ञात होता है कि उसके प्रिय बाणभट्ट को निपुणिका भी प्यार करती है तो वह उसका कोई प्रतीकार नहीं करती, बल्कि उसका हृदय आत्मग्लानि से भर उठता है। अन्तर्व्यथा के कारण जब निपुणिका भट्ट के चरणों को पकड़कर गिर पड़ती है तो वह कोमल हृदया नारी चीत्कार कर उठती है। सामने निपुणिका भट्ट के चरणों में अचेत पड़ी थी, लेकिन फिर भी वह कहती है कि मत छुड़ाओ भट्ट उसे शान्ति मिल रही होगी।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भट्टिनी के सभी गुण उसे उच्च मानवी सिद्ध करते हैं। वह निष्कपट, सहनशील, कृतज्ञ, ज्ञान और विवेक में आस्था रखने वाली, भगवान महावराह की भक्तिन और अनन्य सुन्दरी है। उपन्यासकार ने उसके बारे में उचित ही लिखा है–**''सर्वत्र प्रेम की व्यंजना गूढ़ तथा अतृप्त भाव से प्रकट हुई है। प्रेम उसकी साधना है, भक्ति है। वासना ने उसके मन को स्पर्श नहीं किया। वह सदैव-सर्वथा भाव-जगत् में विचरण करती रही, त्यागमयी रही, उदासना अपने लिए नहीं, मानव-जाति के लिए की। यहीं कारण है कि वह मानव-जाति के लिए इतना गहन सोच सकी। यों वह प्रेम की अतृप्त साधिका रही है।''**

अन्त में **डॉ. मनहर गोपाल भार्गव** ने भट्टिनी के बाह्य और आन्तरिक सौन्दर्य की प्रशंसा करते हुए लिखा भी है– **''विचारपूर्वक देखा जाए तो भट्टिनी का न केवल बाह्य सौंदर्य, बल्कि आंतरिक सौन्दर्य भी सराहनीय है और उसकी चिन्तन शक्ति सागर की भाँति गहन थी तथा उसका ज्ञान अपार था। 'बाणभट्ट की आत्मकथा' में उसने कुछ स्थलों पर मानव जाति के उद्धार हेतु जो विचार व्यक्त किए हैं, वे गुरुत्तर एवं महत्त्वपूर्ण थे। वह जातिगत भेदभाव और सामाजिक विषमता आदि को दूर करना चाहती है तथा इसके लिए बाण को प्रेरणा भी देती है। अतएव भट्टिनी को लोकोत्तर प्रेम की साधिका समझना ही उचित होगा और वह संपूर्ण मानव-जाति के हित को सर्वोपरि समझती है तथा उसके चरित्र की उक्त विशेषताओं के कारण ही हमें यह स्वीकार करना पड़ेगा कि 'लेखक की चरित्र-चित्रण कला की यह दक्षता दृश्य एवं सराहनीय है।''**

◆◆◆

(ख) निपुणिका

'बाणभट्ट की आत्मकथा' में निपुणिका तथा नारी मुक्ति के प्रश्न पर विचार कीजिए।

अथवा

'बाणभट्ट की आत्मकथा' की निपुणिका का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर–निपुणिका का चरित्र-चित्रण–'बाणभट्ट की आत्मकथा' उपन्यास की सभी घटनाओं में यदि किसी पात्र का महत्वपूर्ण हाथ रहा है तो वह निपुणिका ही है। उपन्यास के अधिकांश स्थलों पर उसका उल्लेख मिलता है। उसके माध्यम से लेखक ने नारी मुक्ति के प्रश्न पर गंभीर विचार किया है। हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि बाणभट्ट जिस विचार को लेकर स्थाण्वीश्वर में आया था, उसमें परिवर्तन का प्रधान कारण निपुणिका से उसका मिलन था। इसके बाद जो भी घटनाएँ घटती हैं, उनमें निपुणिका का प्रमुख सहयोग देखा जा सकता है। प्रस्तुत उपन्यास में निपुणिका का वही महत्त्व है जो उपन्यास की नायिका का होता है। यहि कारण है कि कुछ आलोचक निपुणिका को ही उपन्यास की नायिका मानते हैं, लेकिन उपन्यास के अन्त में निपुणिका की मृत्यु हो जाती है। इसलिए कुछ अन्य विद्वान् फल प्राप्ति की दृष्टि से भट्टिनी को ही नायिका सिद्ध करते हैं, लेकिन बाण के पुरुषपुर जाने के प्रसंग से पता चलता है कि भट्टिनी और नायक का मिलन नहीं हो पाता। इसलिए उसको भी नायिका सिद्ध करना तर्क संगत नहीं लगता। उपन्यास के कथा-विकास में निपुणिका का अत्यधिक सहयोग रहा है, अतः वही उपन्यास की प्रधान नारी पात्र कही जा सकती है। उसकी चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

Scanned with ACE Scanner

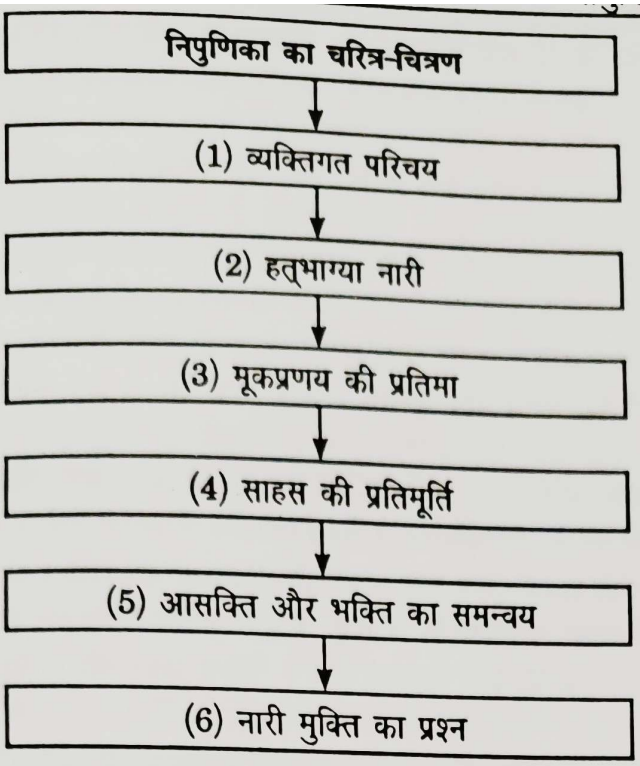

1. **व्यक्तिगत परिचय**–निपुणिका का जन्म एक निम्न कुल में हुआ था, परन्तु उसके पूर्वजों को गुप्त साम्राज्य में नौकरी मिल गई। फलस्वरूप उसकी जाति की गणना वैश्यों में होने लगी। उसका विवाह भी एक कांदम्बिक वैश्य के साथ हुआ जो पहले भड़भूजा था, लेकिन बाद में सेठ बन गया। दैव योग से वह एक साल में ही विधवा हो गई। मजबूर होकर उसे घर छोड़ना पड़ा। उन दिनों बाणभट्ट की नाट्य मंडली उज्जैनी में थी। निपुणिका उसकी मंडली में सम्मिलित हो गई और अभिनय करने लगी। उपन्यासकार उसका परिचय देते हुए लिखता है–**"निपुणिका आजकल की उन सन्तानों में से एक की सन्तान है, जो किसी समय अस्पृश्य समझी जाती थी, परन्तु जिनके पूर्व-पुरुषों को सौभाग्यवश गुप्त-सम्राटों की नौकरी मिल गयी थी। नौकरी मिलने से उनकी सामाजिक मर्यादा कुछ ऊपर उठ गयी थी। वह आजकल अपने को पवित्र वैश्य-वंश में गिनने लगी है और ब्राह्मण-क्षत्रियों में प्रचलित प्रथाओं का अनुकरण करने लगी है। उसमें विधवा-विवाह का चलन हाल ही में बन्द हुआ है। निपुणिका का विवाह किसी कादम्बिक वैश्य के साथ हुआ, जो भड़भूजे से ऊपर उठकर सेठ बन गया था। विवाह के बाद एक वर्ष भी बीतने नहीं पाया था कि निपुणिका विधवा हो गयी।"**

2. **हतभाग्या नारी**–जब निपुणिका घर से भागी थी तो उस समय उसकी आयु केवल 16 वर्ष की थी। अधिक सुन्दर न होने पर भी उसकी आँखें और अंगुलियाँ बहुत सुन्दर थीं। नृत्य के समय उसकी चपलता दर्शकों को विमोहित कर लेती थी। मन-ही-मन वह बाण से प्रेम करती थी। लेकिन जब उसने देखा कि बाण उसकी अपेक्षा कर रहा है तो वह उसकी नाट्य मंडली छोड़कर स्थाण्वीश्वर आ गई और यहाँ वह पान बेचने वाली बन चुकी थी। यहाँ पर एक बार पुनः उसकी मुलाकात बाण से हुई। जीवन-पर्यन्त वह बाण के साथ रही और उसके साथ ही उसके प्राणों का अन्त हुआ।

निपुणिका को नियति ने हमेशा ही धोखा दिया। उसे आजीवन दुःखों का सामना करना पड़ा। जिसे वह चाहती थी, वह उसे कभी नहीं मिला। वह न तो अपने लिए जी सकी और न मर सकी। न उसने अपने चरित्र को पहचाना, न शरीर को। उसके भाग्य में सुख तो लिखा ही नहीं था। उसके जीवन का निरन्तर पतन होता चला गया। बाण उसके बारे में कहता भी है–" आज निरन्तर छः वर्षों से मेरा चित्त मुझे धिक्कार रहा है, मुझे ऐसा लगता है कि मैं ही तेरे समस्त दुःखों का मूल हूँ। एक बार तू अपने मुख से कह दे कि यह बात गलत है, क्या मैं निर्दोष हूँ।" लेकिन निपुणिका बाण को दोषी न मानकर स्वयं को दोषी मानती है और वह उसे कहती है–**"हाँ भट्ट। मेरे भाग आने का कारण तुम्हीं से, परन्तु दोष तुम्हारा नहीं हैं, दोष मेरा ही है। तुम्हारे ऊपर मुझे मोह था। पुनः अपने इस दोष का परिहार करते हुए वह कहती है–"मेरा मन भक्ति में बदल गया है। भट्ट! तुम मेरे गुरु हो, तुमने मुझे स्त्री-धर्म सिखाया है।... तुम्हारी जड़ता अच्छी थी–मैं अभागिन थी, जो तुम्हारा आश्रय छोड़कर चली आई।"**

3. **मूक प्रणय की प्रतिमा**–वास्तव में निपुणिका मन-ही-मन बाण से प्रेम करने लग गई थी। उसने बाण को रिझाने का भावुक प्रयास किया। लेकिन नारी जाति के प्रति बाण का दृष्टिकोण व्यक्तिगत था। वह बचपन से ही नारी जाति का अत्यधिक

Scanned with ACE Scanner

सम्मान करता था। उसका विचार था कि लोग जिन स्त्रियों को चंचल और कुल भ्रष्टा मानते हैं, उनमें एक दैवी शक्ति भी होती है। बाण स्त्री शरीर को देव मन्दिर के समान पावन मानता है। इसलिए वह निपुणिका को चरित्रवान मानता था, उसके अभिनय की प्रशंसा करता था। वह निपुणिका की प्रेम भावना को समझ नहीं पाया, इसलिए उसके प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति नहीं कर सका। छः वर्षों के बाद स्थाण्वीश्वर में उसकी निपुणिका से भेंट हुई। उस समय वह पान की दुकान पर बैठकर पान बेच रही थी। उसके मुख मण्डल पर अभी तारुण्य था, लेकिन उसकी दीप्ति धुंधली हो गई थी। उस समय निपुणिका मुस्करा रही थी। उसकी यह हँसी विचित्र प्रकार की थी। उसमें आकर्षण तो था, पर आसक्ति नहीं। ममता थी, पर मोह नहीं था। बाण स्वाभाविक रूप से उसकी ओर आकर्षित हो गया और वह उसकी ओर खिंचा चला आया। बाण को देखकर निपुणिका की आँखों से आँसू झरने लगे और वह काफी देर तक रोती रही। लेकिन उसके आँसू प्रसन्नता के ही आँसू थे। इसी अवसर पर निपुणिका बाण से कहती है–**''मेरे भाग आने का कारण तुम्हीं हो, परन्तु दोष तुम्हारा नहीं हैं दोष मेरा ही है। तुम्हारे ऊपर मुझे मोह था। उस अभिनय की रात को मुझे एक क्षण के लिए ऐसा लगा था कि मेरी जीत होने वाली है, परन्तु दूसरे ही क्षण तुमने मेरी आशा को चूर कर दिया। निर्दय! तुमने बहुत बार बताया था कि-तुम नारी देह को देव मन्दिर के समान पवित्र मानते हो, पर एक बार भी तुमने समझा होता कि यह मन्दिर हाड़ माँस का है, ईंट चूने का नहीं। जिस क्षण मैं अपना सर्वस्व लेकर इस आशा से तुम्हारी ओर बढ़ी थी कि तुम उसे स्वीकार कर लोगे, उसी समय तुमने मेरी आशा को धूलिसात् कर दिया। उस दिन मेरा निश्चित विश्वास हो गया कि तुम जड़ पाषाण पिंड हो, तुम्हारे भीतर न देवता है, न पशु, है एक अडिग जड़ता।''** इस प्रकार हम देखते हैं कि निपुणिका के मन में बाण के प्रति अनन्य प्रेम भावना थी और वह अपनी प्रेम भावना प्रकट भी करना चाहती थी, लेकिन बाण की अपेक्षा देखकर वह चुप रह जाती है।

4. साहस की प्रतिमूर्ति–निपुणिका ने जीवन में अनेक संघर्षों का सामना किया और हमेशा प्रतीकूल परिस्थितियों को झेला। फलस्वरूप वह एक साहसी नारी बनने में सफल हुई। नारी होते हुए भी उसका जीवन प्रशंसनीय है। छोटे राजकुल के अन्तःपुर में कदम-कदम पर सुरक्षा के कड़े प्रबन्ध थे, लेकिन वह इन बाधाओं की परवाह न करते हुए बाणभट्ट को नारी वेश में अन्तःपुर में ले जाती है और भट्टिनी का उद्धार करने में सफल हो जाती है। यही नहीं, वह चण्डी मन्दिर के धूर्त पुजारी को उल्लू बनाती है और अपने नारीत्व को दांव पर लगाकर भट्टिनी के रहने की व्यवस्था करती है। आगे चलकर जब भट्टिनी गंगा में कूद पड़ती है तो वह बाण को प्रेरित करती है कि वह उसकी रक्षा करे। यही नहीं, वह स्वयं भी गंगा में बेझिझक कूद जाती है। दोनों को गंगा में डूबते हुए देखकर वह यह निर्णय नहीं कर पाता कि वह भट्टिनी को बचाए या निपुणिका को, लेकिन निपुणिका उसे आदेश देती है कि वह भट्टिनी के प्राणों की रक्षा करे। इसी प्रकार जब वज्र तीर्थ श्मशान में अघोर घट और चण्ड-मण्डना बाण की बलि चढ़ाने के लिए तैयार हो जाते हैं तो निपुणिका चण्ड-मण्डना को गिराकर बाण की रक्षा करती है। इससे पता चलता है कि उसमें अद्‌भुत साहस है। उसके साहस को देखकर महामाया भी कहती है–**''मगर अद्‌भुत शक्ति है निपुणिका की नाड़ियों में। एक बात बताओ बेटी, निपुणिका महामाया स्वरूप है, उसे सामान्य नारी न समझना।''**

5. आसक्ति और भक्ति का समन्वय– निपुणिका जब बाण से मिली तो बाण के प्रति उसके मन में प्रेम पैदा हो गया। एक बार नाटक समाप्त होने के बाद जब वह बाण से मिलती है तो अपने अंग-प्रत्यंगों के द्वारा बाण के सामने उसने अपने प्रेम को उजागर करना चाहा, लेकिन बाण जान-बूझकर अनजान बन गया और हँसने लगा, इस बात से निपुणिका के दिल को बड़ा धक्का लगा और वह इसे अपना अपमान समझकर और इस बात को अपने दिल में दबाए वहाँ से भाग गई। प्रेम को छोड़कर उसका ध्यान भक्ति में लग गया। बाण उसके इस बदले हुए रूप को देखकर हैरान रह गया। महावराह की भक्ति में लीन निपुणिका उसे देवांगना-सी प्रतीत होती है-''वह भक्ति-गद्‌गद् स्वर में स्रोत-पाठ कर रही थी और मैं निर्निमेष नयनों से देख रहा था-उस समय उसकी अंगप्रभा अलौकिक दिख रही थी, कोटरगत आँखें मानो उद्वेल वारिधारा से परिपूर्ण होकर प्रफुल्ल पुण्डरीक के समान विकसित हो गई थी, कुन्तल-जाल रह-रहकर इस प्रकार विचलित हो उठते थे, मानो महावराह के चरण-प्रान्त में गिर पड़ने को व्याकुल हो उठे हों। मैं क्षण भर के लिए भूल गया कि निपुणिका हमारी नाटक-मण्डली की परिचित निउनिया है। ऐसा लगता था कि वह कोई देवांगना है और कब इस कालुष-धरित्री को छोड़कर ऊपर उड़ जाएगी, यह कहा नहीं जा सकता। रमणी के हृदयान्तः स्थित परम प्रेममूर्ति महावराह को मन-ही-मन प्रणाम किया।

लेकिन निपुणिका विधवा की इस कुटिलता का वर्णन करते हुए कहती है कि जिस बाण के न मिलने पर उसने प्रेम का परित्याग कर दिया था और भक्ति में लीन हो गई थी, लेकिन उसी बाण के दोबारा मिल जाने पर उसके मन में उसके प्रति फिर मोह जागृत हो गया। यद्यपि बाण से वह यही कहती है कि उसका प्रेम रूपी मोह अब भक्ति में परिवर्तित हो गया है, लेकिन ऐसा नहीं हो सका। बाण के सामने अपने हृदय को उकेरती हुई वह कहती भी है–**''हाँ'' भट्ट, मेरे भाग जाने के कारण तुम्हीं**

Scanned with ACE Scanner

हो, परन्तु दोष मेरा है। तुम्हारे ऊपर मेरा मोह था। उस अभिनय की रात को मुझे एक क्षण के लिए ऐसा लगा था कि जीत मेरी होने वाली है, परन्तु दूसरे क्षण तुमने मेरी आशा को चूर-चूर कर दिया, निर्दय! तुमने बहुत बार बताया था कि तुम नारी देह को देव-मन्दिर के समान पवित्र समझते हो, पर एक बार भी तुमने समझा होता कि यह मन्दिर हाड़-मांस का है, ईंट-चूने का नहीं। जिस क्षण मैं अपना सर्वस्व लेकर इस आशा से तुम्हारी ओर बढ़ी थी कि तुम उसे स्वीकार कर लोगे, उसी समय तुमने मेरी आशा को धूलिसात् कर दिया। उस दिन मेरा निश्चित विश्वास हो गया कि तुम जड़-पाषाण पिण्ड हो, तुम्हारे भीतर न देवता है, न पशु है एक अड़िग-जड़ता। मैं इसीलिए वहाँ ठहर नहीं सकी। जीवन में मैंने उसके बाद बहुत दुःख झेले हैं, पर उस क्षण भर के प्रत्याख्यान के समान कष्ट मुझे कभी नहीं हुआ। छः वर्षों तक इस कुटिल दुनिया में असहाय मारी-मारी फिरी और अब मेरा मोह भक्ति में बदल गया है। भट्ट, तुम मेरे गुरु हो, तुमने मुझे स्त्री-धर्म सिखाया।'' इस प्रकार मोह और भक्ति के चक्कर में फँसी निपुणिका भक्ति और मोह का समुच्चय ही तो है।

निपुणिका स्वयं बहुत दुःखी है और भाग्य की मारी हुई है। दुर्भाग्य ने उसे कहाँ-कहाँ ठोकरें खाने के लिए मजबूर नहीं किया अर्थात् उसने सब प्रकार के कष्ट सहन किए, लेकिन फिर भी वह एक कोमल हृदय नारी है। उसने अपने ऊपर आए दुःखों की तो कभी परवाह ही नहीं की, लेकिन किसी दूसरे को वह दुःखी देख नहीं सकती। वह पान बेचने का काम करती थी। पान बेचने वाली होने के कारण उसे अन्तःपुर में भी पान देने जाना पड़ता था। वहीं अन्तःपुर में ही उसकी मुलाकात भट्टिनी से होती है। भट्टिनी को वहाँ पर दुःखी देखकर वह स्वयं का दुःख भूल जाती है और अपने प्राणों की बाजी लगाकर वह उसे उस कीचड़ से मुक्त कराने के लिए तैयार हो जाती है। वहीं पर उसकी भेंट बाण से हो जाती है। वह सोने में सुहागे की तरह काम करता है और वह अपने सतीत्व को कष्ट में डालकर भट्टिनी को आजाद कराने में सफल हो जाती है। वहाँ से मुक्त कराने के बाद निपुणिका भट्टिनी के साथ उसकी छाया बनकर रहती है और उसकी रक्षा की पूरी जिम्मेदारी अपने ऊपर ले लेती है। वह भट्टिनी के स्वाभिमान की रक्षा के लिए कुछ भी करने को तैयार रहती है। जब बाण कहता है कि भट्टिनी को महारानी राज्यश्री का आतिथ्य स्वीकार कर लेना चाहिए, किन्तु निपुणिका इसे भट्टिनी का अपमान समझती है और बाण को भला-बुरा कहने लगती है क्योंकि भट्टिनी ने स्थाण्वीश्वर में जो कष्ट सहन किए थे, निपुणिका उन्हें भूल नहीं पाती। इसलिए वह कहती भी है–**''धिक्कार है भट्ट, तुम कैसे भट्टिनी का अपमान करने पर राजी हो गए। कान्यकुब्ज का लम्पट-शरण्य राजा क्या भट्टिनी के सेवक को अपना सभासद बनाने की स्पर्धा रखता है। किस बुद्धि ने तुम्हें मौखरियों की रानी का निमत्रंण होने को उत्साहित किया? धिक्कार है भट्ट, तुम अत्यन्त सहज बात भी नहीं समझ सके? क्या इस पत्र को चिथड़े कर फेंक देने लायक शक्ति भी तुममें नहीं थी?''**

और फिर वह कहती है कि भट्टिनी यदि स्थाण्वीश्वर जाएगी तो एक स्वतन्त्र देश की रानी के रूप में अपने स्वाभिमान की रक्षा करते हुए जाएगी।

6. नारी मुक्ति का प्रश्न–प्रस्तुत उपन्यास में निपुणिका के माध्यम से नारी मुक्ति के प्रश्न पर भी गम्भीर विवेचन किया गया है। निपुणिका भले ही बाल विवाह का शिकार बनकर यौवन काल में ही विधवा हो जाती है लेकिन वह अपने आचरण के द्वारा नारी मुक्ति की ओर संकेत भी करती है। विधवा होने के बावजूद वह स्थाण्वीश्वर में पान की देकान खोलती है और भट्टिनी के उद्धार का बीड़ा उठाती है। अपनी प्रभावशाली भूमिका के कारण भट्टिनी में नायिका बनने की पूर्ण क्षमता है। इस सन्दर्भ में डॉ. कृष्णदेव शर्मा ने उचित ही लिखा है–**''वास्तव में यदि देखा जाए तो प्रभावात्मक दृष्टि से इस उपन्यास की सबसे प्रभावशाली पात्र निपुणिका है। उसमें नायिका बनने की क्षमता है और यदि भूमिका की दृष्टि से देखा जाए, प्रभाव सृष्टि की दृष्टि से मूल्यांकन किया जाए, तो वही आलोच्य उपन्यास की नायिका उभरती है, किन्तु फिर भी वह नायिका नहीं बन सकी। निम्न जाति में जन्म लेने के बावजूद उसमें उच्च संस्कार हैं। वह साहस की प्रतिमूर्ति है। विषम् परिस्थितियों से जूझना उसे भली प्रकार आता है।''** इस सन्दर्भ में डॉ. कृष्णदेव शर्मा पुनः लिखते हैं–**''घाट-घाट का पानी पीते रहने के कारण जितनी विषम परिस्थितियों को उसने झेला है, उससे वह दर्शनीय ही नहीं श्लाघ्य भी है। छोटे राजकुल जैसे विलासियों के अन्तःपुर से जहाँ पग-पग पर सुरक्षा का कड़ा प्रबन्ध था, जिस प्रकार बाणभट्ट को नारी वेश में ले जाकर वह भट्टिनी का उद्धार कर पाने में सफल हो जाती है, वह उसी के साहस की बात थी। यही क्यों, चण्ड-मण्डनी के धूर्त पुजारी को उल्लू बनाकर और अपने नारीत्व को दाँव पर लगाने की बात कहकर वह भट्टिनी को गंगा में कूदते देख बाण से उसकी रक्षा करने को कहती है। निपुणिका की महत्त्वपूर्ण भूमिका फलस्वरूप ही भट्टिनी छोटे राजकुल के तथाकथित महाराज की वासना से मुक्त होती है। इस कार्य में बाणभट्ट निपुणिका का सहयोग करता है। नारी मुक्ति का सम्पूर्ण प्रयास निपुणिका प्रयत्नों का ही परिणाम है। यदि वह बाण को प्रेरित न करती तो सम्भवतः भट्टिनी छोटे राजकुल की वासना का शिकार बन जाती।''**

Scanned with ACE Scanner

''महामाया का जीवन अपूर्व त्याग एवं सेवानुराग का अद्वितीय उदाहरण है''– इस कथन के आधार पर महामाया की चारित्रिक विशेषताओं का उद्घाटन करें।

उत्तर–महामाया प्रस्तुत उपन्यास **''बाणभट्ट की आत्मकथा''** की एक अन्य महत्त्वपूर्ण नारी -पात्र है। उसका जीवन आरंभ से ही दुविधाग्रस्त रहा है। उसी के कारण इस उपन्यास में ओजगुण की चमत्कारी सृष्टि हुई है। उसका जाज्वल्यमान चरित्र उपन्यास की कथा को अत्यधिक प्रभावशाली बनाता है। उपन्यास के सभी पात्र उसके व्यक्तित्व तथा कृतित्व से प्रभावित दिखाई देते हैं। उपन्यास में अधिकांश स्थलों पर महामाया को अवधूत सम्प्रदाय में दीक्षित संन्यासिनी के रूप में अंकित किया गया है। उपन्यास के 19वें अध्याय में ही पाठकों को उसका पूर्ण परिचय प्राप्त होता है। उल्लेखनीय बात तो यह है कि पाठक महामाया के पूर्व चरित्र को जाने बिना ही उससे अत्यधिक प्रभावित दिखाई पड़ता है। महामाया एक ओर तो हर्षकालीन नारी संन्यासिनियों का प्रतिनिधित्व करती है और दूसरी ओर, तत्कालीन नारी के हृदय के अन्तर्द्वन्द्व का उद्घाटन करती है। उसके चरित्र की विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

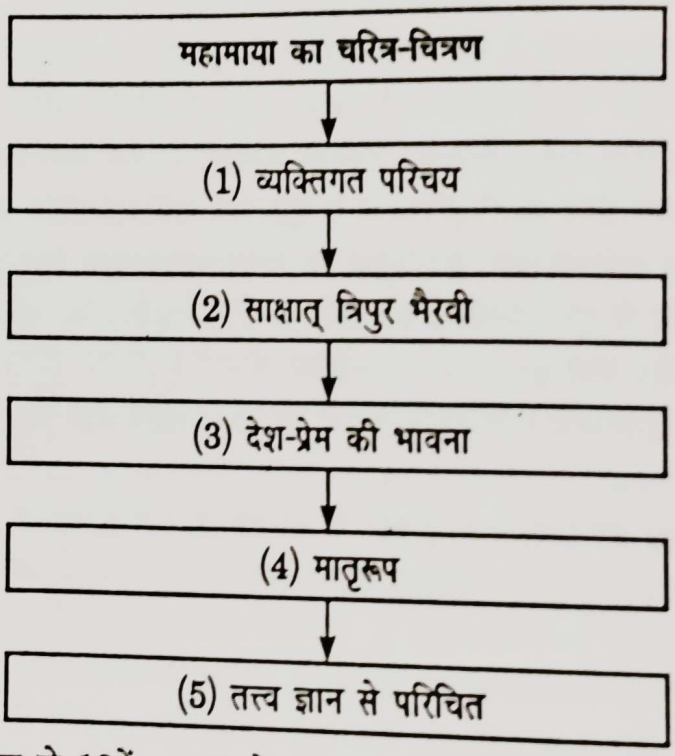

1. व्यक्तिगत परिचय–उपन्यास के 19वें अध्याय से पता चलता है कि महामाया सम्राट् ग्रहवर्मा की विवाहित पत्नी थी लेकिन इस विवाह से पहले ही उसका वाग्दान हो चुका था। उसके बारे में यह प्रसिद्ध था कि वह कुन्तलराज की बेटी थी, लेकिन वह उसकी अपनी सन्तान न होकर एक अपहृता बालिका थी। अपने भविष्य की चिन्ता न करते हुए यह सच्चाई उसने अपने पति ग्रहवर्मा को बता दी थी। लेकिन ग्रहवर्मा ने इन बातों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। वह हमेशा उसे महारानी कहकर संबोधित करता था और अत्यधिक प्यार भी करता था। परन्तु महामाया सुहाग्नि होकर भी वैरागिनी बनी हुई थी। कारण यह था कि जिस युवक के साथ उसका वाग्दान संस्कार हुआ था, वह निराश होकर विंध्य-मेखला पर्वत के धूम्रगिरि में तपस्या कर रहा था। इसलिए महामाया ने घर-संसार त्यागकर संन्यासिनी होना अच्छा समझा, लेकिन ग्रहवर्मा के मन में महामाया के प्रति अत्यधिक आसक्ति थी। लेकिन अंततः वाघ्रण्य नामक सेवक की सहायता से महामाया ने घर-परिवार का त्याग किया और वह अवधूत अघोर भैरव की शिष्या बन गई।

2. साक्षात् त्रिपुर भैरवी–संन्यास ग्रहण करने के बाद महामाया के वैयक्तित्व में अभूतपूर्व परिवर्तन आ गया। चण्डी मंडप के बाहर सूर्योदय काल में जब बाणभट्ट ने महामाया को पहली बार देखा तो उसे लगा कि वह साक्षात् त्रिपुरभैरवी को देख रहा है। उसने गाढ़ गैरिक वस्त्र धारण किए हुए थे तथा उसके एक हाथ में त्रिशूल था। महामाया का यह रूप स्त्रीत्व की अपेक्षा पौरुष को अधिक परिलक्षित कर रहा था। वह नारी थी, लेकिन योगिनी भी थी। अतः भैरवी के सभी लक्षण उसमें विद्यमान् थे।

Scanned with ACE Scanner

स्वरूप का वर्णन करते हुए बाणभट्ट कहता भी है–''उसके एक हाथ में त्रिशूल था और दूसरे में काला-सा कोई पात्र। खुले हुए पिंगल वर्ण के केश गुल्फों तक लटके ऐसे लग रहे थे, मानो सायंकालीन अरुण मेघ-मण्डल में विद्युत की शिखाएँ अचंचल होकर रुक गई हो। उसका सुनहरा मुखमंडल गैरिक वस्त्रों से इस प्रकार कुंडलित था, मानो धातुमयी अधित्यका में आरावध के झाड़ फूले हों। उसकी आँखें [illegible]कुसुम के समान लाल-लाल और फटी हुई थीं और उनसे एक मन्द-मन्द रश्मि-सी निकल रही थी। उसकी मूर्ति मनोहर नहीं थी, वह भयंकर भी नहीं थी। यदि कड़ककर उसने पहले ही मुझे डाँट न दिया होता, तो निस्सन्देह, मैं उसे साक्षाद्विग्रहधारिणी चण्डिका ही समझता।''

3. देश-प्रेम की भावना– व्यक्तिगत रूप से महामाया उदार और कोमल हृदय नारी है। लेकिन योगिनी के रूप में वह सम्पूर्ण राष्ट्र की चिन्ता करती हुई दिखाई देती है। जब राष्ट्र पर संकट के बादल मंडराने लगते हैं तो यही महामाया एक प्रचण्ड ज्वाला का रूप धारण कर लेती है। उस समय वह ओजपूर्ण वाणी में राष्ट्र की रक्षा के लिए भरसक प्रयास करती हुई दिखाई देती है। महामाया के इस रूप को देखकर लगता है कि उसमें राष्ट्रीय चेतना कूट-कूटकर भरी हुई है। यहाँ तक कि वह अपने प्राणों की बलि देने को तैयार हो जाती है। अपने ओजस्वी भाषण के द्वारा वह जन-साधारण के रुख को बदल देती है। उसके ओजस्वी भाषण का एक उदाहरण देखिए–

''सभा का निर्णय उसी मनोवृत्ति का पोषक है। आप कहते हैं कि उत्तरापथ के ब्राह्मण और श्रमण, वृद्ध और बालक, बेटियाँ और बहुएँ किसी प्रचण्ड नरपति की छाया पाये बिना नहीं बच सकतीं। आर्य सभासदो! उत्तरापथ के लाख-लाख नौजवानों ने क्या कंकण-वलय धारण किया है? क्या वे वृद्धों और बालकों, बेटियों और बहुओं, देवमन्दिरों और विहारों की रक्षा के लिए अपने प्राण नहीं दे सकते? क्या इस देश के विद्वानों में स्वतंत्र संघटन-बुद्धि का विलोप हो गया है? इस उत्तरापथ में लाख-लाख निरीह बहुओं और बेटियों के उपहरण और विक्रय का व्यवसाय क्या नहीं चल रहा है? अगर देवपुत्र तुवरमिलिन्द का हृदय थोड़ा भी संवेदनशील होता तो आज से बहुत पहले उन्हें मूर्च्छित होकर गिर पड़ना था। क्या निरीह प्रजा की बेटियाँ उनकी नयन-तारा नहीं हुआ करती हैं? क्या राजा और सेनापति की बेटियों का खो जाना ही संसार की दुर्घटनाएँ हैं?''

महामाया दस्युओं के आक्रमण से देशवासियों को संगठित कर एक सूत्र में बाँधती है। उसमें भाषण-शक्ति का अभूतपूर्व विकास हुआ है। वह अपने भाषण से जन-मानस को जागृत कर सकती है। यह उसके भाषण का ही परिणाम है कि वह सुप्त प्रजा को जागृत कर उसके दायित्व की ओर प्रेरित करती है। वह कहती है–

''अमृत के पुत्रों, मृत्यु का भय माया है, राजा से भय दुर्बल चित्त का विकल्प है। प्रजा ने राजा की सृष्टि की है। संगठित होकर म्लेच्छवाहिनी का सामना करो। देवपुत्रों और महाराजाधिराजों की आशा छोड़ो। समस्त उत्तरापथ की लाज तुम्हारे हाथों में है। अमृत के पुत्रों, धर्म की रक्षा अनुनय-विनय से नहीं होती, वह होती है अपने को मिटा देने से। न्याय के लिए प्राण देना सीखो, सत्य के लिए प्राण देना सीखो, धर्म के लिए प्राण देना सीखो।''

4. मातृरूप–महामाया भले ही योगिनी बन गई है, लेकिन वह नारी-सुलभ गुणों को छोड़ नहीं सकी। ममता महामाया का मुख्य गुण है। समय-समय पर उसका मातृत्व जाग उठता है। भले ही वह बाणभट्ट को आरंभ में दुत्कारती है, लेकिन बाद में उसे बेटा कहकर पुकारती भी है। यही नहीं, वह भट्टिनी को भी 'बिटिया' कहकर संबोधित करती है। बाण तो उसकी ममता भरी गोद के सुख को भुला ही नहीं पाता। एक स्थल पर वह कहता भी है–

''आनन्द भैरव के इशारे पर उन्होंने मेरा मस्तक स्पर्श किया। मुझे ऐसा लगा कि मानो अमृत-तूलिका से किसी ने मेरे सारे शरीर को विलिप्त कर दिया हो। आनन्द भैरवी ने मेरा सिर धीरे-धीरे अपने उत्संग में लिया। मेरी सारी जड़िमा क्षणभर में विलुप्त हो गई। आनन्द भैरवी ने मन्द स्मितपूर्वक मेरे नयनों और कपोल प्रान्तों को अपने अमृतार्द्र हाथों से पोंछ दिया। मेरी आँखें खुल गईं, तब भी मेरा मस्तक भैरवी की गोद में था। मैंने अभिभूत की भाँति कहा–''अपराध क्षमा हो, अम्ब! आज मैं कृतार्थ हूँ। भैरवी के मुख पर आनन्द की धारा बह गई। उन्होंने फिर एक बार भैरव और सुरादेवी का ध्यान-मंत्र पढ़ा। अब मैंने समझा कि मेरा मस्तक महामाया की गोद में है। उनका कण्ठ-स्वर स्पष्ट, मधुर और करुण था। उनकी आंखों में मातृस्नेह झलक रहा था।''

5. तत्त्व ज्ञान से परिचित–महामाया केवल बाहरी दिखावे के लिए ही भैरवी नहीं है। कौल-तंत्र की उसने पूरी साधना की हुई है। इसलिए उसे कौलतंत्र के सभी सिद्धान्तों का आन्तरिक और बाह्य पूर्ण ज्ञान है। स्त्री और पुरुष के बारे में वह बड़े ही तर्कसम्मत, ठोस और प्रभावशाली विचार प्रस्तुत करती है। उसका विचार है कि पुरुष का सत्य कुछ और होता है, नारी का सत्य कुछ और, लेकिन नारी और पुरुष दोनों एक-दूसरे के पूरक भी हैं। एक स्थल पर वह स्पष्ट कहती है–

Scanned with ACE Scanner

सुचरिता की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–सुचरिता का चरित्र-चित्रण–'बाणभट्ट की आत्मकथा' में सुचरिता के चरित्र व व्यक्तित्व का अधिकांश चित्रण आत्मकथात्मक रूप से हुआ है। उपन्यास में उसका चरित्र नारी-समस्या के अन्य पक्ष को प्रकट करता है। उसके चरित्र संबंधी प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

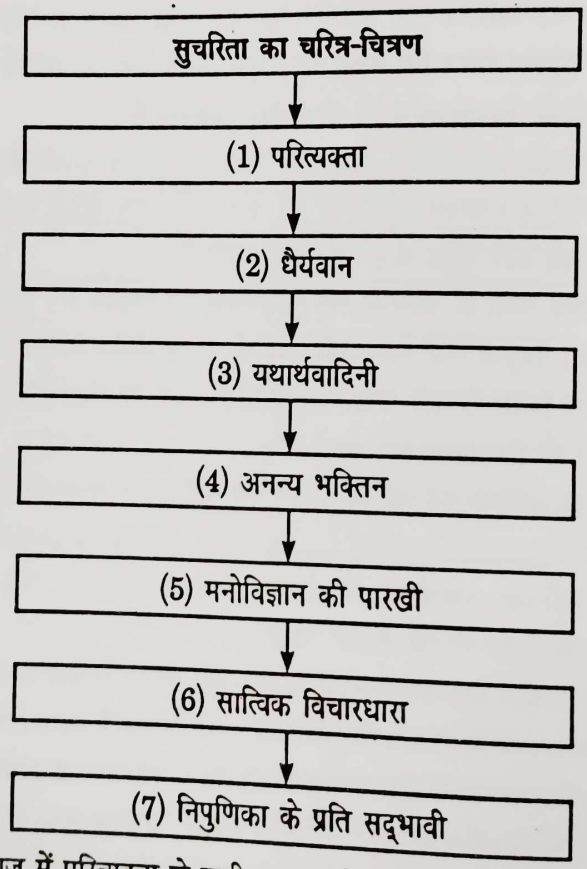

(1) परित्यक्ता–सुचरिता समाज में परित्यक्ता के उत्पीड़न व दुखों को प्रकट करने वाली एक पात्र है। वह एक ऐसी स्त्री है जिसका विवाह बचपन में ही हो गया था परन्तु उसका पति विरतिवज्र संन्यास धारण कर लेता है। अतः बाल्यावस्था को बेसुधी में गुजारने वाली सुचरिता के निकट सम्बन्धियों में केवल एक सास ही है। वह एक परित्यक्ता के रूप में अनेक कष्ट व दुख झेलती है। बाल्यावस्था से निकल कर उसमें यौवन ठीक उसी प्रकार आता है जैसे बसन्त काल में मधुमास, मधुमास में पल्लवराजि पल्लवराजि में पुष्पसंभार, पुष्पसंभार में भ्रमरावली और भ्रमरावली में मदावस्था बिना बुलाए आ जाती है परन्तु वह अपने रूप, शृं आदि को यत्नपूर्वक सम्भाले हुए अपनी सास के संरक्षण में अपने पति को लगातार ढूँढ़ती फिरती है।

Scanned with ACE Scanner

(2) धैर्यवान–सुचरिता की एक अन्य बड़ी विशेषता यह है कि वह बहुत ही धैर्य से काम लेती है। पति की वियोगावस्था में भी वह यह सोचकर अपने मन को धैर्य देती है कि एक न एक दिन उसे अवश्य ही पति-परमेश्वर के दर्शन होंगे। बाणभट्ट से पहले वह अपने जीवन की कथा निपुणिका व अन्य लोगों को सुना चुकी है परन्तु ज्यों ही वह अपने तपस्वी पति की ओजस्विता की ओर आकर्षित होने का वर्णन करती है तब निपुणिका को छोड़कर अन्य लोग उसके आचरण को पाप मानकर उसकी पूरी बात सुनने से मना कर देते हैं, केवल निपुणिका ही उसके इस आचरण को संदेह की दृष्टि से नहीं देखती और केवल बाणभट्ट की एक ऐसा व्यक्ति है जो उसे आगे की बातें सुनाने का आग्रह करता है। यह सुचरिता के धैर्य का ही परिणाम है कि उसकी सास बरसों पश्चात् मिले अपने तपस्वी पुत्र को डॉट-डपटक उसे पाणिग्रह के लिए विवश करती है। इसी प्रकार महाराधिराज द्वारा बन्दी बनाए जाने पर भी वह अपने धीरज का प्रदर्शन करते हुए कहती है **"मैं महाराजाधिराज पर न प्रसन्न हूँ, न अप्रसन्न हूँ।"**

(3) यथार्थवादिनी–सुचरिता किसी भी घटना के पीछे छिपे सत्य को पहचानने की क्षमता रखती है तथा अवसर पड़ने पर विरतिवज्र उस सत्य को उद्घाटित करने में हिचकिचाती भी नहीं है। जब उसका तपस्वी पति विरतिवज्र उसका पाणिग्रहण करने हेतु बौद्ध धर्म को छोड़कर वैष्णव धर्म अपना लेता है तब बौद्ध वसुभूति इससे चिढ़कर अपने शिष्य धनदत्त श्रेष्ठी को उकसाकर उस पर मिथ्याभियोग चलवाता है फलतः सुचरिता व उसका पति विरतिवज्र दोनों ही बन्दी बना लिए जाते हैं। सुचरिता इस मिथ्याभियोग के पीछे छिपे यथार्थ को प्रकट करती हुई कहती है **"यह सब थोड़े से पंडित मानी व्यक्तियों की ईर्ष्याग्नि है, जिसमें राजा जल रहा है, प्रजा जल रही है और वह समय भी आ गया है, जब समूचा आर्यावर्त्त अपने तरुण बालकों, अनार्यों और वृद्धों के साथ जलकर भस्म हो जाएगा।"** अतः कहा जा सकता है कि सुचरिता प्रत्येक घटना में छिपे तथ्य को पहचान सकती है।

(4) अनन्य भक्तिन–सुचरिता के हृदय में धैर्य के साथ-साथ अपने ईश्वर के प्रति अटूट श्रद्धा व भक्ति भी है। यद्यपि उसने व उसके पति ने कोई भी अनुचित कार्य करके किसी भी सामाजिक या धार्मिक मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया है परन्तु उनके धर्म-परिवर्तन से रुष्ट होकर बौद्ध बसुभूति उन्हें मिथ्याभियोग में बन्दी बना देते हैं परन्तु सुचरिता उसके व महाराजाधिराज के इस अन्यायपूर्ण कृत्य से तिनक भी विचलित नहीं होती है क्योंकि उसे महाराजाधिराज से भी बड़े महाराज अर्थात् ईश्वर पर अटूट विश्वास है। इसीलिए वह कहती है **"मैं महाराजाधिराज पर न प्रसन्न हूँ, न अप्रसन्न हूँ।** आर्य इनसे कहीं बड़े महाराज की शरण पाने का प्रयास कर रही हूँ।" इसी प्रकार वह अपने आप को ईश्वर के प्रति समर्पित कर चुकने का भाव दर्शाते हुए कहती है **"नारायण ही इस नाव के करणधार है। हम तो तूफान देखकर हाय-हाय करने वाले जीव हैं। मन क्यों नहीं समझ पाता, आर्य कि वह किसी कार्य का उत्तरदायी नहीं है। वसुदेव के रहते इतना वृथा सोच क्यों करता है वह?"** अतः कहा जा सकता है कि सुचरिता एक अनन्य भक्तिनी है जो विपदा-काल में भी अपने उपास्य पर अटूट विश्वास रखते हुए अपने धैर्य को धारण किए रहती है।

(5) मनोविज्ञान की पारखी–सुचरिता बचपन से ही एक परित्यक्ता के रूप में रहती है, उसका सामना सभी प्रकार के व्यक्तियों से हुआ है अतः उसे मनोविज्ञान का पूरा ज्ञान है। अपने पति के साथ बन्दी बनाए जाने पर वह लोगों की कुत्सित मनोवृत्ति को पहचानते हुए कहती है "मैं नगर के विडम्ब रसिकों का छन्दानुरोध नहीं कर सकी हूँ, इसीलिए उन लोगों ने मेरे विषय में बहुत-सा अपवाद फैला रखा है।" वह मानव-सुलभ प्रवृत्तियों को जानने और परखने की क्षमता रखती है तथा मानव-जीवन के गूढ़ सत्य को प्रकट करते हुए कहती है "वस्तुतः कल्मष भी मनुष्य का अपना सत्य है। उसे स्वीकार करके ही वह सार्थक सिद्ध हो सकता है। दबाने से वह मनुष्य को नष्ट कर देता है।" अतः कहा जा सकता है कि मनोविज्ञान को जानने व मानवी-प्रवृतियों को परखने वाली स्त्री है।

(6) सात्त्विक विचारधारा–सुचरिता सात्त्विक विचारों वाली स्त्री है। अपने भपूर यौवन में भी सात्त्विक आचरण करने वाली सुचरिता अपने इस गुण से बाणभट्ट को प्रभावित करती है और वह सोचने पर विवश हो जाता है कि **"कौन कहता है यौवन अन्ध और दुर्ललित है।"** उसके मन में अपने पति के प्रति अगाध श्रद्धा, निष्ठा व प्रेम है। यदि देखा जाए तो उसमें एक आदर्श नारी के वे सभी गुण विद्यमान हैं जो नारी को शक्ति का रूप प्रदान करते हैं, यही कारण है कि उसके बन्दी बनाए जाने पर प्रजा विद्रोह करने पर उतारू हो जाती है और समाज उसकी ओर आकर्षित हो जाता है। अतः कहा जा सकता है कि वह शोभा का राशि है, नारीत्व उसका एक बड़ा गुण है।

(7) निपुणिका के प्रति सद्भाव–सुचरिता के हृदय में नारी-सुलभ ईर्ष्या का लगभग अभाव है। स्थाण्वीश्वर में पान की दुकान चलाने वाली व राजकुल के अन्तःपुर में पहुँचाने वाली निपुणिका के प्रति जहाँ अधिकांश लोग दुर्भाव रखते थे, उसे पतित समझते थे, वहीं सुचरिता उसकी दशा को समझकर उससे सहानुभूति रखती है तथा उसके प्रति सद्भाव बनाए रखती है। जब बाणभट्ट पुनः स्थाण्वीश्वर पहुँचकर सुचरिता को निपुणिका के विषय में बताता है तब वह अपने सद्भावों को प्रकट करती हुई पूछती है **"तो वह अभागी अभी जीती है।"**

Scanned with ACE Scanner

'इन स्मृति चित्रों में मेरा जीवन भी आ गया है।" महादेवी वर्मा के इस वक्तव्य के परिप्रेक्ष्य में 'अतीत के चलचित्र' की समीक्षा कीजिए।

उत्तर-**महादेवी वर्मा की संवेदना–** हिंदी रेखाचित्र के लेखकों में महादेवी वर्मा का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान है। उनके रेखाचित्रों ...फोटोग्राफी का सौंदर्य दिखाई देता है। **'अतीत के चलचित्र', 'मेरा परिवार', 'स्मृति की रेखाएँ'** तथा **'पथ के साथी'** महादेवी वर्मा ...महत्त्वपूर्ण रेखाचित्र संग्रह हैं। इनमें 'अतीत के चलचित्र' एक उल्लेखनीय रेखाचित्र संग्रह कहा जा सकता है जिसमें लेखिका ने ...जीवन की अनेक कटु, मधुर तथा करुणा विगलित स्मृतियों को संजोया है। इन रेखाचित्रों के माध्यम से लेखिका ने अपने ...का भी चित्रण किया है। 'अतीत के चलचित्र' में महादेवी वर्मा ने निम्न वर्गीय पात्रों की वेदनाओं, समस्याओं, अभावों, ...तथा संघर्षों की विविध स्थितियों तथा विशेषताओं का वर्णन किया है।

'अतीत के चलचित्र' के संदर्भ में डॉ. राजमणि शर्मा ने लिखा है–"**अतीत के चलचित्र हिंदी की वह थाती है जो सन् 1930 ...1940 के बीच निम्न और निम्न मध्यवर्गीय समाज की सच्ची झांकी सदैव संजोये रहेगी। इसमें मानव की आशा, आकांक्षा, ...है, कल्पना का ऐसा सजीव जगत है जो अपने वैविध्य में जगमगाकर हमारे समक्ष अपनी निधि खोल देता है।" डॉ. ब्रजमोहन** ...जी के अनुसार–"**लेखिका का निरीक्षण इतना सूक्ष्म और संवेदना का रंग इतना गहरा और उज्ज्वल है कि स्मृति में जो रेखाएँ ...-कागज पर उतर कर उनसे करुणा और हास्य व्यंग्य के छाया-प्रकाश में हँसते-खेलते, उच्चतम मानवीय तत्त्वों से अनुप्राणि... स्पन्दनशील चित्र बन गए हैं।"**

संवेदना शब्द का अर्थ एवं स्वरूप–संवेदना शब्द 'सम्' उपसर्ग तथा 'वेदना' शब्द के जुड़ने से बना है। जिसका अर्थ है–...अनुभूति अथवा दुःख या पीड़ा की अनुभूति। अन्य शब्दों में कह सकते हैं कि जब किसी व्यक्ति की व्यथा, वेदना और पीड़ा को ...कर हमारे मन में भी उसी के समान वेदना की अनुभूति होती है अर्थात् हमारे मन में सहानुभूति होती है तो उसे संवेदना कहते ... महादेवी वर्मा ने इस प्रकार के परिवार में जन्म लिया था जहाँ बचपन से ही उन्हें उच्च संस्कार प्राप्त हुए। उनमें बाल्यकाल ... ही परहित की भावना रही है। उनकी पूज्य माता जी ने उन्हें हमेशा पीड़ितों, प्रताड़ितों तथा भिक्षुकों के प्रति दया करना, ...की सहायता करना आदि का उपदेश दिया था। एक स्थल पर वे लिखती भी हैं–"**बचपन से बड़े होने तक माँ न जाने कितनी ...व्याख्या-उपव्याख्याओं के साथ इस व्यवहार सूत्र को समझाती रही हैं कि हमारी शिष्टता की परीक्षा उस समय होती है जब कोई ...भटका भिखारी द्वार पर खड़ा होकर हमारी दया के कण के लिए हाथ फैला देता है।"** महादेवी वर्मा के इस कथन से यह ...ट हो जाता है कि उनके व्यक्तित्व में करुणा, व्यथा और पीड़ा का विशेष महत्त्व रहा है। यही कारण है उनको आधुनिक युग ...मीरा भी कहा जाता है। वेदना और करुणा उनके साहित्य की महत्त्वपूर्ण प्रवृत्ति है। उन्होंने न केवल अपनी काव्य रचनाओं में, ...रेखाचित्रों में भी इसी वेदना और पीड़ा की अभिव्यक्ति की है। उनके मन में समाज के उपेक्षित, शोषित तथा प्रताड़ित लोगों

Scanned with ACE Scanner

के प्रति अत्यधिक सहानुभूति देखी जा सकती है। यह निश्चित है कि अल्पायु में ही विवाह के बाद उन्हें दाम्पत्य सुख प्राप्त नहीं हुआ। संभवतः यही कारण है कि वे सदैव उपेक्षिता, परित्यक्ता, शोषिता और समाज द्वारा पीड़ित नारियों के प्रति संवेदनशील रही हैं। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन इस अभावग्रस्त लोगों के लिए समर्पित कर दिया। अतीत के चलचित्र के आरंभ में वे लिखती भी हैं–**"मेरे जीवन की परिधि के भीतर खड़ी होकर चरित्र जैसा परिचय दे पाते हैं वह बाहर रूपांतरित हो जाएगा। फिर जिस परिचय के लिए कहानीकार अपने कल्पित पात्रों को वास्तविकता से सजाकर निकट लाता है, उसी परिचय के लिए मैं अपने पथ के साक्षियों को कल्पना का परिधान पहनकर दूरी की सृष्टि क्यों करती?"** लेखिका के इस कथन से यह स्पष्ट हो जाता है कि अतीत के चलचित्र के पात्र कल्पित नहीं हैं बल्कि ये वे पात्र हैं जिनका महादेवी के जीवन से संपर्क हुआ और जिनके प्रति संवेदना दिखाते हुए महादेवी वर्मा ने उन्हें अपने साथ जोड़ा। अतीत के चलचित्र रचना में लेखिका का व्यक्तित्व लगभग सभी पात्रों से संबंधित है। संवेदना के अर्थ से परिचित हो जाने के उपरांत हम अतीत के चलचित्र के पात्रों के प्रति महादेवी (लेखिका) की संवेदना का विवेचन निम्नलिखित बिंदुओं के अंतर्गत कर सकते हैं–

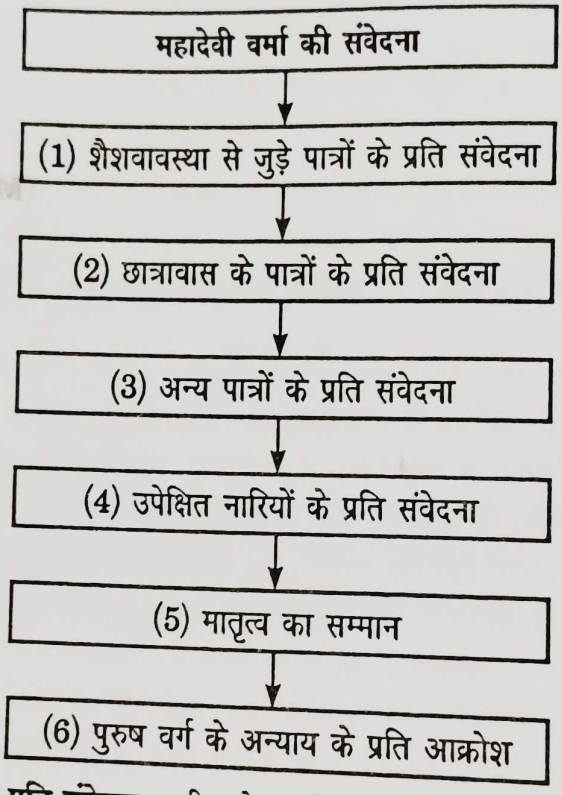

(1) शैशवावस्था से जुड़े पात्रों के प्रति संवेदना–अतीत के चलचित्र में कुल ग्यारह पात्र हैं। इनमें से रामा, बिन्दा तथा भाभी तीनों पात्र लेखिका की शैशवावस्था से जुड़े हुए हैं। रामा नामक घरेलू सेवक उनकी याद से पूर्वकाल का है। लेखिका को उसके बारे में किसी प्रकार की जानकारी नहीं थी केवल पुरानी स्मृति के आधार पर ही लेखिका ने उसका परिचय दिया है। वे लिखती भी हैं–**"रामा हमारे यहाँ कब आया, यह न मैं बता सकती हूँ और न मेरे भाई-बहन।"** यह सब होते हुए भी लेखिका ने रामा के प्रति ममता तथा अपनत्व का भाव बनाए रखा। वस्तुतः लेखिका की माता ने ही रामा को अपने परिवार का सदस्य माना था। यही कारण है कि रामा ने परिवार के बच्चों को अपनी ममता से सिक्त कर दिया। जब रामा चला गया तो न तो बालिका महादेवी उसे भुला सकी और न ही उसके भाई-बहन। एक स्थल पर वे लिखती भी हैं–**"आज मैं इतनी बड़ी हो गई हूँ, कि 'राजा भईया' कहलाने का हठ स्वप्न सा लगता है..... पर रामा आज भी सत्य है, सुंदर है और स्मरणीय है।"**

दूसरा पात्र मारवाड़ी विधवा भाभी है जिसका घर लेखिका के घर के पास था। वह विधवा हमेशा सफेद ओढ़नी और काला मारवाड़ी लहंगा पहने रहती थी। पति के देहान्त के बाद वह विधवा बंद मकान में अकेली रहती थी। वृद्ध ससुर की आज्ञा मानकर उसे केवल एक समय भोजन करना होता था उस समय महादेवी की आयु ७ वर्ष की थी और वह एक मिशन स्कूल में पढ़ती थी। धीरे-धीरे लेखिका का उसके साथ संवेदनात्मक संबंध स्थापित हो गया। वस्तुतः विधवा भाभी अपने ससुर तथा ननद के अत्याचारों का शिकार बन रही थी। एक स्थल पर अपनी संवेदनाओं को व्यक्त करती हुई। लिखती भी हैं–**"क्रूरता का वैसा प्रदर्शन मैंने फिर कभी नहीं देखा। बचाने का कोई उपाय न देखकर ही कदाचित् मैंने जोर-जोर से रोना आरंभ किया, परंतु बच तो वह तब सकी, जब मन से नहीं शरीर से भी बेसुध हो गई थी।"**

Scanned with ACE Scanner

तीसरा पात्र बिन्दा है जो लेखिका की बाल्य सखा थी। उस समय लेखिका की आयु बहुत छोटी थी। उसे जीवन और मृत्यु का ज्ञान नहीं था। लेखिका इतनी अबोध थी कि जब बिन्दा अपनी स्वर्गवासिनी माँ को तारों में खोजने का प्रयास करती तो वह अपनी माँ से कहती है–**"तुम कभी तारा न बनना, चाहे भगवान कितना ही चमकीला तारा बनाए।"** बाल्यावस्था से ही लेखिका की बिन्दा के प्रति संवेदनशीलता थी। स्वयं लेखिका विमाता के रौद्र-व्यवहार को नहीं जानती थी परंतु बिन्दा को इसका कटु अनुभव था कि अपनी माँ के बिना विमाता का अत्याचार सहन करना कितना कष्टदायी होता है।

2. छात्रावास के पात्रों के प्रति संवेदना–प्रस्तुत रेखाचित्र संग्रह के कुछ ऐसे पात्र भी हैं जो छात्रावास में रहते हुए महादेवी के संपर्क में आ गए। इनमें से एक सफाई का कार्य करने वाली सबिया थी जो बड़ी कर्त्तव्यनिष्ठ और सरल स्वभाव की नारी थी। सबिया की छोटी-सी लड़की छोटे भाई की देख-रेख करती थी और सबिया छात्रावास की सफाई का काम करती थी। लेखिका उसके जीवन की घोर विडम्बना के कारण अत्यधिक दुःखी हुई और उसकी सबिया के प्रति असीम संवेदना उमड़ पड़ी। लेखिका ने सबिया को पौराणिक पात्र सावित्री से कम नहीं माना। एक स्थल पर लेखिका लिखती भी हैं–**"सच तो यह है कि सबिया को उस पौराणिक नारीत्व के निकट पाती हूं जिसने जीवन की सीमा-रेखा किसी अज्ञात लोक तक फैला दी थी। उसे यदि जीवन के लिए मृत्यु से लड़ना पड़ा तो यह न मरने के लिए जीवन से संघर्ष करती है।"** एक अन्य आठ वर्ष की बालिका का रेखाचित्र भी अत्यधिक महत्त्वपूर्ण भी है। जो मातृ-पितृ विहीन होकर ग्यारहवें वर्ष में ही विधवा हो गई थी। अठारहवें वर्ष में वह किसी दुष्कर्मी की वासना का शिकार बनने के बाद एक पुत्र की माँ बन गई। लेखिका के मन में उस माँ तथा पुत्र के बारे में ममता, दया और करुणा की भावनाएँ उत्पन्न हो गई थीं। लेखिका ने उस विधवा माँ को अपनी बेटी मान लिया और उसके पुत्र को अपना नाती मानकर उन्हें सुरक्षा प्रदान की। उस समय लेखिका की आयु लगभग अठारह वर्ष थी। उसके बारे में लेखिका ने लिखा भी है–**"अब यदि मैं उसे माँ की ममता भरी छाया दे सकूँ, तो वह अपने बालक के साथ कहीं भी सुरक्षित रह सकेगी।"** इसी संदर्भ में लेखिका ने अंधे आलोपी के रेखाचित्र का भी उल्लेख किया है कि जो बालक रघु के साथ लेखिका से कुछ माँगने आया था। लेखिका के मन में उसके प्रति संवेदना जाग उठी और उसने छात्रावास की तरकारी लाने का दायित्व उसे सौंप दिया। अंधा आलोपी एक कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति था। छात्रावास की बालिकाओं से उसे प्रगाढ़ स्नेह था। कई बार तो वह बिना दाम लिए बहुत-सी चीजें बालिकाओं को बांट देता था। उसे उन बालिकाओं में अपनी चचेरी बहन का स्वर सुनाई देता था। अंधे आलोपी की अगाढ़ श्रद्धा देखकर उसके मन में भी उसके प्रति असीम संवेदना जाग उठी। जब आलोपी संसार से विदा हो गया तो भी महादेवी उसे न भुला सकी।

3. अन्य पात्रों के प्रति संवेदना–प्रस्तुत रेखाचित्र संग्रह में कुछ ऐसे भी पात्र हैं जिनका लेखिका से अचानक संपर्क हुआ। इनमें से घीसा का नाम लेना तथा उल्लेख करना नितान्त आवश्यक है। घीसा गंगा पार झूसी के झाड़ के खंडहर के समीपवर्ती गाँव में रहता था। लेखिका वहाँ गरीब बच्चों को पढ़ाने जाती थी। कोरी जाति की विधवा के पुत्र घीसा के प्रति लेखिका की संवेदना जागृत हो गई। इस बालक में न केवल गुरु-भक्ति थी बल्कि विद्यार्जन की भी जिज्ञासा थी। पढ़ाई के अंत में घीसा ने अपनी नई कमीज बेचकर एक तरबूज खरीदा और उसे गुरु-दक्षिणा के रूप में लेखिका को अर्पित किया। उस समय लेखिका इतनी भावुक और संवेदनशील हो गई कि वह मुख से कुछ न बोल पाई। इस संदर्भ में लेखिका लिखती भी हैं–**"मैं आज गाँव के उस मलिन, सहमे, नन्हे से विद्यार्थी की सहसा याद आने का कारण बता सकती जो छोटी लहर के समान ही मेरे जीवन को अपनी सारी आर्द्रता में डूबकर अनन्त जलराशि में विलीन हो गया।"** इसी प्रकार लेखिका का संपर्क पर्वतीय क्षेत्र की लछमा से हुआ था। इसी प्रदेश में लेखिका को बिट्टो की भी जानकारी दी गई जिसकी व्यथा सुनकर लेखिका के मन में संवेदना का सागर उमड़ पड़ा। बिट्टो अपनी भाभियों के अत्याचारों का शिकार बन गई थी। बेचारी बिट्टो को ही पति की मृत्यु का कारण माना था। तत्पश्चात् बिट्टो का पुनर्विवाह एक 54 वर्षीय वृद्ध से कर दिया गया जो रुग्ण और अस्वस्थ था। इसी प्रकार लछमा का रेखाचित्र भी बड़ा संवेदनशील बन पड़ा है। उसका विवाह एक विक्षिप्त व्यक्ति से कर दिया गया। घर के देवर-जेठ उसे अपना शत्रु मानते थे क्योंकि वे चाहते थे कि यदि लछमा न रहेगी तो वे अपने पागल भाई की सारी सम्पत्ति छीन सकेंगे। जब लछमा महादेवी के संपर्क में आई तो उसे भी महादेवी की ममता प्राप्त हुई।

4. उपेक्षित नारियों के प्रति संवेदना–प्रस्तुत रेखाचित्र संग्रह में पुरुष पात्रों की अपेक्षा नारी पात्रों की संख्या अधिक है। ये नारियाँ पुरुष जाति के अत्याचारों के कारण व्यथित, पीड़ित और वेदनाग्रस्त थीं। स्वयं नारी होने के कारण महादेवी वर्मा के मन में उनके प्रति प्रगाढ़ करुणा, दया, ममता और संवेदना उत्पन्न हो गई। यही कारण है कि महादेवी ने अपने इन रेखाचित्रों में नारी

Scanned with ACE Scanner

जाति की वेदना, पीड़ा, अभावग्रस्तता, अशिक्षा, रूढ़िवादिता तथा उनकी मजबूरी का यथार्थ चित्रण किया है। विधवा मारवाड़ी भाभी, सबिया, तीन भाइयों की लाड़ली बहन बिट्टो, अठारह वर्षीया विधवा बालिका, बदलू कुमार की पत्नी रधिया, पहाड़ी युवती, लछमा आदि सभी नारी पात्र करुणा और दया के पात्र हैं। महादेवी उनकी दुर्भाग्यपूर्ण कहानी को सुनकर अत्यधिक संवेदनशील हो जाती है। विशेषकर वेश्या की बेटी की गाथा सुनकर उनके मन में अत्यधिक व्याकुलता और संवेदना उत्पन्न हो गई। लेखिका स्वीकार करती है कि नारियाँ ममता, करुणा, त्याग और समर्पण की मूर्ति होती हैं परंतु समाज हमेशा उनकी उपेक्षा करता है और उन पर तरह-तरह के अत्याचार करता है। एक स्थल पर वे लिखती भी हैं–**"समाज ने स्त्री मर्यादा का जो मूल्य निश्चित कर दिया है, केवल वही उसकी गुरुता का मापदण्ड नहीं। स्त्री की आत्मा में उसकी मर्यादा की जो सीमा अंकित रहती है वह समाज के मूल्य से बहुत अधिक गुरु और निश्चित है।"** लेखिका के मन में नारियों के प्रति अत्यधिक संवेदना है। वे उनकी पीड़ा को अच्छी प्रकार समझती हैं। एक स्थल पर वे कहती भी है–**"युगों से पुरुष स्त्री को उसकी शक्ति के लिए नहीं, सहनशक्ति के लिए ही दण्ड देता आ रहा है।"** महादेवी युग में भी पुरुष प्रधान समाज नारियों पर निरंतर अत्याचार कर रहा था। अपने अंतिम रेखाचित्र लछमा में लेखिका ने नारियों के दुःखों का समाधान खोजते हुए लिखा है–**"जब तब स्त्री स्वभाव से इतनी शक्तिशाली नहीं होती कि मिथ्या पराभव की घोषणा से विचलित न हो, तब तक उसकी स्थिति अनिश्चित ही रहती है।"**

5. मातृत्व का सम्मान–महादेवी का विचार है कि नारी के अनेक रूप हैं। वह बहन, बेटी, माँ और पत्नी भी है और इन सभी रूपों से वह पुरुष समाज से जुड़ी हुई है, लेकिन नारी का माता रूप अत्यधिक सम्मानजनक है। वही पुरुष को जन्म देती है और समाज की सृष्टि करती है लेकिन आश्चर्यजनक बात है कि बर्बर पुरुष समाज झूठे अहंकार के कारण नारी के महत्त्व को नहीं समझता परंतु वह यह भी जानता है कि नारी का मातृ पक्ष अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। लेखिका लिखती भी है–**"स्त्री में माँ का रूप ही सत्य, वात्सल्य ही शिव और ममता ही सुंदर है।"** इस तथ्य से सभी पुरुष परिचित हैं कि नारी की मातृत्व शक्ति समाज की सबसे बड़ी शक्ति है। परन्तु हमारा समाज रूढ़ियों तथा जड़-परम्पराओं का शिकार बना हुआ है। ये रूढ़ियाँ नारी के महत्त्व को निरर्थक सिद्ध करने का प्रयास करती हैं। दुःख की बात तो यह है कि स्वयं नारियाँ अपने महत्त्व को नहीं समझतीं। इस संदर्भ में कन्या भ्रूण हत्या का उदाहरण दिया जा सकता है–पुत्र की चाह में माँ स्वयं गर्भस्थ बेटी की बलि चढ़ा देती है। वह इस सच्चाई को नहीं जानती कि कन्याओं के बिना समाज किस प्रकार आगे बढ़ सकेगा। समाज में ऐसे अनेक उदाहरण मिल जाते हैं कि जहाँ सासें और ननदें मिलकर घर की पुत्रवधुओं पर तरह-तरह के अत्याचार करती हैं। एक स्थल पर समाज के मनोविज्ञान पर प्रकाश डालते हुए लेखिका कहती भी हैं–**"एक पुरुष के प्रति अन्याय की कल्पना से ही सारा पुरुष समाज उस स्त्री से प्रतिशोध लेने के लिए उतारु हो जाता है और एक स्त्री के साथ क्रूरतम अन्याय का प्रमाण पाकर भी सब स्त्रियाँ उसके अकारण दण्ड को भारी बनाए बिना नहीं रहतीं। इस कुव्यवस्था को जानकर भी लेखिका मातृत्व के रूप में नारी का समाज में सम्मान चाहती हैं।"**

6. पुरुष वर्ग के अन्याय के प्रति आक्रोश–लेखिका ने अपने इन रेखाचित्रों में जहाँ समाज की उपेक्षित तथा पीड़ित नारियों के प्रति संवेदना व्यक्त की है, वहाँ दूसरी ओर पुरुष वर्ग के अन्याय तथा अत्याचार के प्रति भी आक्रोश भी व्यक्त किया है। अतीत के चलचित्र के अनेक रेखाचित्रों में लेखिका का यह आक्रोश फूट पड़ा है। सबिया एक कर्त्तव्यनिष्ठ नारी है। उसका पति मैकू बड़ा कामुक और स्वार्थी है। पहली पत्नी सबिया के रहते हुए वह दूसरी पत्नी ले आया और उसने घर का सारा दायित्व सबिया पर डाल दिया। यह सब जानकर लेखिका के मन में पुरुष के प्रति क्रोध उत्पन्न हो गया। वे लिखती भी हैं–**"पुरुष भी विचित्र है। वह अपने छोटे-से-छोटे सुख के लिए स्त्री को बड़े से बड़ा दुख दे डालता है और ऐसी निश्चिन्तता से मानो वह स्त्री को उसका प्राप्य दे रहा है।"** मैकू स्वयं गरीब है। उसकी माँ है, पत्नी सबिया है और दो बच्चे भी हैं। इस पर भी वह अन्य नारी से विवाह कर लेता है। घर का बोझ सार सबिया को उठाना पड़ता है। सौत आने पर भी सबिया के मन न तो आक्रोश है और न बदले की भावना। मैकू जैसे अनपढ़, गँवार और कामुक व्यक्ति के लिए यह समझना कठिन है कि उसकी पत्नी कितनी पतिव्रता है। इसी प्रकार एक वेश्या की पुत्री एक पावन और आदर्श जीवन व्यतीत करना चाहती है परंतु समाज उसे पतिता ही समझता है। हैरानी की बात है कि वेश्या का भोग करने वाला पुरुष पतित नहीं होता, बल्कि वेश्या पतित मानी जाती है। यहाँ तक कि उसकी सन्तान भी हमेशा ही पतित समझी जाती है। लेखिका की दृष्टि में नारी जाति के प्रति यह घोर अन्याय है। इसी प्रकार विधवाओं के प्रति भी पुरुषों का दृष्टिकोण और सोच कोई अच्छी नहीं है। विधवा भाभी पुरुष अत्याचार का एक जीत-जागता उदाहरण है। मारवाड़ी विधवा भाभी को घर की चारदीवारी में बंद होकर रहना पड़ता है। वृद्ध ससुर के कहे अनुसार वह एक समय भोजन करती है। यह ससुर अपनी बेटी के साथ मिलकर उस पर तरह-तरह के अत्याचार करता है। वह बेचारी असहाय

Scanned with ACE Scanner

अथवा

'उसने कहा था' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–उसने कहा था : मूल संवेदना/उद्देश्य– 'चन्द्रधर शर्मा गुलेरी' द्वारा रचित 'उसने कहा था' एक अमर तथा सोद्देश्य कहानी है। गुलेरी जी की यह कहानी प्रेम और कर्तव्य के धरातल पर लिखी गई है। कहानी की मूल संवेदना प्रेम और कर्तव्य के द्वन्द्व को बड़ी सूक्ष्मतापूर्वक उजागर करना है। लेखक के अनुसार भारतीय सभ्यता और संस्कृति के जीवन मूल्य प्रेम और कर्त्तव्य हैं। ये दोनों जीवन मूल्य ही भारतीयता को बनाए रखने में सहायक हैं। गुलेरी जी ने 'उसने कहा था' कहानी के द्वारा भारतीय संस्कृति के मानवीय मूल्यों तथा मर्यादाओं को स्थापित किया है। लेखक ने कहानी के माध्यम से प्रेम पर कर्त्तव्य की विजय का प्रतिपादन किया है। यही इस कहानी का उद्देश्य भी प्रतीत होता है।

कहानी का आरम्भ अमृतसर के एक चौक के दृश्य से होता है। दो सिक्ख बालक-बालिका चौक की एक दुकान पर आकर मिलते हैं। दोनों आपस में बातचीत करने लगते हैं, जिससे पता चलता है कि वे दोनों गर्मियों की छुट्टियों में अपने मामा के यहाँ आए हुए हैं। दुकान से सामान खरीदने के पश्चात् दोनों कुछ दूर तक साथ-साथ चलते हैं। लड़का कुछ शरारती और चंचल प्रवृत्ति का है, इसलिए वह लड़की से पूछता है–**"तेरी कुड़माई हो गई?"** लड़की **'धत्'** कहकर भाग जाती है और लड़का उसे देखता रह जाता है। लगभग महीना भर वे दोनों इसी प्रकार एक-दूसरे से मिलते रहते हैं। हर बार लड़का उससे यही प्रश्न पूछता है और लड़की इसी प्रकार से भाग जाती है। इस प्रकार उनका सवाल-जवाब का सिलसिला चलता रहता है। किन्तु एक दिन जब लड़के ने लड़की से यही सवाल पूछा तो लड़की ने उत्तर दिया–**"हाँ हो गई।, "देखते नहीं, यह रेशम से कढ़ा हुआ सालू।"** इस प्रकार लड़की उसे अपनी कुड़माई हो जाने का प्रमाण देती है और घर की ओर भाग जाती है। लड़का भी अपने घर की राह लेता है।

प्रस्तुत कहानी प्रथम विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि पर लिखी गई है। इस युद्ध में लहना सिंह, सूबेदार हजारा सिंह और उसका पुत्र बोधासिंह इंग्लैण्ड की ओर से जर्मनी के विरुद्ध युद्ध लड़ रहे हैं। लहनासिंह वही लड़का है जिसने अमृतसर के चौक पर लड़की से उसकी कुड़माई होने या न होने का सवाल पूछा था। वह लड़की सूबेदार हजारा सिंह की पत्नी है, जो कि अब सूबेदारनी बन गई है। उसने लड़की की घोड़े के नीचे आने से रक्षा की थी। अब सूबेदारनी लहना सिंह से अपने पति हजारासिंह और बेटे बोधसिंह की रक्षा करने का वचन लेती है क्योंकि वे दोनों लहनासिंह की बटालियन में थे। लहना सिंह अपने प्राण देकर हजारा सिंह और उसके बेटे बोधासिंह की रक्षा की और सूबेदारनी को दिया अपना वचन निभाया।

जब लहनासिंह घायल हो जाता है तो उसकी स्मृति में अतीत की अनेक घटनाएँ उभरने लगती हैं। वह **'पच्चीस वर्ष पहले'** घटित कुड़माई वाली घटना को याद करता है। उसे याद आता है कि पच्चीस वर्ष बाद जब वह सूबेदार हजारा सिंह के घर जाता है और सूबेदारनी उसे पहचान लेती है। यह घटना उसके नेत्रों में एक स्वप्न की तरह तैर रही थी। वह इस घटना

Scanned with ACE Scanner

को इस प्रकार स्मरण करता है–**"सूबेदारनी कह रही है 'मैंने आते ही तेरे को पहचान लिया। एक काम कहती हूँ। मेरे तो भाग फूट गये। सरकार ने बहादुरी का खिताब दिया है, लायलपुर में जमीन दी है, आज नमक हलाली का मौका आया है, पर सरकार ने हम तीमियों (स्त्रियों) की एक घघरा पलटन को न बना दी जो मैं भी सूबेदार जी के साथ चली जाती। एक बेटा है। फौज में भर्ती हुए उसे एक ही बरस हुआ है। उसके पीछे चार और हुए, पर एक भी नहीं जिया.....।' तुम्हें याद है, एक दिन ताँगेवाले का घोड़ा दही वाले की दुकान के आगे बिगड़ गया था। तुमने उस दिन मेरे प्राण बचाए थे। आप घोड़े की लातों में चले गए थे और मुझे उठाकर दुकान के तख्ते पर खड़ा कर दिया था। ऐसे ही इन दोनों को बचाना। यही मेरी भिक्षा है। तुम्हारे आगे मैं आँचल पसारती हूँ।"**

इस प्रकार कहते-कहते सूबेदारनी रोने लगी। लहना सिंह की स्मृति में ये सभी घटनाएँ रह-रहकरकौंध रही थीं। अब लहना सिंह मृत्यु के अत्यन्त निकट था, इसलिए जीवन की सारी घटनाएँ उसकी स्मृति को बेंध रही थीं। लहना सिंह ने अपने प्राणों की बाजी लगाकर सूबेदारनी के पति और पुत्र की रक्षा की और स्वयं वीरगति को प्राप्त हो गया।

उपर्युक्त सार के आधार पर कहानी 'उसने कहा था' का प्रमुख उद्देश्य प्रेम पर कर्त्तव्य की विजय का प्रतिपादन करना ही प्रतीत होता है। लेखक अपने इस उद्देश्य को प्रतिपादित करने में पूर्णतया सफल हुआ है। यह कहानी उद्देश्य की दृष्टि से एक सशक्त कहानी प्रतीत होती है। यद्यपि यह एक यथार्थवादी कहानी है। साथ ही, इसमें अनेक मोड़ और प्रयोग हैं, किन्तु फिर भी इसकी सशक्तता ज्यों-की-त्यों बनी रही। यह कहानी जीवन्त और यथार्थवादी परिवेश पर आधारित है। यह कहानी एक आदर्श बिन्दु से चलती है और यथार्थ की ओर विस्तृत होती रहती है। कहानी के संदर्भ में डॉ. रामदरश मिश्र ने अपने विचार इस प्रकार स्पष्ट किए हैं–**"बालक लहनासिंह के भीतर बच्ची सरदारनी के प्रति जो स्नेह का बीज पड़ जाता है उसे समय की लम्बी दूरी भी सुखा नहीं पाती। वह बीज लहनासिंह के अवचेतन में उससे अनजाने ही पड़ा हुआ है। वह सरदारनी के जागने पर एकाएक जाग पड़ता है और लहनासिंह को प्रतीत होता है कि वह बीज उसके अनजाने ही उसके भीतर बढ़कर बरगद बन गया है, तभी तो वह सूबेदारनी के पति और पुत्र की रक्षा के लिए अपने कुर्बानी देता है। प्रेम इतनी बड़ी कुर्बानी देता है लेकिन ऐसा नहीं लगता कि किसी आदर्श के निर्वाह के लिए ऐसा किया जा रहा है। लगता यह है कि यह कुर्बानी भी कहीं लहना सिंह के व्यक्तित्व का ही मूलभूत अंग है जो उसके बचपन में दिखाई पड़ता है।"** वास्तव में लहनासिंह ने अपने बचपन के प्यार को दिए हुए वचन को निभाने के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। इस प्रकार कर्त्तव्य और वचन के लिए प्रेम का बलिदान करके एक उच्च आदर्श की स्थापना की गई है। यही लेखक का मुख्य उद्देश्य है।

इस उद्देश्य की पूर्ति के साथ-साथ लेखक का एक अन्य उद्देश्य अमृतसर की गलियों, बाजारों तथा सड़कों के चित्रण, युद्ध स्थल की भयावहता और विपरीत परिस्थितियों का मानव-जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसका प्रदर्शन करना भी रहा है। लेखक ने इंग्लैण्ड के लिए जर्मनी के विरोध में लड़ रहे भारतीय सैनिकों की दुर्दशा का भी चित्रण किया है। बिना किसी उद्देश्य के लड़े जा रहे इस युद्ध में न जाने कितने ही भारतीय सैनिकों को जान से हाथ धोना पड़ता है। युद्ध के माध्यम से लेखक प्रतिपादित करना चाहता है कि युद्ध से किसी समस्या का समाधान नहीं हो सकता। अपितु युद्ध मानव-जीवन के लिए अत्यन्त क्षतिपूर्ण ही होते हैं। युद्ध किसी भी दृष्टि से उचित नहीं कहे जा सकते। साथ ही, युद्ध में सैनिकों को भी अनेक विपदाओं का सामना करना पड़ता है। निम्नलिखित पंक्तियों से भारतीय सैनिकों की दुर्दशा को आँका जा सकता है–**"राम-राम यह भी कोई लड़ाई है। दिन-रात खंदकों में बैठे हड्डियाँ अकड़ गईं। लुधियाना से दस गुना जाड़ा और मेंह और बर्फ ऊपर से पिंडलियों तक कीचड़ में धँसे हुए हैं। गनीम कहीं दिखता नहीं, घंटे दो घंटे में कान के परदे फाड़ने वाले धमाके साथ खंदक हिल जाती है और सौ-सौ गज धरती उछल पड़ती है। इस गोली-बारी से बचें तो कोई लड़े।"** इस प्रकार लेखक का यह विचार है कि युद्ध आम जनता और सैनिक दोनों के लिए जानलेवा है।

इस प्रकार **'उसने कहा था'** कहानी का मुख्य उद्देश्य लहना सिंह के चरित्र के माध्यम से प्रेम पर कर्त्तव्य की जीत का प्रतिपादन करना है। लहना सिंह के बचपन का प्रेम कर्त्तव्यनिष्ठ हो जाता है और त्याग तथा बलिदान की सीमाओं को स्पर्श करने लगता है। इस प्रकार प्रेम पर कर्त्तव्य की जीत दिखाकर एक महान् आदर्श की स्थापना करना इस कहानी का प्रमुख ... है।

Scanned with ACE Scanner

अथवा

कहानी के तत्त्वों के आधार पर 'उसने कहा था' कहानी का विवेचन कीजिए।

अथवा

'उसने कहा था' कहानी के आधार पर चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' की कहानी कला पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–उसने कहा था कहानी का शिल्प–चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' हिन्दी कहानी साहित्य के प्रथम सफल कहानीकार कहे जा सकते हैं। गुलेरी जी ने कुल तीन कहानियाँ ही लिखी हैं। ये हैं–सुखमय जीवन (सन् 1911), बुद्धु का काँटा (सन् 1915) तथा उसने कहा था (सन् 1915)। 'उसने कहा था' कहानी के कारण ही गुलेरी जी हिन्दी कहानी साहित्य में रातों-रात ख्याति पा गए। यह कहानी हिन्दी कहानी साहित्य की एक उल्लेखनीय कहानी मानी जाती है। आलोचकों ने कहानी के शिल्प संबंधी छः तत्त्व स्वीकार किए हैं। उसने कहा था कहानी का शिल्प–

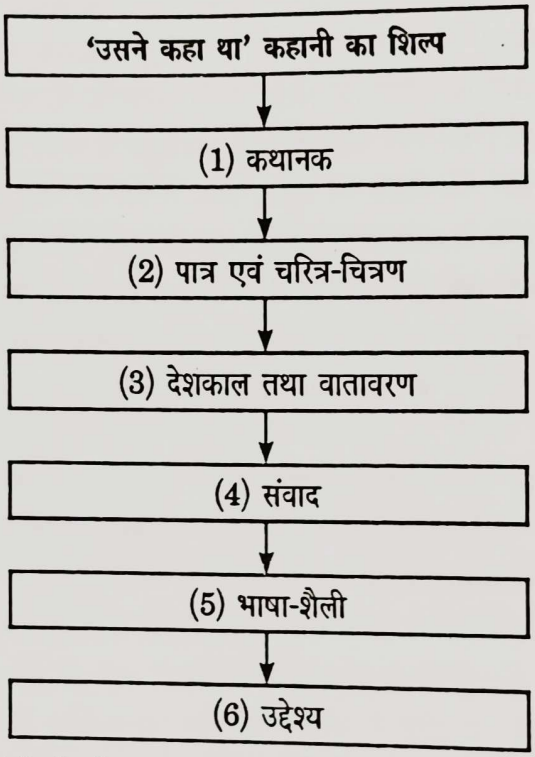

1. कथानक(कथावस्तु)–कथानक किसी भी कहानी का आधार-स्तम्भ माना गया है। 'उसने कहा था' कहानी का कथानक संक्षिप्त, सुगठित और रोचक है। यद्यपि 'गुलेरी'जी द्वारा लिखित तीनों कहानियों के कथानक सुगठित और सशक्त कहे जा सकते हैं, लेकिन **'उसने कहा था'** कहानी का कथानक पूर्णतया सुगठित और रोचक बन पड़ा है। इस कथानक में यथार्थ और आदर्श का सफलतापूर्वक समन्वय किया गया है। यही कारण है कि 'उसने कहा था' कहानी एक अमर रचना है।

कहानी के आरम्भ में पंजाब के एक प्रसिद्ध नगर अमृतसर के एक चौक का दृश्य प्रस्तुत किया जाता है, जहाँ बारह वर्ष का एक लड़का दही खरीदने आया है। लहनासिंह नाम के इस लड़के ने एक लड़की को ताँगे के नीचे आते-आते बचाया है। लड़के और लड़की की मुलाकात होती है और वह उससे पूछता है कि क्या उसकी कुड़माई हो गई है। एक-दो मुलाकातों के बाद लड़की बता देती है कि उसकी कुड़माई (मंगनी) हो चुकी है। लहनासिंह को यह उत्तर पसंद नहीं आता, क्योंकि वह मन-ही-मन उससे प्रेम करने लगता है। बड़ा होकर लहनासिंह अंग्रेजी सेना में भर्ती हो गया। अंग्रेजी सेना का जर्मनी के विरुद्ध युद्ध हुआ। इस युद्ध में लहनासिंह बीमार बोधासिंह की देखभाल करता है। वह उसे बचाने के लिए स्वयं कष्टों को सहन करता है। एक जर्मन जासूस लपटन साहब की वर्दी पहनकर उनको धोखा देने का प्रयास करता है। परन्तु लहनासिंह को उस पर शक हो जाता

Scanned with ACE Scanner

है क्योंकि उसने लहनासिंह को सिगरेट पीने के लिए दी थी। जब जर्मन जासूस खंदक के बाहर विस्फोटक गोले में आग लगाने जा रहा था, तब वह उस पर वार कर देता है। भले ही लहनासिंह की टाँग में गोली लगती है, लेकिन वह जर्मन जासूस को मौत की नींद सुला देता है। इसी बीच जर्मन सैनिक उन पर हमला कर देते हैं। इस युद्ध में लहनासिंह स्वयं घायल होने के बावजूद बीमार बोधासिंह को सैनिक अस्पताल की गाड़ी में भेज देता है। घायल होने के कारण उसकी मृत्यु नजदीक आ जाती है। वह यह सब इसलिए करता है कि सूबेदार हजारासिंह की पत्नी उससे आँचल फैलाकर भीख माँगती है कि वह उसके इकलौते बेटे और पति की रक्षा करने का वचन दे। यह सूबेदारनी वही लड़की थी जिसकी बचपन में उसने ताँगे के नीचे आने से रक्षा की थी और जिससे वह मन-ही-मन प्रेम करने लगा था।

इस प्रकार हम देखते हैं कि इस कहानी का कथानक संक्षिप्त होने के साथ-साथ सजीव, संवेदनशील तथा यथार्थवादी बन पड़ा है। यह कथानक आदि से अन्त तक रोचक होने के साथ-साथ सम्भाव्य भी है। इसमें केवल उन्हीं घटनाओं को समाहित किया गया है, जो नितान्त आवश्यक हैं। कहानी का आरम्भ आकर्षक तथा विकास स्वाभाविक और कौतूहलवर्धक है। इसका अन्त जिज्ञासा का शमन करता है।

2. पात्र एवं चरित्र-चित्रण–चरित्र-चित्रण कहानी का दूसरा महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। एक सफल कहानी में पात्रों की संख्या बहुत कम होनी चाहिए। यदि कहानी में पात्रों की भीड़ लगा दी जाएगी, तो पाठक कहानी को समझ ही नहीं पाएगा। आधुनिक कहानी साहित्य में ही नहीं, अपितु पुरानी कहानियों में भी पात्रों के चरित्र-चित्रण को विशेष महत्त्व दिया जाता था। प्रस्तुत कहानी में पात्रों की संख्या बहुत कम है। इसके प्रमुख पात्र हैं–लहना सिंह, हजारासिंह और उसका बेटा बोधासिंह, सूबेदारनी तथा जर्मन जासूस लपटन साहब। कहानी के आरम्भिक भाग में सूबेदारनी और लहनासिंह के बचपन का उल्लेख किया गया है। बालक लहनासिंह अपने मामा के केशों के लिए दही लेने बाजार आया था और सूबेदारनी भी अपने मामा के घर में आई हुई थी। दोनों का मिलन बाजार में ही हुआ और दोनों के मन में एक-दूसरे के लिए प्रेम के अंकुर फूटने लगे। लहनासिंह आरम्भ में एक चंचल प्रवृत्ति का बालक चित्रित किया गया है। वह आदर्श प्रेमी होने के साथ-साथ विनम्र और शिष्ट व्यक्ति भी है। वह एक वीर एवं उत्साही सैनिक भी है और अपनी वीरता का परिचय युद्धभूमि में देता है। लगातार चार दिनों तक ठण्डी खंदकों में रहने के बावजूद भी उसके चेहरे पर शिकन तक नहीं पड़ती। उसकी वीरता के बारे में लेखक लिखता भी है–**"अकाली सिक्खाँ दी फौज आई। वाहेगुरु जी की फतह। वाहेगुरु जी का खालसा सत् श्री अकाल पुरुष!! और लड़ाई खत्म हो गई। तिरसठ जर्मन या तो खेत रहे थे या कराह रहे थे। सिक्खों में पंद्रह के प्राण गए। लहनासिंह की पसली में गोली लगी। उसने घाव को खंदक की गीली मिट्टी से पूर लिया और बाकी को साफा कसकर कमरबंद की तरह लपेट लिया। किसी को खबर न हुई कि लहना को भारी घाव लगा है।"** इसके साथ-साथ लहनासिंह एक बुद्धिमान, विवेकशील, भावुक और संवेदनशील व्यक्ति भी है। अन्य पात्रों में, सूबेदार हजारा सिंह और उसके पुत्र बोधासिंह का नाम लिया जा सकता है। भले ही ये बाप-बेटा दोनों ही वीर पुरुष हैं, लेकिन लहनासिंह के समक्ष ये कमजोर ही दिखाई देते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि गुलेरी जी ने पात्रों का चरित्र-चित्रण करते समय उनकी मानसिक स्थिति पर भी समुचित प्रकाश डाला है। विशेषकर,

संवादों के द्वारा लेखक ने पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं का उद्घाटन किया है। अमृतसर के बाजार के एक चौक पर लहनासिंह और बालिका सूबेदारनी के वार्तालाप का एक उदाहरण देखिए–

'तेरा घर कहाँ है?'
'मगरे में–और तेरे?'
'माँझे में; यहाँ कहाँ रहती है।'
'अंतर सिंह की बैठक में, वह मेरे मामा होते हैं?'
'मैं भी मामा के आया हूँ, उनका घर गुरु बाजार में है।'

3. देशकाल तथा वातावरण–जहाँ तक देशकाल और वातावरण का प्रश्न है, इस संदर्भ में 'गुलेरी' जी ने हमेशा यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाया है। वे परिवेश को लेकर हमेशा जागरूक तथा सतर्क नजर आते हैं। प्रस्तुत कहानी 'उसने कहा था' में कहानी का देशकाल समय की दृष्टि से काफी दीर्घ है। कई बार तो पाठक इसी परिवेश में फँसकर चक्कर काटने लगता है। अमृतसर के बाजारों और सड़कों का चित्रण करने में लेखक पूर्णतया यथार्थवादी रहा है। बाजार का यह वातावरण यथार्थवादी होने के साथ-साथ बड़ा ही सजीव बन पड़ा है। एक उदाहरण देखिए–**"जब बड़े-बड़े शहरों की चौड़ी सड़कों पर घोड़े की पीठ पर चाबुक**

Scanned with ACE Scanner

से घुनते हुए इक्के वाले कभी घोड़े की नानी से अपना निकट यौन सम्बन्ध करते हैं, कभी राह चलते पैदलों की आँखें न होने पर तरस खाते हैं, कभी उनके पैर की अंगुलियों के पोरों को चीथकर अपने ही को सताया हुआ बताते हैं और संसार भर की ग्लानि, निराशा और क्षोभ के अवतार बने नाक की सीध चले जाते हैं, तब अमृतसर में उनकी बिरादरी वाले, तंग चक्करदार गलियों में हर एक लड्ढी वाले के लिए ठहरकर, सब्र का समुद्र उमड़ाकर 'बचो खालसा जी!' 'हटो भाई जी।!' 'ठहरना माई!' 'आने दो लाल जी!'–'हटो बा' छा! कहते हुए सफेद केंरों, खच्चरों और बत्तखों, गन्ने और खोमचे और भारे वालों के जंगल में से राह खेते हैं।"

इसी प्रकार से लेखक ने युद्ध-स्थल का जो चित्रण किया है वह तो बड़ा ही यथार्थ बन पड़ा है। युद्ध के समय सैनिकों के द्वारा गाए गए अश्लील गाने, फिरंगी मेमों की बातें, फूहड़ मजाक आदि सभी कुछ यथार्थ पर आधारित है। वस्तुतः देशकाल का चित्रण करते समय कहानीकार ने यथार्थवादी प्रवृत्ति अपनाई है।

4. संवाद (कथोपकथन)–'संवाद' कहानी का एक अन्य महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। संवाद न केवल कथानक को गति प्रदान करते हैं, बल्कि पात्रों के चरित्र का निर्माण करने में भी सहायक होते हैं। अतः कहानी में संवाद-योजना का विशेष महत्त्व स्वीकार किया जाता है। गुलेरी जी की कहानी-कला की प्रमुख विशेषता यह है कि वे स्वयं पात्रों के मध्य उपस्थित होकर कुछ नहीं कहते, बल्कि पात्रों के माध्यम से अपनी बात कहलाते हैं। प्रस्तुत कहानी 'उसने कहा था' के संवाद भावाभिव्यक्ति करने में काफी सफल रहे हैं। इस कहानी के संवाद बड़े ही सरल, संक्षिप्त, सहज, जिज्ञासावर्धक तथा पात्रों के मानसिक अन्तर्द्वन्द्व का उद्घाटन करने में सफल रहे हैं। पुनः ये संवाद पात्रानुकूल तथा प्रसंगानुकूल भी हैं।

बजीरासिंह पलटन का विदूषक था। बाल्टी में गँदला पानी भरकर खाई के बाहर फेंकता हुआ बोला–'मैं पाथा बन गया हूँ। करो जर्मनी के बादशाह का तर्पण।" इस पर सब खिलखिला पड़े और उदासी के बादल फट गये।'

लहनासिंह ने दूसरी बाल्टी भरकर उसके हाथ में देकर कहा–'अपनी बाड़ी के खरबूजों में पानी दो। ऐसा खाद का पानी पंजाब भर में नहीं मिलेगा।'

'हाँ देश क्या है, स्वर्ग है, मैं तो लड़ाई के बाद सरकार से दस घुमाव जमीन यहाँ मागूँगा और फलों के बूटे लगाऊँगा।'

'लाड़ी होराँ को भी यहाँ बुला लोगे। या वही दूध पिलाने वाली फिरंगी मेम–'

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रस्तुत कहानी 'उसने कहा था' के संवाद न केवल संक्षिप्त, रोचक और चुटीले हैं, बल्कि पात्रानुकूल और प्रसंगानुकूल भी हैं। कहानीकार ने संवादों का प्रयोग करते समय पात्रों की मनोवैज्ञानिकता को बनाए रखा है, जिसके फलस्वरूप ये संवाद पात्रों की मानसिकता तथा उनके अन्तर्द्वन्द्व का उद्घाटन करने में पूर्णतया समर्थ हैं।

5. भाषा-शैली–भाषा-शैली का सम्बन्ध कहानी के अभिव्यक्ति पक्ष से होता है। कहानी में यह तत्त्व लेखक के व्यक्तित्व के रूप में समाविष्ट होता है। वस्तुतः लेखक का व्यक्तित्व ही भाषा के माध्यम से प्रकट होता है। प्रत्येक कहानीकार की भाव-प्रकाशन की शैली में भिन्नता पाई जाती है। यही शैली तत्त्व का मुख्य लक्षण है। 'गुलेरी' जी की कहानी 'उसने कहा था' की श्रेष्ठता एवं उच्चता इसकी शैली पर आश्रित है। 'गुलेरी' जी की भाषा-शैली विषय के अनुकूल है। इनकी भाषा-शैली सबसे श्रेष्ठ है। गुलेरी जी की भाषा-शैली में उपलब्ध प्रमुख गुण हैं–कथा की क्रमबद्धता, वर्णन की सजीवता, उत्कृष्ट चित्रण तथा उचित एवं उपयुक्त भाषा। कहानी के कथानक में तीव्रता है। इस तीव्रता के कारण कहानी का असंतुलन ढक जाता है। कहानी का आरम्भ अत्यन्त रोचकता और जिज्ञासा से पूर्ण है। साथ ही, अन्त भी अत्यन्त कौतूहलपूर्ण और जिज्ञासा का शमन करने वाला है। कहानी के अन्त में, पाठक का मन दुःख से भर जाता है। पूर्वदीप्ति शैली के प्रयोग ने कहानी का और भी अधिक श्रेष्ठता प्रदान की है। कहानी में कहानीकार ने घटनाओं को इस प्रकार नियोजित किया है कि अतिरेक के प्रभाव से उत्पन्न होने वाले अविश्वसनीय तथा संयोग तत्त्व छिप जाते हैं। कहानी में मनोविश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग किया गया है, जिससे पात्रों के चित्रण में सजीवता का समावेश हुआ है। 'गुलेरी' जी द्वारा प्रयुक्त प्रसंगानुकूल भाषा का प्रयोग कहानी को अमरता और श्रेष्ठता प्रदान करता है। कहानी के आरम्भ में अमृतसर के एक बाजार का दृश्य प्रस्तुत किया गया है। वहाँ रहने वाले स्थानीय लोगों के बात करने का ढंग कहानी में रोमांच पैदा कर देता है। इक्के वालों की आवाजों को दर्शाया गया है जो कहानी के वातावरण को रूमानी बनाता है। इस प्रकार भाषा में लेखक ने एक प्रकार का 'लोकल टच' दिया है।

"लड़ाई के समय चाँद निकल आया था। ऐसा चाँद, जिसके प्रकाश से संस्कृत-कवियों का दिया हुआ 'क्षयी' नाम सार्थक होता है और हवा ऐसी चल रही थी जैसी कि बाणभट्ट की भाषा में 'दंतवीणोपदेशाचार्य' कहलाती। बजीरासिंह कह रहा था कि कैसे मन-मन भर फ्रांस की भूमि मेरे बूटों से चिपक रही थी, जब मैं दौड़ा-दौड़ा सूबेदार के पीछे गया था।

Scanned with ACE Scanner

सूबेदार लहनासिंह से सारा हाल सुन और कागजात पाकर उसकी तुरन्त बुद्धि को सराह रहे थे और कह रहे थे कि तू न होता तो आप सब मर जाते।"

6. उद्देश्य–'उद्देश्य' कहानी का अंतिम महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। कहानी जहाँ एक ओर मनोरंजन द्वारा मानव-हृदय की उदात्त भावानुभूतियों को जागृत करती है, वहाँ दूसरी ओर कोई सामाजिक अथवा राजनीतिक संदेश भी देती है। भारतीय विद्वानों के विचारानुसार कहानी का उद्देश्य पाठकों को रसमग्न करना है। परन्तु पाश्चात्य दृष्टिकोण इससे अलग है। वहाँ समष्टि के अहम् को व्यष्टि के अहम् में लीन कर देना ही कहानी का उद्देश्य माना गया है। किन्तु आज की कहानी भारतीय और पाश्चात्य दोनों दृष्टिकोणों को समन्वित करके लिखी जा रही है। अन्य शब्दों में, हम यह भी कह सकते हैं कि कहानी का उद्देश्य किसी महान् सत्य का उद्घाटन करना होता है।

चन्द्रधर शर्मा एक सोद्देश्य कहानीकार हैं। उन्होंने भले ही, केवल तीन कहानियाँ लिखी हैं, लेकिन तीनों ही उदात्त और महान् उद्देश्य की पुष्टि करती हैं। 'उसने कहा था' कहानी में आदर्श और यथार्थ का समन्वय होने के कारण मानव-मन की उदात्त भावनाओं का वर्णन किया गया है। प्रस्तुत कहानी प्रसाद की 'आकाशदीप' के समान अपने कर्त्तव्य पर प्रेम को बलिदान करने की भावना का वर्णन करती है। भारतीय संस्कृति में इस प्रकार की भावना सर्वत्र देखी जा सकती है। एक सच्चे साहित्यकार होने के कारण गुलेरी जी मानवीय मूल्यों तथा मर्यादाओं की स्थापना करने में पूर्णतया सफल रहे हैं। भारतीय मनीषियों का यह विचार है कि सच्चा-प्रेम शारीरिक नहीं होता, बल्कि उदात्त होता है। 'उसने कहा था' कहानी का प्रमुख पात्र लहनासिंह अपने बचपन के प्रेम को कर्त्तव्य से जोड़ता है और अन्त में, अपने त्याग और बलिदान द्वारा इस उदात्त प्रेम को अमर बना देता है। 'उसने कहा था' कहानी में सूबेदारनी के द्वारा कहे गए वचनों का पालन करते हुए लहनासिंह अपने प्रेम को मंगलकारी रूप प्रदान करता है। यही कारण है कि कहानी का शीर्षक पाठक में एक अपूर्व कौतूहल उत्पन्न करता है। इस संदर्भ में डॉ. रघुवर दयाल वार्ष्णेय ने उचित ही लिखा है–**"शीर्षक में निहित व्यंजना ने इस कहानी को और भी सार्थक बना दिया है। 'उसने कहा था' का रेपीटेशन–शीर्षक का महत्त्व, इस कथन के महत्त्व और कहानी में उसकी आवश्यकता को स्पष्ट कर देता है और कहानी इसी के साथ विशेष मोड़ लेती है जिससे उनमें एक विशेष प्रभावान्विति का गठन हो जाता है और शीर्षक की जिज्ञासा पाठक को और अधिक उद्विग्न करती चलती है।"**

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि भले ही गुलेरी जी ने केवल तीन कहानियों की रचना की है, लेकिन अपनी कहानी 'उसने कहा था' के कारण वे हिन्दी कहानी जगत् में पूर्णतया अमर हो गए हैं। जब भी कभी हिन्दी कहानी साहित्य के इतिहास की चर्चा की जाती है तो उसके आरम्भ में 'उसने कहा था' कहानी की ओर अवश्य संकेत किया जाता है। कथावस्तु, पात्रों का चरित्र-चित्रण, संवाद, भाषा-शैली, देशकाल तथा वातावरण और उद्देश्य की दृष्टि से यह एक सफल कहानी कही जा सकती है।

◆◆◆

लहना सिंह का चरित्र-चित्रण

लहना सिंह का चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा

'उसने कहा था' कहानी के आधार पर लहनासिंह की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए।

उत्तर–लहना सिंह का चरित्र-चित्रण–श्री चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की कहानी 'उसने कहा था' एक चरित्र-प्रधान कहानी है। लहनासिंह इस कहानी का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पात्र है। उसे हम कहानी का केन्द्रीय पात्र भी कह सकते हैं। लहनासिंह के बारे में जो अन्य पात्रों ने प्रतिक्रियाएँ व्यक्त की हैं, उनसे उस का चरित्र उद्घाटित हो जाता है। सूबेदारनी का उस पर अटूट विश्वास है और हजारासिंह उसे अत्यधिक प्रेम करता है। बोधासिंह उसके त्याग से प्रभावित है तथा वजीरासिंह उसकी वीरता और उत्साह का कायल है। अन्य सभी पात्र लहना सिंह के समक्ष गौण नजर आते हैं। ऐसा लगता है मानों अन्य सभी पात्रों की योजना उसके चरित्र का विकास करने के लिए की गई है। यही कारण है कि लहनासिंह कहानी के प्रारम्भ से लेकर अंत तक गतिशील दिखायी देता है। कहानी का ताना-बाना उसी के चरित्र के लिए बुना गया है। लहना सिंह का चरित्र अपने आदर्शों से पाठकों को भी अत्यधिक प्रभावित करता है। कहानी का उद्देश्य भी लहनासिंह के माध्यम से व्यक्त किया गया है। उसके चरित्र की विशेषताएँ इस प्रकार से हैं–

Scanned with ACE Scanner

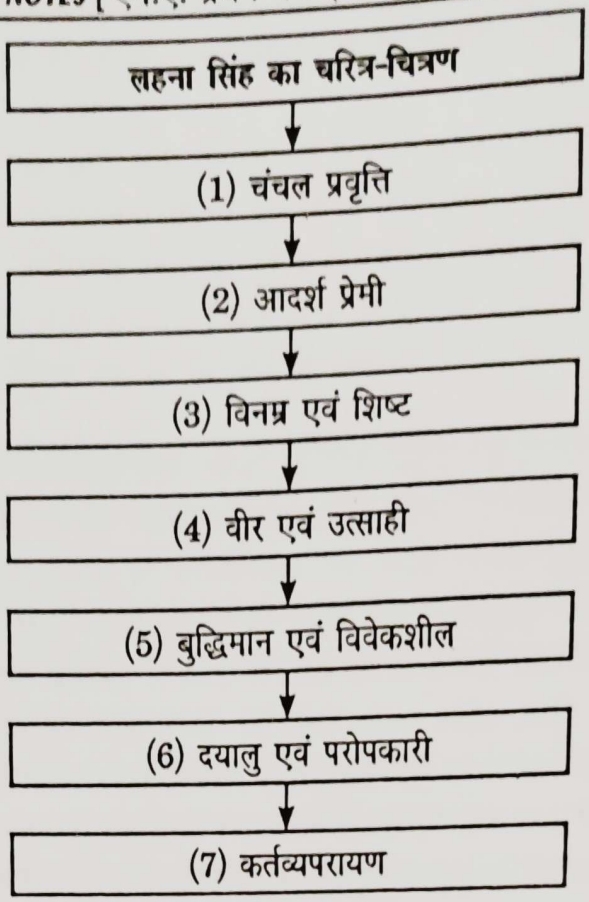

लहना सिंह का चरित्र-चित्रण

↓

(1) चंचल प्रवृत्ति

↓

(2) आदर्श प्रेमी

↓

(3) विनम्र एवं शिष्ट

↓

(4) वीर एवं उत्साही

↓

(5) बुद्धिमान एवं विवेकशील

↓

(6) दयालु एवं परोपकारी

↓

(7) कर्तव्यपरायण

1. चंचल प्रवृत्ति–'उसने कहा था' कहानी में लहनासिंह बारह वर्ष के एक बालक के रूप में प्रवेश करता है। वह अपने मामा के यहाँ अमृतसर में रहने आया है। अपनी चंचल और बहिर्मुखी प्रवृत्ति के कारण उसके व्यवहार में तनिक भी संकोच और झिझकता नज़र नहीं आती। अपने इसी गुण के कारण वह बहुत कम समय में आठ वर्षीय लड़की की ओर आकृष्ट हो जाता है और उससे शीघ्र मेलजोल बढ़ा लेता है। यही नहीं, वह उससे उसकी कुड़माई के बारे में पूछता है तो वह लड़की उसे उत्तर देती हुई कहती है, **"देखते नहीं यह रेशम से कढ़ा हुआ सालू"** उसके उत्तर को सुनकर लहना सिंह मन-ही-मन क्षुब्ध हो जाता है। यह देखकर लड़की अपने घर चली जाती है। अपने अनुकूल उत्तर न पाने के कारण उसने घर जाते समय एक लड़के को मोरी में धकेल दिया एक छाबड़े वाले की दिन भर की कमाई खोई, एक कुत्ते को पत्थर मारा और एक गोभी वाले के ठेले में दूध उड़ेल दिया, यही नहीं, सामने से आती हुई एक वैष्णवी से टकराकर अन्धे को उपाधि पाई। इतना कुछ करने के बाद वह घर पहुँचा। इन सब बातों से यही पता चलता है कि लहना सिंह चंचल और बहिर्मुखी प्रवृत्ति का एक व्यक्ति है।

2. आदर्श प्रेमी–एक चंचल व्यक्तित्व का व्यक्ति होने के बावजूद लहना सिंह एक आदर्श प्रेमी है। वह सीधा-सादा सरल हृदय का व्यक्ति है। वह बचपन में आठ वर्षीय एक बालिका से प्यार करने लगता है। परन्तु उस लड़की की कुड़माई हो चुकी होती है। एक लम्बे काल के पश्चात् वह उसे सूबेदारनी के रूप में मिलती है। लहनासिंह उसके पति हजारासिंह और बेटे बोधासिंह की पलटन में एक फौजी है। जब प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् लहनासिंह हजारा सिंह के यहाँ छुट्टियाँ व्यतीत करने आता है तो वह उसी लड़की को वहाँ देखता है जिससे उसने अपने बालपन में कभी प्यार किया था। वह हजारा सिंह की पत्नी थी। जब वह सूबेदारनी लहनासिंह से मिलती है तो वह उसे युद्धभूमि में अपने पति और बेटे की रक्षा करने के लिए कहती है। लहनासिंह उसके पति और बेटे की अपने प्राणों की बाजी लगाकर रक्षा करता है, क्योंकि उसका प्रेम बड़ा ही आदर्श था जिसमें वासना की दुर्गन्ध नहीं है। अपने प्राणों का त्याग करके लहनासिंह ने साबित कर दिया कि उसका सच्चा आदर्श प्रेमी है।

3. विनम्र एवं शिष्ट–लहनासिंह के व्यक्तित्व में विनम्रता और शिष्टता कूट-कूट कर भरी है। उसमें अब बचपन-सी चंचलता नहीं है। वह अपने सूबेदार की पत्नी से जिसे उसने कभी प्यार किया था, जब लम्बे अरसे बाद मिलता है तो उसे **'माथा टेकना'** कहता है। यही नहीं, जब वह घायल बोधासिंह को सुरक्षित स्थान पर ले जाने के लिए एम्बूलैंस में बिठाता है तो सूबेदार से कहता है, **"सुनिए तो, सूबेदारनी होरां को चिट्ठी लिखो तो मेरा मत्था टेकना लिख देना और घर जाओ तो कह देना कि मुझसे उसने कहा था, वह मैंने कर दिया।"** यही नहीं, शिष्टता उसके व्यक्तित्व का प्रमुख गुण है। वह नकली लपटन साहब से बड़े ही विनम्रता और सम्मानपूर्वक वार्तालाप करता है परन्तु जैसे ही उसे उसकी हकीकत का पता चलता है वह उसे जीवित नहीं छोड़ता। वह हमेशा अपने से छोटों से प्यार और बड़ों का सम्मान व सत्कार करता है। इस प्रकार कहानी में ऐसे अनेक स्थल हैं जिनसे स्पष्ट हो जाता है कि लहनासिंह में शिष्टता और विनम्रता कूट-कूट कर भरी हुई है। उसके इसी गुण के कारण सभी उससे अत्यन्त प्यार करते हैं।

4. वीर एवं उत्साही–लहनासिंह हजारासिंह सूबेदार की पलटन का एक फौजी था। प्रथम विश्वयुद्ध में वे अंग्रेजों की ओर से जर्मनी के विरुद्ध लड़ रहे थे। लहनासिंह एक वीर सैनिक है जो अपनी वीरता का परिचय युद्धभूमि में देता है। वह लगातार चार दिनों तक ठण्डी खंदकों में रहने के बावजूद भी उसके चेहरे पर शिकन का कोई नामोनिशान नज़र नहीं आता। वह वीर होने के साथ-साथ अपने वचन का भी पक्का है। वह बोधासिंह को बचाने के लिए अत्यधिक ठण्ड में भी अपना कम्बल देकर खंदक के बाहर पहरा देता है और जर्मनी सैनिकों से बड़ी वीरता के साथ मुकाबला करता है। घायल होने के बाद भी वह लड़ना नहीं छोड़ता और अपनी संगीन से जर्मन सैनिकों को घायल कर देता है। इस प्रकार युद्ध-क्षेत्र में उसके अदम्य साहस को देखकर उसकी वीरता और साहस का पता चलता है। वास्तव में लहनासिंह की वीरता प्रशंसनीय है। लेखक भी उसकी वीरता के बारे में लिखता है–**"अकाली सिक्खाँ दी फौज आयी। वाहे गुरु जी की फतेह! वाहे गुरु जी का खालसा! सत्श्री अकाल पुरुष!! और लड़ाई खत्म हो गई। तिरसठ जर्मन या तो खेत रहे थे या कराह रहे थे। सिक्खों में पंद्रह के प्राण गए। लहनासिंह की पसली में गोली लगी। उसने घाव को खंदक की गीली मिट्टी से पूर लिया और बाकी को साफा कसकर कमरबंद की तरह लपेट लिया। किसी को खबर न हुई कि लहना को भारी घाव लगा है।"**

5. बुद्धिमान एवं विवेकशील–लहनासिंह सीधा-सादा सरल स्वभाव का व्यक्ति था। वह एक वीर जट सिक्ख सिपाही था जो कि वक्त आने पर अपनी सूझ-बूझ से कार्य करता था। भले ही ऊपर से वह साधारण दिखता है लेकिन आन्तरिक रूप से वह एक बुद्धिमान और होशियार व्यक्ति था। जब उसे नकली लपटन साहब के बारे में पता चलता है कि वह वेश बदलकर खंदक में घुस आया है तो वह एक क्षण खराब किए बिना सूबेदार सहित सभी सैनिकों को सुरक्षित खंदक से बाहर निकाल देता है और अपने प्रश्नोत्तर द्वारा लपटन के नकली होने की जाँच कर लेता है कि यह भारतीय नहीं हैं। वह युद्ध-क्षेत्र में अपने विवेक और धैर्य को नहीं छोड़ता। उसमें एक आदर्श सैनिक के सभी गुण विद्यमान है। युद्ध-क्षेत्र में वह अपने कार्य में कभी लापरवाही नहीं बरतता। वह काम करने से पूर्व ही उसके परिणाम को जाँच लेता है। वह एक अच्छा निर्णायक है। जो समय और परिस्थिति की चाल को जल्दी समझ लेता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भले ही लहनासिंह ऊपर से एक साधारण व्यक्ति दिखता है लेकिन वास्तव में वह एक बुद्धिमान और होशियार सिपाही है जो अपने कर्त्तव्य के प्रति सदैव सतर्क रहता है।

6. दयालु एवं परोपकारी–लहनासिंह कोमल, भावुक और संवेदनशील तो है ही उसके दिल में दया और परोपकारिता की भावना भी कूट-कूट कर भरी है। वह दयालु और परोपकारी है। जब युद्ध-क्षेत्र में बोधासिंह घायल हो जाता है और वह अत्यधिक ठण्ड में खंदक के बाहर पहरा देता है तो उस समय ठण्ड की परवाह किए बिना वह बोधा सिंह को बचाने के लिए उसे अपना कम्बल भी उतारकर दे देता है और बिना कम्बल खंदक के बाहर पहरा देता है। लेखक लिखता भी है–

"क्यों बोधा भाई क्या है।"

"पानी पिला दो।"

लहनासिंह ने कटोरा उसके मुँह से लगाकर पूछा–कहो कैसे हो?

पानी पीकर बोधा सिंह बोला–कँपनी (कँपकपी) छूट रही है।

रोम-रोम में तार दौड़ रहे हैं। दाँत बज रहे हैं।

"अच्छा जरसी पहन लो।"

"और तुम।"

"मेरे पास सिगड़ी है और मुझे गर्मी लगती है, पसीना आ रहा है।"

इस प्रकार उसने बोधा सिंह को अपनी जरसी पहना दी। इस प्रकार उपर्युक्त कथन से लहनासिंह की दयालुता और परोपकारिता का परिचय मिलता है जो कड़ाके की ठण्ड में भी अपनी परवाह किए बिना दूसरों को बचाने की सोचता है। वह वास्तविकता में एक दयालु और परोपकारी इंसान है।

7. कर्तव्यपरायण–लहनासिंह एक कर्त्तव्यपरायण व्यक्ति है। वह अपने कर्त्तव्य को पूरा करने के लिए अपने प्राणों तक का बलिदान देने में पीछे नहीं हटता। वह युद्ध-भूमि में सर्वदा अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करता है। वह कभी अपने कर्त्तव्य में लापरवाही नहीं बरतता। युद्ध-भूमि में वह सब के साथ मित्रतापूर्वक व्यवहार करना अपना कर्त्तव्य समझता है और इसी कारण वह सभी सैनिकों के साथ हमेशा हास्य विनोद करता रहता है। ताकि उनका मनोबल बढ़े। अपने हास्य विनोद द्वारा वह सैनिकों में नई शक्ति और उत्साह का संचार करता है। वह अपने वचन का धनी है। सूबेदारनी को दिए गए वचन को पूरा करने के लिए वह अपने प्राणों तक को न्योछावर कर देता है, क्योंकि वह अपने कर्त्तव्य को पूरा करना ही अपना सबसे बड़ा धर्म समझता है। वह

Scanned with ACE Scanner

अपने कर्त्तव्य के प्रति सदैव सतर्क रहता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि लहनासिंह एक कर्त्तव्यपरायण व्यक्ति है जो अपने कर्त्तव्य का निर्वाह अपने प्राणों का बलिदान देकर भी पूरा करता है।

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि लहनासिंह एक आदर्श-प्रेमी होने के साथ-साथ वीर सिपाही भी है। वह आदर्श-प्रेमी है और अपनी विनम्रता और शिष्टता से सभी को प्रभावित करता है। इसी के साथ वह बुद्धिमान और विवेकशील व्यक्ति भी है। अपनी बुद्धिमत्ता और विवेकशीलता से वह नकली लपटन साहब को तत्काल पहचान जाता है। कहानीकार लहनासिंह के माध्यम से ही आदर्श मूल्यों की स्थापना करने में सफल रहा है।

◆◆◆

. कफन : मूल संवेदना

'कफन' कहानी की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'कफन' कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर–कफन कहानी की मूल संवेदना/उद्देश्य–'कफन' कहानी प्रेमचंद विरचित उनकी एक अत्यंत चर्चित तथा प्रसिद्ध कहानी है। इस कहानी की मूल संवेदना अथवा उद्देश्य शोषण पूर्ण व्यवस्था में व्यक्तिगत अकर्मण्यता के कारण उत्पन्न विद्रूपता पर प्रकाश डालना है। हम कहानी की मूल संवेदना अथवा उद्देश्य को निम्नलिखित बिंदुओं के अंतर्गत स्पष्ट कर सकते हैं–

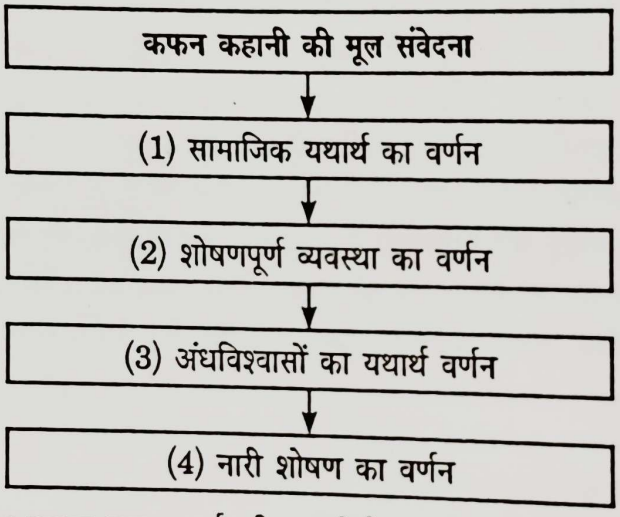

1. सामाजिक यथार्थ का वर्णन–कफन एक यथार्थवादी कहानी है इसका उद्देश्य तत्कालीन समाज में व्याप्त शोषण, अन्याय तथा अत्याचार का उद्घाटन करना है। एक स्थल पर लेखक कहता भी है–**"जिस समाज में रात-दिन मेहनत करने वालों की हालत उनकी (घीसू और माधव) हालत से कुछ बहुत अच्छी न थी। और किसानों के मुकाबले में वे लोग जो किसानों की दुर्बलताओं से लाभ उठाना जानते थे, कहीं ज्यादा सम्पन्न थे, वहाँ इस तरह की मनोवृत्ति का पैदा होना कोई अचरज की बात न थी।"** यही कारण है कि घीसू और माधव अकर्मण्य, आलसी, निकम्मे और दरिद्र हो चुके हैं। इस शोषण के कारण वे इतने निम्न स्तर पर पहुँच जाते हैं कि वे कभी सुखी जीवन का सपना भी नहीं देख पाते। घीसू इस तथ्य को भली प्रकार से जानता है कि वह चाहे लाख कोशिश कर ले लेकिन फिर भी उसकी आर्थिक दशा सुधरने वाली नहीं है। एक स्थल पर वह अपने पुत्र माधव से कहता है–**"जितने धनी हैं वे सबके सब पक्के लूटेरे-डाकू हैं।"**

तत्कालीन समाज में निम्न वर्ग पूँजीपति वर्ग के शोषण का शिकार बन रहा था। उनको अकसर भूखों मरना पड़ता था। कृषक और मजदूर वर्ग का कभी भी उत्थान संभव नहीं था। घीसू और माधव शराब पीकर और पूरियों के भोजन से तृप्त होकर कहते भी हैं–"वह बैकुण्ठ न जाएगी तो क्या ये मोटे-मोटे लोग जाएँगे, जो दोनों हाथों से गरीबों को लूटते हैं तथा मन्दिरों में जल चढ़ाते हैं।" लेखक ने इस कथन के द्वारा तत्कालीन आर्थिक और सामाजिक विषमता पर करारा व्यंग्य किया है। लेखक के विचारानुसार घीसू और माधव के निठल्लेपन और कामचोर होने का प्रमुख कारण तत्कालीन समाज में व्याप्त विषमता थी। उस काल में न जाने कितने लोग घीसू और माधव के समान जीवन जीने को मजबूर थे। इस सन्दर्भ में प्रेमचन्द लिखते भी हैं–"उसे

Scanned with ACE Scanner

तसल्ली तो है कि अगर वह फटे हाल है तो कम-से-कम किसानों की सी जी-तोड़ मेहनत तो नहीं करनी पड़ती। उसकी सरलता और निरीहता से दूसरे लोग बेजा फायदा तो नहीं उठाते।''

इससे बड़ा यथार्थ और क्या हो सकता है कि घीसू और माधव यह बात भली प्रकार से जानते हैं कि बुधिया प्रसव-पीड़ा से कराह रही है और वे दोनों आलू खाने के चक्कर में उसके पास जाने को भी तैयार नहीं हैं। पेट की आग ने उन्हें इतना क्रूर बना दिया है कि वे बुधिया के कफन के पैसों को शराब और खाने में खर्च कर देते हैं। इस प्रकार यह कहानी सामाजिक यथार्थ का उद्घाटन करने में पूर्णतया समर्थ है।

2. शोषण व्यवस्था का वर्णन–कहानीकार इस कहानी के द्वारा तत्कालीन शोषण व्यवस्था का यथार्थ वर्णन करता है। घीसू और माधव दोनों ही समाज में व्याप्त शोषण के शिकार हैं। यदि घीसू और माधव काम न करने के कारण भूख से मर रहे हैं तो अन्य किसानों और मजदूरों की हालत भी कोई अधिक अच्छी नहीं थी। कहानीकार घीसू और माधव की दरिद्रता का वर्णन करते हुए लिखता भी है–**''अगर दोनों साधु होते, तो उन्हें सन्तोष और धैर्य के लिए संयम और नियम की बिल्कुल जरूरत न होती। वह तो की प्रकृति थी। विचित्र जीवन था इनका! घर में मिट्टी के दो-चार बर्तनों के सिवा कोई सम्पत्ति नहीं। फटे चिथड़ों से अपनी नग्नता को ढाँके हुए जिए जाए थे। संसार की चिन्ताओं से मुक्त। कर्ज से लदे हुए। गालियाँ भी खाते, मार भी खाते, क्या कोई गम नहीं।''**

तत्कालीन शोषण के फलस्वरूप ही घीसू और माधव कामचोर और आलसी बन गए हैं। घीसू यदि एक दिन काम करता, तो तीन दिन आराम करता। माधव अगर आधा घण्टा काम करता, तो घण्टाभर चिलम पीता। परिणाम यह हुआ कि इन दोनों कामचोरों को गाँव में कोई काम नहीं देता था। यदि उन्हें कोई काम देता भी तो मजबूरी में ही देता। दूसरों के खेतों से मटर-आलू चुराकर ही दोनों जीवनयापन कर रहे थे। घीसू ने अपने जीवन के साठ साल इसी तरह निकाल दिए थे और माधव तो अपने पिता के नक्शे-कदम पर चल रहा था। घीसू और माधव की दरिद्रता का वर्णन करते हुए कहानीकार कहता भी है–

''चमारों का कुनबा था और सारे गाँव में बदनाम था। घीसू एक दिन काम करता तो तीन दिन आराम। माधव इतना कामचोर था कि आध घण्टे काम करता तो घण्टेभर चिलम पीता। इसलिए उन्हें कहीं मजदूरी नहीं मिलती थी। घर में मुट्ठीभर अनाज मौजूद हो, तो उनके लिए काम करने की कसम थी। जो दो-चार फाके हो जाते, तो घीसू पेड़ पर चढ़कर लकड़ियाँ तोड़ लाता और माधव बाजार में बेच आता तथा जब तक वे पैसे रहते, दोनों इधर-उधर मारे-मारे फिरते।''

इस प्रकार हम देखते हैं कि कहानीकार ने प्रस्तुत कहानी में शोषण व्यवस्था का सजीव चित्रण किया है। घीसू और माधव जैसे लाखों शोषित लोग पूँजीवादी शोषण के कारण फटेहाल जीवनयापन कर रहे थे। तत्कालीन किसानों की भी आर्थिक दशा कोई अच्छी नहीं थी। जमींदार किसानों की दुर्बलताओं से लाभ उठा रहे थे और किसानों की हालत बद से बदतर होती जा रही थी।

3. अंधविश्वासों का यथार्थ वर्णन–प्रस्तुत कहानी में प्रेमचन्द जी ने तत्कालीन अंधविश्वासों तथा कुप्रथाओं का भी खुलकर वर्णन किया है। लेखक भारतीय समाज की इस कुप्रथा की ओर संकेत करता है कि प्रायः लोग जीवनभर एक-एक दाने को तरसते हैं और अपना तन ढकने में समर्थ होते हैं। लेकिन मरने के बाद उनको वस्त्र के रूप में बढ़िया कफन दिया जाता है। मरे हुए व्यक्ति का पेट भरने के लिए ब्राह्मणों को भोजन कराया जाता है। माधव की पत्नी बुधिया दवा-दारू के अभाव तथा भूख के कारण तड़पती रहती है और प्रसव-वेदना में ही स्वर्ग सिधार जाती है। उसकी मृत्यु के पश्चात् लोग कफन और लकड़ियों के लिए दान के रूप में धन देते हैं। लेकिन जीते-जी कोई भी उसकी सहायता नहीं करता। लेखक ने 'कफन' कहानी में अंधविश्वासों के इस मकड़-जाल को तोड़ने का प्रयास किया है। सत्य तो यह है कि आर्थिक विषमता और शोषण व्यवस्था आम आदमी के अंधविश्वासों को और भी मजबूत बना देते हैं। झोंपड़ी में पड़ी हुई बुधिया प्रसव-वेदना से कराह रही है। घीसू और माधव को यह शक होता है कि उस पर किसी चुड़ैल का फिसाद हो गया है। घीसू आलू निकालकर छीलते हुए माधव से कहता है–''जाकर देख तो क्या दशा है उसकी? चुड़ैल का फिसाद होगा, और क्या? यहाँ तो ओझा भी एक रुपया माँगता है।'' घीसू के इस कथन से स्पष्ट होता है कि चुड़ैल का फिसाद और ओझा आदि घीसू और माधव जैसे लोगों के लिए भय का कारण थे और वे इस प्रकार के अंधविश्वासों से ग्रस्त भी थे।

4. नारी-शोषण का वर्णन–प्रस्तुत कहानी में मुंशी प्रेमचन्द ने धनिक वर्ग के द्वारा किए जा रहे शोषण के अतिरिक्त नारी-शोषण पर भी प्रकाश डाला है। घीसू और माधव दोनों अकर्मण्य तथा आलसी पुरुष हैं। उन दोनों के सौभाग्य से माधव का विवाह बुधिया से हो गया। बुधिया प्रातः से सायं तक लोगों के घरों में पिसाई करती और घास खोदकर लाती। इस प्रकार वह सेर भर आटे का प्रबन्ध कर लेती और अपने आलसी पति माधव और निठल्ले ससुर घीसू का पेट भरती थी।

Scanned with ACE Scanner